संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं०–५७

धातुरूप-निदर्शनम्

संस्कृत के "कृ" धातु से बनने वाले समस्त तिङन्त एवं कृदन्त रूपों तथा कृदन्त शब्दों से बनने वाली समस्त क्रियाओं का एक निदर्शन

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्

वाराणसी

कृतज्ञता प्रकाश

मेरे अपने स्वयं के आर्थिक सहयोग के साथ ही इस संस्थान परिवार के जिन वरिष्ठ सदस्यों के आर्थिक सहयोग से पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, उनकी नामावली निम्नलिखित है–

१. श्री शरदिन्दु कुमार त्रिपाठी (प्रचार प्रमुख)

२. श्रीमती प्रियंवदा पाण्डेया (प्रचारिका)

३. श्री शैलेश कुमार त्रिपाठी (संगीत शिक्षक)

४. श्री धर्मेन्द्र कुमार त्रिपाठी (अध्यापक)

५. श्री प्रभाकर कुमार ओझा (व्यवस्थापक)

मै इन समस्त सदस्यों को हार्दिक साधुवाद देता हूँ, और इनके समुज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और उन सब से यह अनुरोध एवम् आग्रह करता हूँ तथा यह आदेश भी देता हूँ कि वे इस पुस्तक का आद्योपान्त अच्छा अभ्यास कर दूसरे विद्यार्थियों को भी अभ्यास करा दें जिससे कि वे सब प्रकार के हिन्दी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद बना सकें और निर्भय होकर बोल सकें।

—वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(सञ्चालक)

संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं०-५७

धातुरूप-निदर्शनम्

संस्कृत के "कृ" धातु से बनने वाले समस्त तिङन्त
एवं कृदन्त रूपों तथा कृदन्त शब्दों से बनने वाली
समस्त क्रियाओं का एक निदर्शन

☆

लेखक—
वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(सम्पादक-संस्कृत प्रचार पुस्तक माला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्
वाराणसी

पुस्तक के सम्बन्ध में
दो शब्द

संस्कृत सीखने के इच्छुक बालकों तथा प्रौढ विद्यार्थियों को भी आरम्भ में ही आवश्यक शब्दरूपों तथा धातुरूपो का भी ज्ञान कराकर संस्कृत में बोलने तथा अनुवाद करने के योग्य बनाने की दृष्टि से संस्थानम् द्वारा ''सुगम शब्द रूपावलि'' तथा ''सुगम धातु रूपावलि'' नाम से दो पुस्तकें पहले ही प्रकाशित की गयी हैं।[१] अब इसी क्रम में धातुरूपों की यह एक दूसरी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसका उद्देश्य यह धातु से बनने वाले सभी प्रकार के क्रियारूपों का दिग्दर्शन कराना है। अगली पंक्तियों में उक्त उद्देश्य का अधिक स्पष्टीकरण किया जा रहा है। विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें।

किसी भी धातु से दो प्रकार की क्रियायें बनायी जाती हैं। एक तो धातु में सीधे तिङ् प्रत्ययों को लगाकर तथा दूसरे धातु में कृत् प्रत्ययों को लगाकर बनाये हुए शब्दों में अस्, भू, स्था, आस् तथा वृत् आदि धातुओं के लट्, लङ्, लिङ्, लृट् तथा लृङ् लकारों के रूपों को लगाकर। इन दोनों प्रकारों के क्रियारूपों को जाने विना न तो कोई समस्त क्रियात्मक भावों को प्रकट कर सकता है और न अन्य भाषाओं से संस्कृत में अनुवाद ही कर सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि किसी भी संस्कृत पढ़ने वाले व्यक्ति को, जो संस्कृत में बोलना, लिखना तथा अनुवाद बनाना सीखना चाहता हो, उसे किसी भी एक धातु के (जो परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी दोनों हो) रूपों को बतला कर एक कर्ता एवं एक कर्म के साथ उनका प्रयोग करने का अभ्यास करा दिया जाय जिससे कि इसी आधार पर उसे अन्य परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी धातुओं से बनने वाली दोनों प्रकार की क्रियाओं के रूप, उनके अर्थ तथा वाक्यों में उनका प्रयोग करने की दृष्टि मिल सके। जैसे एक छोटे से दर्पण में भी विशाल आकृति का दर्शन किया जा सकता है उसी प्रकार एक धातु के ही दोनों प्रकार के क्रियारूपों का अर्थ एवं प्रयोग के साथ ज्ञान हो जाने पर समस्त धातुओं के क्रियारूपों का रहस्य खुल जाता है और वे एक छोटी सी खिड़की के सहारे विशाल आकाश को दृष्टिगत कर लेते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्थानम् द्वारा दो प्रकार के पोस्टर[२] भी प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पठ् धातु के दोनों प्रकार के क्रियारूपों का उल्लेख कर दिया गया है। ये दोनों प्रकार के पोस्टर छात्रों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

---

१. संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने वालों को आरम्भ में इन दोनों पुस्तकों को अवश्य पढ़ लेना चाहिए।

२. इन दोनों पोस्टरों की सहायता से एक पठ धातु के समस्त तिङन्त-कृदन्त रूपों तथा कालभेदों के अनुसार उनका प्रयोग करने का ज्ञान हो जाता है।

आज उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही कुछ वृद्धि के साथ यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में आदर्श के रूप में कृ धातु को रखा गया है। क्योंकि यह उभयपदी धातु है अर्थात् परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी दोनों है। अतः इस एक धातु से ही दोनो प्रकार के रूपों का ज्ञान हो जाता है। इससे अतिरिक्त कृ धातु के रूपों के जानने का एक यह भी लाभ है कि इसी एक धातु के रूपों में "पठनं, पाठनं, स्नानं, भोजनं, शयनं, जागरणं, क्रीडनं, खेलनं" आदि सैकड़ों क्रियावाचक संस्कृत संज्ञाशब्दो को, जो अपनी-अपनी मातृभाषा के ही माध्यम से विदित होते हैं, लगाकर हजारों वाक्य बनाये और बोले जा सकते हैं। इस कारण भी उदाहरण के रूप मे यहाँ कृ धातु का ही ग्रहण किया गया है।

इस पुस्तक के लिखने का दूसरा उद्देश्य एक और है। हिन्दी में बहुत सी क्रियायें ऐसी हैं जिनका संस्कृत अनुवाद उचित होने पर भी अप्रचलित होने के कारण बहुत से विद्वानों को भी खटकता रहता है और उसे वे संस्कृतपरम्परासम्मत तथा संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में प्रयुक्त नहीं मानते। उदाहरण के रूप में नीचे कुछ हिन्दी क्रियाओं के ऐसे संस्कृत अनुवाद दिये जा रहे हैं जो प्रायः बहुत से विद्वानों को अटपटे से लगते हैं। यथा :—

हिन्दी	संस्कृत
वह पढ़ रहा है	स पठन् अस्ति
वह पढता होगा	स पठन् भविष्यति
वह पढने वाला है	स पठिष्यन् अस्ति
उसने पढ़ा होगा	स पठितवान् भविष्यति
वह पढने देता है	स पठितुं ददाति
वह पढ पाता है	स पठितुं लभते
वह पढने लगता है	स पठितुं लगति

उक्त प्रकार के संस्कृत के वाक्यों को सुनकर बहुत से विद्वान् इन्हें संस्कृत की परम्परा के अनुकूल न मानकर इन्हें केवल अंग्रेजी और हिन्दी आदि भाषाओं का अनुकरणमात्र मानते हैं। संस्कृत की एक पत्रिका में तो इस प्रसंग की चर्चा करते हुए एक विद्वान् ने ऐसे वाक्यों को सर्वथा अव्यवहार्य ही मान लिया है। उनका कहना है कि ऐसे वाक्य संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में कहीं आये ही नहीं हैं।

हमने अपनी "संस्कृत वाक्य संग्रह" नामक पुस्तक में "जाने दो, आने दो" इन दो वाक्यों के लिए "गन्तुं देहि, आगन्तुं देहि" ऐसे वाक्य प्रकाशित किये हैं। इन्हें बहुत से विद्वान् सर्वथा अशुद्ध और अप्रयुक्त मानते हैं। परन्तु जब उनसे पूछा जाता है कि आपके विचार से इन वाक्यों की क्या संस्कृत होगी तो वे झटपट कोई उत्तर नहीं दे पाते। इसी प्रकार जब उनसे यह वाक्य कहा जाता है। कि "स प्रातरेव गृहं गतवान्

भविष्यति'' तो वे तुरन्त कह बैठते है कि भूतकाल मे भविष्यत् का प्रयोग कैसे होगा? हॉ, ''स गतवान् स्यात्'' ऐसा हो सकता है। इस प्रकार ऐसी हिन्दी क्रियाओं के संस्कृत अनुवाद के विषय में बहुतों को सन्देह बना रहता है और वे कोई ठीक निर्णय नहीं कर पाते। परन्तु पाठकगण इस पुस्तक के अन्त में दिये गये विभिन्न ग्रन्थों से संकलित उद्धरणों को पढ़कर यह देखेंगे कि इस प्रकार के वाक्य प्राचीन ग्रन्थों में भी कितनी बार प्रयुक्त हुए है। अतः संस्कृत का कोई भी छात्र या विद्वान् निःसन्देह रूप से ऐसे वाक्यों का प्रयोग कर सके यह भी इस पुस्तक के प्रकाशन का एक विशिष्ट उद्देश्य रहा है।

परन्तु इतने से ही हिन्दी क्रियाओं के संस्कृत अनुवाद की समस्या हल नहीं हो जाती। उदाहरण के रूप में हिन्दी में संयुक्त क्रियाओ से जो विविध भाव प्रकट होते हैं उनका सही अनुवाद संस्कृत की क्रियाओ द्वारा नहीं हो पाता। निम्नलिखित हिन्दी क्रियाओं पर ध्यान देने से यह बात स्पष्ट हो जायगी। यथा—

पढ़ चुकता है	पढ़ लेने देता है
पढ़ लेता है	पढ़ते बनता है
पढ़ डालता है	पढ़ता चला जाता है
पढ़ देता है	पढ़ना आता है
पढ़ा करता है	पढ़ जाता है
पढ़ता रहता है	पढ़ने दे सकता है

इसी प्रकार हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में असंख्य वाक्य ऐसे होते हैं जिनका क्रिया, सहयोगी क्रिया, वाक्यनिर्माणशैली, अव्यय, मुहावरा आदि की विभिन्नता के कारण संस्कृत अनुवाद करने में कठिनाई होती है। वास्तव में इस प्रकार की कठिनाइयो को दूर करने के लिए एक ऐसी अनुवादपरिषद् का गठन होना चाहिए जो इस प्रकार को कठिनाइयों की छानबीन कर उनका कोई समाधान निकाल सके तथा संस्कृत के विद्वानों, छात्रों, लेखको, अनुवादकों तथा भाषणकर्ताओं के लिए अनुवाद का मार्ग प्रशस्त कर सके।

इसी प्रकार हिन्दी में स्वयं हिन्दी के तथा अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के जो असंख्य शब्द दैनिक बोलचाल तथा कामकाज में प्रयुक्त होते हैं उनके लिए भी संस्कृत पर्याय शब्दों के निर्माण की एक विकट समस्या है जिसके समाधान का उत्तरदायित्व संस्कृत की ही संस्थाओं तथा विद्वानों पर है। यदि संस्कृत में पठन-पाठन, दैनिक बोलचाल, हिन्दी ग्रन्थों का संस्कृत अनुवाद, आकाशवाणी में सभी आधुनिक विषयों पर सस्कृतवार्ता, आधुनिक समस्याओं पर नाटक, प्रहसन एवं संभाषण यदि चालू रखना या इस क्रम को और अधिक उन्नत बनाना संस्कृत के विद्वानों को मान्य हो तो अनुवादपरिषद् जैसी किसी समिति का गठन परमावश्यक है। यदि राष्ट्रिय संस्कृत

संस्थान, नई दिल्ली, अथवा उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ इस आवश्यक कार्य की ओर उचित रूप से ध्यान दे तो कुछ अंश तक इस कार्य की पूर्ति हो सकती है। यदि ये संस्थायें इस योजना को अपने हाथ में लें तो हमारा भी सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त होगा। आशा है, उपर्युक्त संस्थाओं के विद्वान् अधिकारीगण तथा अन्य भी संस्कृत संस्थायें एवं संस्कृतहितैषी व्यक्ति इस विषय पर ध्यान देने की कृपा करेंगे।

जहाँ तक इस पुस्तक की उपयोगिता का प्रश्न है, मुझे विश्वास है कि यह संस्कृत सीखने वालों के लिए क्रियाओं के भेद-उपभेदों का स्वरूप, प्रयोग एवं अर्थ बतलाने में अधिक सहायक होगी। संस्कृत के समस्त अध्यापकों तथा छात्रों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक को एक बार अवश्य आद्योपान्त देखने तथा समझने-समझाने की कृपा करेंगे तथा यदि कहीं कोई कमी रह गयी हो तो उसकी सूचना देकर अनुगृहीत करेंगे।

एक बात और

इस प्रसंग में एक और बात विशेष रूप से निवेदनीय हैं। आजकल अनेक संस्थायें, विद्वान्, अध्यापक, विद्यार्थी तथा संस्कृत के प्रेमी और भक्तजन संस्कृत को लोकभाषा एवं राष्ट्रभाषा बनाने के प्रबल पक्षधर है तथा तदनुरूप शिविरों का संचालन एवं निरन्तर संस्कृत में ही बोलने के अभ्यासी है परन्तु संस्कृत विद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन करने वाले अध्यापकों तथा छात्रों में इस काम के प्रति विशेष अभिरुचि नहीं दिखाई देती। इसका कारण यह है कि उन्हें हिन्दी के अनुसार सब प्रकार की क्रियाओं का संस्कृत में प्रयोग करने का ज्ञान नहीं होता। अतएव वे संस्कृत में बोलने का साहस नहीं करते और इस कारण संस्कृत की छोटी पाठशालाओं से लेकर संस्कृत विश्वविद्यालयों तक में संस्कृत का वातावरण नहीं दिखाई देता। पर यह कितनी विडम्बना की बात है कि यदि संस्कृत की शिक्षासंस्थाओं में संस्कृत व्यवहार की भाषा नहीं हो पाती तो अन्य स्थलों में संस्कृतव्यवहार की कितनी अपेक्षा की जा सकती है? अतः यह आवश्यक है कि संस्कृत की छोटी-बड़ी सभी शिक्षणसंस्थाओं में संस्कृत में बोलने तथा वार्तालाप करने का वातावरण तैयार किया जाय तभी संस्कृत को लोकभाषा अथवा राष्ट्रभाषा बनाने का सपना पूरा हो सकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति में यह पुस्तक सहायक होगी, ऐसी मुझे आशा है।

विनीत—

लेखक

विषय-सूची

कृ धातु के साथ तिङ् प्रत्ययों के योग से बने धातुरूपों के उदाहरण

प्रारंभिक ज्ञातव्य विषय

कृ धातु का परिचय

१-कृ धातु का अर्थ "करना" होता है। यह तनादि गण का धातु है अतः इसमें तिङ् प्रत्ययों के अतिरिक्त एक विशेष गणप्रत्यय "उ" लगता है। यह धातु उभयपदी है अर्थात् परस्मैपदी भी है और आत्मनेपदी भी है इसलिए इसके करोति और कुरुते आदि दो प्रकार के रूप होते हैं जो आगे के पृष्ठो में अर्थ के साथ लिखे हुए हैं।

तिङन्त रूपों के १० प्रकार

२-संस्कृत भाषा में व्याकरणानुसार किसी भी धातु के तिङन्त रूप १० प्रकार के होते हैं। ५ कर्तृवाच्य के और पाँच कर्म या भाववाच्य के। यथा—

१-नवगणी (सामान्य रूप)	कर्तृवाच्य	करोति	करता है
२-नवगणी (सामान्य रूप)	कर्मवाच्य	क्रियते	किया जाता है
३-णिजन्त (प्रेरणार्थक)	कर्तृवाच्य	कारयति	कराता है
४-णिजन्त (प्रेरणार्थक)	कर्मवाच्य	कार्यते	कराया जाता है
५-सन्नन्त (इच्छार्थक)	कर्तृवाच्य	चिकीर्षति	करना चाहता है
६-सन्नन्त (इच्छार्थक)	कर्मवाच्य	चिकीर्ष्यते	करना चाहा जाता है
७-यङन्त (पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्तृवाच्य	चेक्रीयते	बार-बार करता है अधिक करता है
८-यङन्त (पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चेक्रीय्यते	बार-बार किया करता है अधिक किया करता है
९-यङन्त (पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्तृवाच्य	चर्करीति	बार-बार करता है अधिक करता है
१०-यङ्लुङन्त(पौनःपुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चर्क्रीय	बार-बार किया करता है अधिक किया जाता है

ऊपर के इन दस भेदों में से आदि के चार भेदों के समस्त रूपों का ज्ञान परमावश्यक है। क्योंकि इनमें से एक के भी विना पूर्णरूप से बोलने या लिखने का काम नहीं चल सकता। शेष दो रूप जो सन्नन्त के हैं उनके विना काम चल सकता है क्योंकि "चिकीर्षति" की जगह "कर्तुम् इच्छति" कहने का भी विधान है। परन्तु सन्नन्त रूपों का प्रयोग संस्कृत के प्राचीन तथा आधुनिक ग्रन्थों में भी मिलता है। अतः इनके रूपों का भी ज्ञान हो जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त बहुत से सन्नन्त क्रियाओं के कृदन्त रूप-जिज्ञासा-जिज्ञासु, पिपासा-पिपासु, बुभुक्षा-बुभुक्षु, लिप्सा-लिप्सु, मुमूर्षा-मुमूर्षु, शुश्रूषा-शुश्रूषु आदि व्यवहार में प्रचलित हैं अतः इनकी जानकारी के लिए भी सन्नन्त रूपों का परिचय आवश्यक है। इन छः प्रकार के भेदों के अतिरिक्त जो चार भेद और हैं उनका साहित्य तथा व्यवहार

में भी अत्यल्प प्रयोग है। फिर भी कुछ यङन्त क्रियाओं से बने हुए कृदन्त रूप—जाज्वल्यमान (अत्यधिक जलता हुआ), देदीप्यमान (अत्यधिक चमकता हुआ), चंक्रम्यमाण (अत्यधिक चलता हुआ) आदि व्यवहार में प्रचलित है अतः इस पाँचवें भेद का भी थोड़ा ज्ञान छात्रों को करना चाहिए।

काल, वृत्तियाँ तथा लकार

३-संस्कृत मे सात कालभेद तथा तीन वृत्तिभेद हैं तथा इनके लिए दस लकारों का प्रयोग होता है। यथा—

(क) वर्तमान काल का एक ही भेद है (ख) भूतकाल के चार भेद होते है—अनद्यतन परोक्षभूत, अनद्यतन भूत, सामान्य भूत तथा हेतुहेतुमद् भूत। (ग) भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं—अनद्यतन भविष्यत् तथा सामान्य भविष्यत्। (घ) वृत्तियाँ (मूड) तीन प्रकार की है—आज्ञा, विधि एवं आशी। इन दस भेदों के लिए दस लकार होते हैं यथा—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, लिङ्, (विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ्) लुङ् तथा लृङ्।

संस्कृत के व्याकरण में लकारों का यही क्रम है परन्तु इस पुस्तक में जो छः लकार बोलचाल के लिए अत्यावश्यक हैं उन्हें पहले दिया गया है और जिन चार लकारो का ज्ञान ग्रन्थों के अध्ययन के लिए आवश्यक है वे बाद में दिये गये हैं। छात्रों को चाहिए कि वे दैनिक व्यवहार के लिए उपयोगी पहले आरम्भ के छः लकारों के ही रूप कण्ठस्थ करें और बाद में शेष चार लकारों के रूप भी ग्रन्थों के अध्ययन के लिए कण्ठस्थ कर लें।

तिङ् प्रत्यय

४-जिन तिङ् प्रत्ययों को लगाकर धातुओं के रूप बनाये जाते हैं वे अठारह होते हैं। नौ परस्मैपदी धातुओं के लिए तथा नौ आत्मनेपदी धातुओं के लिए। यथा—प्र० पु०-तिप् तस् झि, म० पु०-सिप् थस् थ, उ० पु०-मिप् वस् मस् (परस्मैपदी)

प्र० पु०-त आताम् झ, म० पु०-थास् आथाम् ध्वम्, उ० पु०-इड् वहि महिङ् (आत्मनेपदी)

ये तिङ् प्रत्यय केवल लट् लकार के ही रूपों में लगते हैं पर इन्हीं में कुछ परिवर्तन कर अन्य लकारों के भी रूप बनाये जाते हैं। अधिक जानकारी के लिए संस्थानम् द्वारा प्रकाशित "सुगम धातु रूपावलि" पुस्तक देखें।

प्रत्येक लकार में प्रथम, मध्यम एवं उत्तम ये तीन पुरुष तथा प्रत्येक पुरुष में एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन ये तीन वचन होने के कारण प्रत्येक लकार के नौ नौ रूप होते है। इस प्रकार दस लकारों के रूपों की संख्या नब्बे हो जाती है पर वैकल्पिक रूपों के कारण इस संख्या में कभी-कभी कुछ वृद्धि भी होती है। आगे के पृष्ठो में कृ धातु के सभी प्रकारों तथा सभी लकारों के रूप दिये जा रहे हैं। इन रूपों में एक कर्ता तथा एक कर्मकारक के पदों को जोड़कर वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

१-कृ धातु के नवगणी या सामान्य रूप (परस्मैपदी)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	करोति करता है	कुरुतः करते हैं	कुर्वन्ति करते है
	म०	करोषि करते हो	कुरुथः करते हो	कुरुथ करते हो
	उ०	करोमि करता हूँ	कुर्वः करते हैं	कुर्मः करते हैं
लृट्	प्र०	करिष्यति करेगा	करिष्यतः करेंगे	करिष्यन्ति करेंगे
	म०	करिष्यसि करोगे	करिष्यथः करोगे	करिष्यथ करोगे
	उ०	करिष्यामि करूँगा	करिष्यावः करेंगे	करिष्यामः करेंगे
लोट्	प्र०	करोतु करे	कुरुताम् करें	कुर्वन्तु करें
	म०	कुरु करो	कुरुतम् करो	कुरुत करो
	उ०	करवाणि करूँ	करवाव करें	करवाम करें
लिङ्	प्र०	कुर्यात् करे	कुर्याताम् करें	कुर्युः करें
	म०	कुर्याः करो, करना	कुर्यातम् करो	कुर्यात करो
	उ०	कुर्याम् करूँ	कुर्याव करें	कुर्याम करें
लङ्	प्र०	अकरोत् किया	अकुरुताम् किया	अकुर्वन् किया
	म०	अकरोः किया	अकुरुतम् किया	अकुरुत किया
	उ०	अकरवम् किया	अकुर्व किया	अकुर्म किया
लृङ्	प्र०	अकरिष्यत् करता	अकरिष्यताम् करते	अकरिष्यन् करते
	म०	अकरिष्यः करते	अकरिष्यतम् करते	अकरिष्यत करते
	उ०	अकरिष्यम् करता	अकरिष्याव करते	अकरिष्याम करते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	लिट् का प्रयोग परोक्ष अनद्यतन
	म०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	भूतक.. के लिए होता है। इसका
	उ०	चकार	चकृव	चकृम	अर्थ लङ् के ही समान होता है।
लुङ्	प्र०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	लुङ् सामान्य भूतकाल के लिए
	म०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	प्रयुक्त होता है। अर्थ लङ् के
	उ०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	ही समान होता है।
लुट्	प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	लुट् का प्रयोग अनद्यतन भविष्यत्
	म०	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	काल के लिए होता है।
	उ०	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	अर्थ लृट् के समान होगा।
आ०लिङ्	प्र०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	इसका प्रयोग किसी को
	म०	क्रियाः	क्रियास्तम	क्रियास्त	आशीर्वाद देने तथा शुभकामना
	उ०	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	प्रकट करने में किया जाता है।

२-कृ धातु के नवगणी (सामान्य) रूप (आत्मनेपदी)

(अर्थ परस्मैपदी रूपों के अर्थ के समान होगा)

लट्	प्र०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लृट्	प्र०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
	म०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
	उ०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
लोट्	प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	उ०	करवै	करवावहै	करवामहै
वि०लिङ्	प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
	म०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
	उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लङ्	प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
	म०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
	उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लृङ्	प्र०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
	म०	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
	उ०	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
	म०	चकृषे	चक्राथे	चकृद्वे
	उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लुङ्	प्र०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
	म०	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृद्वम्
	उ०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि
लुट्	प्र०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
	म०	कर्त्तासे	कर्त्तासाथे	कर्त्ताध्वे
	उ०	कर्त्ताहे	कर्त्तास्वहे	कर्त्तास्महे
आ०लिङ्	प्र०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
	म०	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीद्वम्
	उ०	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

३-कृ धातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूप (परस्मैपदी)

लट्	प्र०	कारयति कराता है	कारयतः कराते हैं	कारयन्ति कराते हैं
	म०	कारयसि कराते हो	कारयथः कराते हो	कारयथ कराते हो
	उ०	कारयामि कराता हूँ	कारयावः कराते हैं	कारयामः कराते हैं
लृट्	प्र०	कारयिष्यति करायेगा	कारयिष्यतः करायेंगे	कारयिष्यन्ति करायेंगे
	म०	कारयिष्यसि कराओगे	कारयिष्यथः कराओगे	कारयिष्यथ कराओगे
	उ०	कारयिष्यामि कराऊँगा	कारयिष्यावः करायेंगे	कारयिष्यामः करायेंगे
लोट्	प्र०	कारयतु कराये	कारयताम् करायें	कारयन्तु करायें
	म०	कारय कराओ	कारयतम् कराओ	कारयत कराओ
	उ०	कारयानि कराऊँ	कारयाव करावें	कारयाम करावें
लिङ्	प्र०	कारयेत् कराये	कारयेताम् करायें	कारयेयुः करायें
	म०	कारयेः कराओ	कारयेतम् कराओ	कारयेत कराओ
	उ०	कारयेयम् कराऊँ	कारयेव करावें	कारयेम करावें
लङ्	प्र०	अकारयत् कराया	अकारयताम् कराये	अकारयन् कराये
	म०	अकारयः कराये	अकारयतम् कराये	अकारयत कराये
	उ०	अकारयम् कराया	अकारयाव कराये	अकारयाम कराये
लृङ्	प्र०	अकारयिष्यत् कराता	अकारयिष्यताम् कराते	अकारयिष्यन् कराते
	म०	अकारयिष्यः कराते	अकारयिष्यतम् कराते	अकारयिष्यत कराते
	उ०	अकारयिष्यम् कराता	अकारयिष्याव कराते	अकारयिष्याम कराते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	कारयाञ्चकार	कारयाञ्चक्रतुः	कारयाञ्चक्रुः	इसी प्रकार कारयाबभूव, तथा कारयामास आदि रूप चलेंगे। अर्थ लङ् के समान होगा।
	म०	कारयाञ्चकर्थ	कारयाञ्चक्रथुः	कारयाञ्चक्र	
	उ०	कारयञ्चकार	कारयाञ्चकृव	कारयाञ्चकृम	
लुङ्	प्र०	अचीकरत्	अचीकरताम	अचीकरन्	
	म०	अचीकरः	अचीकरतम्	अचीकरत	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	उ०	अचीकरम्	अचीकराव	अचीकराम	
लुट्	प्र०	कारयिता	कारयितारौ	कारयितारः	
	म०	कारयितासि	कारयितास्थः	कारयितास्थ	अर्थ लृट् लकार के समान होगा।
	उ०	कारयितास्मि	कारयितास्वः	कारयितास्मः	
आ०लिङ्	प्र०	कार्यात्	कार्यास्ताम्	कार्यासुः	
	म०	कार्याः	कार्यास्तम्	कार्यास्त	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	उ०	कार्यासम्	कार्यास्व	कार्यास्म	

४-कृ धातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूप (आत्मनेपदी)

(अर्थ परस्मैपदी रूपों के अर्थों के समान होंगे)

लट्	प्र०	कारयते	कारयेते	कारयन्ते
	म०	कारयसे	कारयेथे	कारयध्वे
	उ०	कारये	कारयावहे	कारयामहे
लृट्	प्र०	कारयिष्यते	कारयिष्येते	कारयिष्यन्ते
	म०	कारयिष्यसे	कारयिष्येथे	कारयिष्यध्वे
	उ०	कारयिष्ये	कारयिष्यावहे	कारयिष्यामहे
लोट्	प्र०	कारयताम्	कारयेताम्	कारयन्ताम्
	म०	कारयस्व	कारयेथाम्	कारयध्वम्
	उ०	कारयै	कारयावहै	कारयामहै
वि० लिङ्	प्र०	कारयेत	कारयेयाताम्	कारयेरन्
	म०	कारयेथाः	कारयेयाथाम्	कारयेध्वम्
	उ०	कारयेय	कारयेवहि	कारयेमहि
लङ्	प्र०	अकारयत	अकारयेताम्	अकारयन्त
	म०	अकारयथाः	अकारयेथाम्	अकारयध्वम्
	उ०	अकारये	अकारयावहि	अकारयामहि
लृङ्	प्र०	अकारयिष्यत	अकारयिष्येताम्	अकारयिष्यन्त
	म०	अकारयिष्यथाः	अकारयिष्येथाम्	अकारयिष्वध्वम्
	उ०	अकारयिष्ये	अकारयिष्यावहि	अकारयिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चक्राते	कारयाञ्चक्रिरे
	म०	कारयाञ्चकृषे	कारयाञ्चक्राथे	कारयाञ्चकृद्वे
	उ०	कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चकृवहे	कारयाञ्चकृमहे
लुङ्	प्र०	अचीकरत	अचीकरेताम्	अचीकरन्त
	म०	अचीकरथाः	अचीकरेथाम्	अचीकरध्वम्
	उ०	अचीकरे	अचीकरावहे	अचीकरामहि
लुट्	प्र०	कारयिता	कारयितारौ	कारयितारः
	म०	कारयितासे	कारयितासाथे	कारयिताध्वे
	उ०	कारयिताहे	कारयितास्वहे	कारयितास्महे
आ०लिङ्	प्र०	कारयिषीष्ट	कारयिषीयास्ताम्	कारयिषीरन्
	म०	कारयिषीष्ठाः	कारयिषीयास्थाम्	कारयिषीद्वम्-ध्वम्
	उ०	कारयिषीयि	कारयिषीष्वहि	कारयिषीष्महि

५-कृ धातु के नवगणी (सामान्य) रूपों के कर्मवाच्य के रूप

लकार	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	क्रियते-किया जाता है	क्रियेते-किये जाते हैं	क्रियन्ते-किये जाते हैं
	म०	क्रियसे-किये जाते हो	क्रियेथे-किये जाते हो	क्रियध्वे-किये जाते हो
	उ०	क्रिये-किया जाता हूँ	क्रियावहे-किये जाते हैं	क्रियामहे-किये जाते हैं
लृट्	प्र०	करिष्यते-किया जायेगा	करिष्येते-किये जायेंगे	करिष्यन्ते-किये जायेंगे
	म०	करिष्यसे-किये जाओगे	करिष्येथे-किये जाओगे	करिष्यध्वे-किये जाओगे
	उ०	करिष्ये-किया जाऊँगा	करिष्यावहे-किये जायेंगे	करिष्यामहे-किये
लोट्	प्र०	क्रियताम्-किया जाय	क्रियेताम्-किये जायँ	क्रियन्ताम्-किये जायँ
	म०	क्रियस्व-किये जाय	क्रियेथाम्-किये जाओ	क्रियध्वम्-किये
	उ०	क्रियै-किया जाऊँ	क्रियावहै-किये जायें	क्रियामहै-किये जायें
वि०लिङ्	प्र०	क्रियेत-किया जाय	क्रियेयाताम्-किये जायें	क्रियेरन्-किये जायें
	म०	क्रियेथाः-किया जाओ	क्रियेयाथाम्-किये जाओ	क्रियेध्वम्-किये
	उ०	क्रियेय-किया जाऊँ	क्रियेवहि-किये जायें	क्रियेमहि-किये जायें
लङ्	प्र०	अक्रियत-किया गया	अक्रियेताम्-किये गये	अक्रियन्त-किये गये
	म०	अक्रियथाः-किये गये	अक्रियेथाम्-किये गये	अक्रियध्वम्-किये
	उ०	अक्रिये-किया गया	अक्रियावहि-किये गये	अक्रियामहि-किये
लृङ्	प्र०	अकरिष्यत-कियाजाता	अकरिष्येताम्-किये जाते	अकरिष्यन्त-किये
	म०	अकरिष्यथाः-कियेजाते	अकरिष्येथाम्-कियेजाते	अकरिष्यध्वम्-किये
	उ०	अकरिष्ये-कियाजाता	अकरिष्यावहि-कियेजाते	अकरिष्यामहि-किये

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लकार	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
लिट्	प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म०	चकृषे	चक्राथे	चकृध्वे	
	उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे	
लुङ्	प्र०	अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म०	अकारिथाः	अकारिषाथाम्	अकारिध्वम्	
	उ०	अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्महि	
लुट्	प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	अर्थ लृट् लकार के समान होगा।
	म०	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे	
	उ०	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे	
आ०लिङ्	प्र०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	म०	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीद्वम्	
	उ०	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि	

६-कृ धातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूपों के कर्मवाच्य के रूप

लट्	प्र०	कार्यते-कराया जाता है	कार्येते-कराये जाते हैं	कार्यन्ते-कराये जाते है
	म०	कार्यसे-कराये जाते हो	कार्येथे-कराये जाते हो	कार्यध्वे-कराये जाते हो
	उ०	कार्ये-कराया जाता हूँ	कार्यावहे-कराते जाते है	कार्यामहे-कराये जाते हैं
ऌट्	प्र०	कारयिष्यते करायाजायेगा	कारयिष्येते करायेजायेंगे	कारयिष्यन्ते
	म०	कारयिष्यसे करायेजाओगे	कारयिष्येथे करायेजायेंगे	कारयिष्यध्वे-
	उ०	कारयिष्ये कराया जाउँगा	कारयिष्यावहे करायेजायेंगे	कारयिष्यामहे
लोट्	प्र०	कार्यताम् कराया जाय	कार्येताम् कराये जायँ	कार्यन्ताम् कराये जायँ
	म०	कार्यस्व कराये जाओ	कार्यथाम् कराये जाओ	कार्यध्वम् कराये जाओ
	उ०	कार्यै कराया जाऊँ	कार्यावहै कराये जायँ	कार्यामहै कराये जायँ
लिङ्	प्र०	कार्येत कराया जाय	कार्येयाताम् कराये जायँ	कार्येरन् कराये जायँ
	म०	कार्येथाः कराये जाओ	कार्येयाथाम् करायेजाओ	कार्येध्वम् कराये जाओ
	उ०	कार्येय कराया जाऊँ	कार्येवहि कराये जायँ	कार्येमहि कराये जायँ
लङ्	प्र०	अकार्यत कराया गया	अकार्येताम् कराये गये	अकार्यन्त कराये गये
	म०	अकार्यथाः कराये गये	अकार्येथाम् कराये गये	अकार्यध्वम् कराये गये
	उ०	अकार्ये कराया गया	अकार्यावहि कराये गये	अकार्यामहि कराये गये
ऌङ्	प्र०	अकारयिष्यत करायाजाता	अकारयिष्येताम् करायेजाते	अकारयिष्यन्त
	म०	अकारयिष्यथाः करायेजाते	अकारयिष्येथाम् कराये	अकारयिष्यध्वम्
	उ०	अकारयिष्ये कराया जाता	अकारयिष्यावहि कराये	अकारयिष्यामहि -

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	कारयाञ्चक्रे	करयाञ्चक्राते	कारयाञ्चक्रिरे	इसी प्रकार कारयांबभूवे, तथा कारयामासे, आदि रूप चलेंगे।
	म०	कारयाञ्चकृषे	कारयाञ्चक्राथे	कारयाञ्चकृढ्वे	
	उ०	कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चकृवहे	कारयाञ्चकृमहे	
लुङ्	प्र०	अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत	अर्थ लुङ् लकार के समान होगा।
	म०	अकारिथाः	अकारिषाथाम्	अकारिध्वम्	
	उ०	अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्वमहि	
लुट्	प्र०	कारिता	कारितारौ	कारितारः	अर्थ ऌट् लकार के समान होगा।
	म०	कारितासे	कारितासाथे	कारिताध्वे	
	उ०	कारिताहे	कारितास्वहे	कारितास्महे	
आ०लिङ्	प्र०	कारिषीष्ट	कारिषीयास्ताम्	कारिषीरन्	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	म०	कारिषीष्ठाः	कारिषीयास्थाम्	कारिषीध्वम्	
	उ०	कारिषीय	कारिषीवहि	कारिषीमहि	

७-कृ धातु के सन्नन्त (इच्छार्थक) रूप (कर्तृवाच्य)

लकार	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	चिकीर्षति करना चाहता है	चिकीर्षतः करना चाहते है	चिकीर्षन्ति
	म०	चिकीर्षसि करना चाहते हो	चिकीर्षथः करना चाहते हो	चिकीर्षथ
	उ०	चिकीर्षामि करना चाहता हूँ	चिकीर्षावः करना चाहते हैं	चिकीर्षामः
लृट्	प्र०	चिकीर्षिष्यति करना चाहेगा	चिकीर्षिष्यतः करना चाहेगे	चिकीर्षिष्यन्ति
	म०	चिकीर्षिष्यसि करना चाहोगे	चिकीर्षिष्यथः करना चाहोगे	चिकीर्षिष्यथ
	उ०	चिकीर्षिष्यामि करना चाहूँगा	चिकीर्षिष्यावः करना चाहेगे	चिकीर्षिष्यामः
लोट्	प्र०	चिकीर्षतु करना चाहे	चिकीर्षताम् करना चाहें	चिकीर्षन्तु
	म०	चिकीर्ष करना चाहू	चिकीर्षताम् करना चाहो	चिकीर्षत
	उ०	चिकीर्षाणि करना चाहूँ	चिकीर्षाव करना चाहो	चिकीर्षाम
लिङ्	प्र०	चिकीर्षेत् करना चाहे	चिकीर्षेताम् करना चाहे	चिकीर्षेयुः
	म०	चिकीर्षेः करना चाहो	चिकीर्षेतम् करना चाहो	चिकीर्षेत
	उ०	चिकीर्षेयम् करना चाहूँ	चिकीर्षेव करना चाहें	चिकिर्षेम
लङ्	प्र०	अचिकीर्षत् करना चाहा	अचिकीर्षताम् करना चाहे	अचिकीर्षन्
	म०	अचिकीर्षः करना चाहा	अचिकीर्षतम् करना चाहे	अचिकीर्षत
	उ०	अचिकीर्षम् करना चाहा	अचिकीर्षाव करना चाह	अचिकीर्षाम
लृङ्	प्र०	अचिकीर्षिष्यत् करना चाहता	अचिकीर्षिष्यताम् चाहते	अचिकीर्षिष्यन्
	म०	अचिकीर्षिष्यः करना चाहते	अचिकीर्षिष्यतम्	अचिकीर्षिष्यत
	उ०	अचिकीर्षिष्यम् करना चाहता	अचिकीर्षिष्याव चाहते	अचिकीर्षिष्याम

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लकार	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	टिप्पणी
लिट्	प्र०	चिचिकीर्ष	चिचिकीर्षतुः	चिचिकीर्षुः	अर्थ-लङ् लकार के समान होगा।
	म०	चिचिकीर्षथ	चिचिकीर्षथुः	चिचिकीर्ष	
	उ०	चिचिकीर्ष	चिचिकीर्षिव	चिचिकीर्षिम	
लुङ्	प्र०	अचिकीर्षत्	अचिकीर्षताम्	अचिकीर्षन्	अर्थ-लुङ् लकार के समान होगा।
	म०	अचिकीर्षः	अचिकीर्षतम्	अचिकीर्षत	
	उ०	अचिकीर्षम्	अचिकीर्षिव	अचि[illegible]र्षम	
लुट्	प्र०	चिकीर्षिता	चिकीर्षितारौ	चिकीर्षितारः	अर्थ-लृट् लकार के समान होगा।
	म०	चिकीर्षितासि	चिकीर्षितास्थः	चिकीर्षितास्थ	
	उ०	चिकीर्षितास्मि	चिकीर्षितास्वः	चिकीर्षितास्मः	
आ०लिङ्	प्र०	चिकीर्ष्यात्	चिकीर्ष्यास्ताम्	चिकीर्ष्यासुः	अर्थ-लिङ् लकार के समान होगा।
	म०	चिकीर्ष्याः	चिकीर्ष्यास्तम्	चिकीर्ष्यास्त	
	उ०	चिकीर्ष्यासम्	चिकीर्ष्यास्व	चिकीर्ष्यास्म	

८-कृ धातु के सन्नन्त (इच्छार्थक) रूप (कर्मवाच्य)

(अर्थ—करना चाहा जाता है, करना चाहा जायगा, करना चाहा गया, करना चाहा जाय, करना चाहा जाता आदि)

लट्	प्र०	चिकीर्ष्यते	चिकीर्ष्येते	चिकीर्ष्यन्ते
	म०	चिकीर्ष्यसे	चिकीर्ष्येथे	चिकीर्ष्यध्वे
	उ०	चिकीर्ष्ये	चिकीर्ष्यावहे	चिकीर्ष्यामहे
लृट्	प्र०	चिकीर्षिष्यते	चिकीर्षिष्येते	चिकीर्षिष्यन्ते
	म०	चिकीर्षिष्यसे	चिकीर्षिष्येथे	चिकीर्षिष्यध्वे
	उ०	चिकीर्षिष्ये	चिकीर्षिष्यावहे	चिकीर्षिष्यामहे
लोट्	प्र०	चिकीर्ष्यताम्	चिकीर्ष्येताम्	चिकीर्ष्यन्ताम्
	म०	चिकीर्ष्यस्व	चिकीर्ष्येथाम्	चिकीर्ष्यध्वम्
	उ०	चिकीर्ष्यै	चिकीर्ष्यावहै	चिकीर्ष्यामहै
लिङ्	प्र०	चिकीर्ष्येत	चिकीर्ष्येयाताम्	चिकीर्ष्येरन्
	म०	चिकीर्ष्येथाः	चिकीर्ष्येयाथाम्	चिकीर्ष्येध्वम्
	उ०	चिकीर्ष्येय	चिकीर्ष्येवहि	चिकीर्ष्येमहि
लङ्	प्र०	अचिकीर्ष्यत	अचिकीर्ष्येताम्	अचिकीर्ष्यन्त
	म०	अचिकीर्ष्यथाः	अचिकीर्ष्येथाम्	अचिकीर्षिध्वम्
	उ०	अचिकीर्ष्ये	अचिकीर्ष्यावहि	अचिकीर्ष्यामहि
लृङ्	प्र०	अचिकीर्षिष्यत	अचिकीर्षिष्येताम्	अचिकीर्षिष्यन्त
	म०	अचिकीर्षिष्यथाः	अचिकीर्षिष्येथाम्	अचिकीर्षिष्यध्वम्
	उ०	अचिकीर्षिष्ये	अचिकीर्षिष्यावहि	अचिकीर्षिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उपयोगी लकार

लिट्	प्र०	चिकीर्षाञ्चक्रे	चिकीर्षाञ्चक्राते	चिकिर्षाञ्चक्रिरे
लुङ्	प्र०	अचिकीर्षि	अचिकीर्षिषाथाम्	अचिकीर्षीषत
	म०	अचिकीर्षिष्ठाः	अचिकीर्षिषाथाम्	अचिकीर्षिद्वम्
	उ०	अचिकीर्षिषि	अचिकीर्षिष्वहि	अचिकीर्षिष्महि
लुट्	प्र०	चिकीर्षिता	चिकीर्षितारौ	चिकीर्षितारः
	म०	चिकीर्षितासे	चिकिर्षितासाथे	चिकीर्षिताध्वे
	उ०	चिकीर्षिताहे	चिकीर्षितास्वहे	चिकीर्षितास्महे
आ०लिङ्	प्र०	चिकीर्षिषीष्ट	चिकीर्षिषीयास्ताम्	चिकीर्षिषीरन्
	म०	चिकीर्षिषीष्ठाः	चिकीर्षिषीयास्थाम्	चिकीर्षिषीद्वम्
	उ०	चिकीर्षिषीय	चिकीर्षिषीवहि	चिकीर्षिषीमहि

९-कृ धातु के यङन्त (पौनःपुन्यार्थक, भृशार्थक) रूप

(कर्तृवाच्य के रूप)

लट्	प्र० चेक्रीयते	चेक्रीयेते	चेक्रीयन्ते		अर्थ-बार-बार या अधिक करता है।
	म० चेक्रीयसे	चेक्रीयेथे	चेक्रीयध्वे		
	उ० चेक्रीये	चेक्रीयावहे	चेक्रीयामहे		

अन्य लकारों में इसके रूप—चेक्रीयिष्यते (लृट्), चेक्रीयताम् (लोट्), चेक्रीयेत (लिङ्), अचेक्रीयत (लङ्), अचेक्रीयिष्यत (लृङ्), चेक्रीयाञ्चक्रे (लिट्), अचेक्रीयिष्ट (लुङ्), चेक्रीयिता (लुट्), चेक्रीयिषृ (आशीर्लिङ्)।

(कर्मवाच्य के रूप)

लट्	प्र० चेक्रीय्यते	चेक्रीय्येते	चेक्रीय्यन्ते	अर्थ-बार बार या अधिक किया जाता।
	म० चेक्रीय्यसे	चेक्रीय्यथे	चेक्रीय्यध्वे	
	उ० चेक्रीय्ये	चेक्रीय्यावहे	चेक्रीय्यामहे	

अन्य लकारों में इसके रूप—चेक्रीय्यिष्यते, चेक्रीय्यताम्, चेक्रीय्येत, अचेक्रीय्यिष्यत, चेक्रीय्याञ्चक्रे, अचेक्रीयिष्ट, चक्रीय्यिता, चेक्रीय्यिषीष्ट आदि होंगे।

१०-कृ धातु के यङ्लुगन्त (पौनः पुन्यार्थक, भृशार्थक) रूप

(कर्तृवाच्य के रूप)

लट्	प्र० चर्करीति, चर्कर्त्ति	चर्कृतः	चर्क्रति
	म० चर्करीषि, चर्कर्षि	चर्कृथः	चर्कृथ
	उ० चर्करीमि, चर्कर्मि	चर्कृवः	चर्कृमः
	प्र० चरिकरीति, चरिकर्त्ति	चरिकृतः	चरिक्रति
	म० चरिकरीषि, चरिकर्षि	चरिकृथः	चरिकृथ
	उ० चरिकरीमि, चरिकर्मि	चरिकृवः	चरिकृमः
	प्र० चरीकरीति, चरीकर्त्ति	चरीकृतः	चरीक्रति
	म० चरीकरीषि, चरिकर्षि	चरीकृथः	चरीकृथ
	उ० चरीकरीमि, चरीकर्मि	चरीकृवः	चरीकृमः

(कर्मवाच्य के रूप)

लट्	प्र० चर्क्रीयते	चर्क्रीयेते	चर्क्रीयन्ते	अर्थ-बार-बार या अधिक किया जाता।
	म० चर्क्रीयसे	चर्क्रीयेथे	चर्क्रीयध्वे	
	उ० चर्क्रीये	चर्क्रीयावहे	चर्क्रीयामहे	

नोट–अनावश्यक समझ कर यङन्त तथा यङ्लुगन्त के अन्य रूप नहीं दिये जा रहे हैं।

कृ धातु के कृत्प्रत्ययान्त शब्दों में अस् एवं भू धातु के योग से बने क्रियारूपों के उदाहरण

कतिपय सर्वप्रथम ज्ञातव्य विषय

१-कृ धातु के साथ तिङ् प्रत्ययों के योग से जितने प्रकार के रूप होते हैं उनका पहले के पृष्ठों में अर्थ के साथ उल्लेख किया गया है। अब इस द्वितीय प्रकरण में उन क्रियारूपों का उल्लेख किया जा रहा है जो कृ धातु में शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, स्यतृ, स्यमान तथा तव्यत् अनीयर आदि विभिन्न कृत् प्रत्ययों को लगा कर बने हुए शब्दों से, अस् एवं भू धातु के योग से, बनाये जाते हैं। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य इन्हीं क्रियारूपो को दिखाना है। ये क्रियारूप आवश्यक समझ कर पाँच लकारों में ही दिये गये हैं। छात्रगण इसी प्रकार अन्य व्यवहारोपयोगी आवश्यक धातुओं के भी कृत् प्रत्ययान्त रूपों के साथ अस् एवं भू धातु के पाँच लकारों के रूपों को लगा कर वाक्य बनाने का अभ्यास करें। अन्य व्यवहारोपयोगी धातुओं के कृत्प्रत्ययान्त रूप तथा उनका अर्थ जानने के लिए छात्रों को संस्थानम् द्वारा प्रकाशित "सुगम धातुरूपावलि" पुस्तक को पहले पढ़ लेना चाहिए।

२-इस प्रकरण के क्रियारूपों में प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम के स्थान पर "सः तौ ते" यह केवल तत् शब्द के, पुलिङ्ग के ही रूप दिये गये हैं। छात्रों को इनके स्त्रीलिङ्ग रूप "सा ते ताः" तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "तत् ते तानि" का भी प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार तत् शब्द के अतिरिक्त और भी जितने प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम शब्द हैं उन के भी तीनों लिङ्गों के रूपों को कण्ठस्थ कर उनका प्रयोग करना चाहिए।

३-वाक्यों में जो कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के रूप दिये गये हैं वे केवल पुलिङ्ग के ही हैं। यथा—कुर्वन् कुर्वन्तौ कुर्वन्तः इत्यादि। छात्रों को इनके भी स्त्रीलिङ्ग-रूप "कुर्वती कुर्वत्यौ कुर्वत्यः" तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कुर्वत् कुर्वती कुर्वन्ति" कण्ठस्थ कर लेने चाहिए तथा सर्वनाम शब्दों के अनुसार ही इनका प्रयोग करना चहिए। यथा—सः कुर्वन् अस्ति, सा कुर्वती अस्ति, तत् कुर्वत् अस्ति। कुर्वती और कुर्वत् के शेष रूप नदी तथा जगत् शब्द के समान चलेगें। यह बात आगे भी स्पष्ट की गयी है।

४-आगे के सभी लकारों के सभी वाक्यों में कर्म के स्थान पर केवल "कार्यं" यही एकवचनान्त एक पद दिया गया है परन्तु छात्रों को इसके "कार्ये कार्याणि" इन द्विवचन तथा बहुवचन के भी रूपों का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वाक्य में कार्य शब्द को बदल कर इसके स्थान में अन्य क्रियावाचक संज्ञाशब्दों का भी प्रयोग करना चाहिए। यथा—पठन, पाठन, लेखन, भ्रमण, शयन, भोजन, विश्राम आदि।

५-इस प्रकरण में कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के रूपों को लगाकर जितने प्रकार के क्रियारूप दिये गये हैं उनका प्रयोग संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इस पुस्तक के अन्त में ऐसे प्रयोगो के भी बहुत से उदाहरण, विविध ग्रन्थों के संकलन के रूप में, दे दिये गये हैं जिससे कि छात्रों एवं विद्वानों को भी ऐसे वाक्यों का प्रयोग करने में कोई सन्देह

या कठिनाई न हो। क्योंकि बहुत से विद्वानों एवं अध्यापकों को इस प्रकार के नये तथा अप्रचलित प्रयोग अटपटे-से लगते हैं।

६-इस प्रकरण में जितने वाक्य दिये गये हैं उनमें केवल तीन पद हैं—एक कर्ता, एक कर्म एवं एक क्रिया। इन वाक्यों में किम् (क्या) कुत्र (कहाँ) कदा (कब) कथं (कैसे) किमर्थम् (किसलिए) आदि प्रश्नवाचक अव्ययों को लगाकर छात्रों को इन्हें प्रश्नवाचक तथा न नहि लगाकर निषेधवाचक वाक्य बनाने चाहिए।

कृ धातु में कृत्य एवं कृत्प्रत्यय लगाकर बनाये हुए सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूप

विध्यर्थक कृत्य प्रत्यय—

तव्यत् कर्तव्य-करना चाहिए, करने योग्य (कर्मवाच्य)
कारयितव्य-कराना चाहिए, कराने योग्य (कर्मवाच्य)

अनीयर करणीय-करना चाहिए, करने योग्य (कर्मवाच्य)
कारणीय-कराना चाहिए, कराने योग्य (कर्मवाच्य)

ण्यत् कार्य-करना चाहिए, करने योग्य (कर्मवाच्य)

वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय—

शतृ कुर्वत्-करता हुआ, कर रहा (कर्तृवाच्य)
चिकीर्षत्-(सन्नन्त) करना चाहता हुआ
कारयत्-कराता हुआ, करा रहा (कर्तृवाच्य)

शानच् कुर्वाण-करता हुआ, कर रहा (कर्तृवाच्य)
कारयमाण-कराता हुआ, करा रहा (कर्तृवाच्य)
क्रियमाण-किया जा रहा, कार्यमाण कराया जा रहा (कर्मवाच्य)

भविष्यत्कालिक कृत् प्रत्यय—

स्यतृ करिष्यत्-करने वाला (कर्तृवाच्य)
कारयिष्यत्-कराने वाला (कर्तृवाच्य)

तृच् कर्तृ-करनेवाला, प्रेरणा० कारयितृ-करानेवाला

स्यमान करिष्यमाण-करने वाला, (कर्तृ०) किया जाने वाला (कर्म०)
कारयिष्यमाण-कराया जाने वाला (कर्मवाच्य)

भूतकालिक कृत् प्रत्यय—

क्त कृत-किया हुआ, किया गया (कर्मवाच्य)
कारित-कराया हुआ, कराया गया (कर्मवाच्य)

क्तवतु कृतवत्-किया, किया हुआ (कर्तृवाच्य)
कारितवत्-कराया, कराया हुआ (कर्तृवाच्य)

निमित्तार्थक कृत् प्रत्यय—

तुमुन् कर्तुम्-कर, करना, करने (अव्यय)
कारयितुम्-करा, कराना, कराने (अव्यय)

१-वर्तमानकालिक शतृ प्रत्ययान्त "कुर्वत्" शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रिया रूप

लट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अस्ति	वह काम कर रहा है
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ स्तः	वे दोनों काम कर रहे है
ते	कार्यं कुर्वन्तः सन्ति	वे सब काम कर रहे है
त्वं	कार्यं कुर्वन् असि	तुम काम कर रहे हो
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ स्थः	तुम दोनों काम कर रहे हो
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः स्थ	तुम सब काम कर रहे हो
अहं	कार्यं कुर्वन् अस्मि	मैं काम कर रहा हूँ
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ स्वः	हम दोनों काम कर रहे है
वयं	कार्यं कुर्वन्तः स्म	हम सब काम कर रहे है

लङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् आसीत्	वह काम कर रहा था
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम कर रहे थे
ते	कार्यं कुर्वन्तः आसन्	वे सब काम कर रहे थे
त्वं	कार्यं कुर्वन् आसीः	तुम काम कर रहे थे
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ आस्तम्	तुम दोनों काम कर रहे थे
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः आस्त	तुम सब काम कर रहे थे
अहं	कार्यं कुर्वन् आसम्	मैं काम कर रहा था
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ आस्व	हम दोनों काम कर रहे थे
वयं	कार्यं कुर्वन्तः आस्म	हम सब काम कर रहे थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् स्यात्	वह काम कर रहा हो
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम कर रहे हों
ते	कार्यं कुर्वन्तः स्युः	वे सब काम कर रहे हों
त्वं	कार्यं कुर्वन् स्याः	तुम काम कर रहे होवो
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ स्यातम्	तुम दोनों काम कर रहे होवो
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः स्यात्	तुम सब काम कर रहे होवो
अहं	कार्यं कुर्वन् स्याम्	मैं काम कर रहा होऊँ
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ स्याव	हम दोनों काम कर रहे होवें
वयं	कार्यं कुर्वन्तः स्याम	हम सब काम कर रहे होवें

टिप्पणी—अस् एवं भू धातु के स्थान पर अस्, स्था तथा वृतु धातु के रूपों का भी प्रयोग होता है।

लृट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भविष्यति	वह काम कर रहा होगा
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यतः	वे दोनो काम कर रहे होंगे
ते	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यन्ति	वे सब काम कर रहे होंगे
त्वं	कार्यं कुर्वन् भविष्यसि	तुम काम कर रहे होगे
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यथः	तुम दोनों काम कर रहे होंगे
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यथ	तुम सब काम कर रहे होंगे
अहं	कार्यं कुर्वन् भविष्यामि	मैं काम कर रहा हूँगा
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम कर रहे होंगे
वयं	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यामः	हम सब काम कर रहे होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभविष्यत्	वह काम कर रहा होता
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम कर रहे होते
ते	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्यन्	वे सब काम कर रहे होते
त्वं	कार्यं कुर्वन् अभविष्यः	तुम काम कर रहे होते
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनों काम कर रहे होते
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्यत	तुम सब काम कर रहे होते
अहं	कार्यं कुर्वन् अभविष्यम्	मैं काम कर रहा होता
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम कर रहे होते
वयं	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्याम	हम सब काम कर रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कुर्वत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कुर्वती कुर्वत्यौ कुर्वत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "कुर्वत् कुर्वती कुर्वन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

२-कुर्वत् शब्द के समान ही पठत् लिखत् गच्छत् तिष्ठत् आदि शब्दों के भी रूप चलेंगे तथा इनके साथ भी वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

३-कृ धातु आत्मनेपदी भी है अतः इससे शतृ के स्थान पर शानच् प्रत्यय भी होता है जिससे "कुर्वाण" शब्द बनता है। इस शब्द के पुंलिङ्ग रूप "कुर्वाणः कुर्वाणौ कुर्वाणाः" आदि बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग रूप "कुर्वाणा कुर्वाणे कुर्वाणाः" आदि विद्या शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कुर्वाणं कुर्वाणे कुर्वाणानि" आदि ज्ञान शब्द के समान चलेंगे। इसी प्रकार यङन्त चेक्रीयमाण, जाज्वल्यमान, देदीप्यमान आदि शब्दों के भी रूप होंगे।

४-कुर्वाण शब्द के समान ही शयान (सोता हुआ) जायमान (होता हुआ) अधीयान (पढ़ता हुआ) वर्द्धमान (बढ़ता हुआ) आदि शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप चलेंगे।

५-कर्मवाच्य में तेन कार्यं क्रियमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति अभविष्यत् आदि रूप होंगे।

२-कुर्वत् शब्द के साथ भू धातु के योग से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भवति	वह काम करता रहता है
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ भवतः	वे दोनों काम करते रहे हैं
ते	कार्यं कुर्वन्तः भवन्ति	वे सब काम करते रहते हैं
त्वं	कार्यं कुर्वन् भवसि	तुम काम करते रहते हो
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ भवथः	तुम दोनों काम करते रहते हो
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः भवथ	तुम सब काम करते रहते हो
अहं	कार्यं कुर्वन् भवामि	मैं काम करता रहता हूँ
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ भवावः	हम दोनों काम करते रहे हैं
वयं	कार्यं कुर्वन्तः भवामः	हम सब काम करते रहते हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभवत्	वह काम करता रहा
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ अभवताम्	वे दोनों काम करते रहे
ते	कार्यं कुर्वन्तः अभवन्	वे सब काम करते रहे
त्वं	कार्यं कुर्वन् अभवः	तुम काम करते रहे
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभवतम्	तुम दोनों काम करते रहे
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः अभवत	तुम सब काम करते रहे
अहं	कार्यं कुर्वन् अभवम्	मैं काम करता रहा
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभवाव	हम दोनों काम करते रहे
वयं	कार्यं कुर्वन्तः अभवाम	हम सब काम करते रहे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भवेत्	वह काम करता रहे
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ भवेताम्	वे दोनों काम करते रहें
ते	कार्यं कुर्वन्तः भवेयुः	वे सब काम करते रहें
त्वं	कार्यं कुर्वन् भवेः	तुम काम करते रहे
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ भवेतम्	तुम दोनों काम करते रहे
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः भवेत	तुम सब काम करते रहे
अहं	कार्यं कुर्वन् भवेयम्	मैं काम करता रहा
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ भवेव	हम दोनों काम करते रहें
वयं	कार्यं कुर्वन्तः भवेम	हम सब काम करते रहे

लृट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भविष्यति	वह काम करता रहेगा
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यतः	वे दोनों काम करते रहेंगे
ते	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यन्ति	वे सब काम करते रहेंगे
त्वं	कार्यं कुर्वन् भविष्यसि	तुम काम करते रहोगे
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यथः	तुम दोनों काम करते रहोगे
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यथ	तुम सब काम करते रहोगे
अहं	कार्यं कुर्वन् भविष्यामि	मैं काम करता रहूँगा
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम करते रहेंगे
वयं	कार्यं कुर्वन्तः भविष्यामः	हम सब काम करते रहेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभविष्यत्	वह काम करता रहता
तौ	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम करते रहते
ते	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्यन्	वे सब काम करते रहते
त्वं	कार्यं कुर्वन् अभविष्यः	तुम काम करते रहते
युवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनों काम करते रहते
यूयं	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्यत	तुम सब काम करते रहते
अहं	कार्यं कुर्वन् अभविष्यम्	मै काम करता रहता
आवां	कार्यं कुर्वन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम करते रहते
वयं	कार्यं कुर्वन्तः अभविष्याम	हम सब काम करते रहते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१–इसके पूर्व अस् धातु के साथ पाँचों लकारों के वाक्य बनाने के बाद जो टिप्पणियाँ दी गयी हैं वे सब यहाँ भी लागू होगी।

२–कर्मवाच्य में "तेन कार्यं क्रियमाणं भवति" आदि पूर्ववत् रूप होंगे।

३–पूर्व सूचना के अनुसार भू धातु के समान ही स्था, आस्, तथा वृतु धातु का भी प्रयोग किया जाता है। यथा—सः कार्यं कुर्वन् भवति, सः कार्यं कुर्वन् तिष्ठति, सः कार्यं कुर्वन् आस्ते, सः कार्यं कुर्वन् वर्तते इत्यादि।

४–जब क्रिया में निरन्तरता का बोध कराना होता है तो भू, एवं स्था का प्रयोग होता है।

३-सन्नन्त कृ धातु के शतृप्रत्ययान्त "चिकीर्षत्" शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् अस्ति।	वह काम करना चाह रहा है।
तौ	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्तः।	वे दोनों काम करना चाह रहे हैं
ते	कार्यं चिकीर्षन्तः सन्ति।	वे सब काम करना चाह रहे हैं
त्वं	कार्यं चिकीर्षन् असि।	तुम काम करना चाह रहे हो
युवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्थः।	तुम दोनों काम करना चाह रहे हो
यूयं	कार्यं चिकीर्षन्तः स्थ।	तुम सब काम करना चाह रहे हो
अहं	कार्यं चिकीर्षन् अस्मि।	मैं काम करना चाह रहा हूँ
आवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्वः।	हम दोनों काम करना चाह रहे हैं
वयं	कार्यं चिकीर्षन्तः स्मः।	हम सब काम करना चाह रहे हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् आसीत्	वह काम करना चाह रहा था
तौ	कार्यं चिकीर्षन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम करना चाह रहे थे
ते	कार्यं चिकीर्षन्तः आसन्	वे सब काम करना चाह रहे थे
त्वं	कार्यं चिकीर्षन् आसीः	तुम काम करना चाह रहे थे
युवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ आस्तम्	तुम दोनों काम करना चाह रहे थे
यूयं	कार्यं चिकीर्षन्तः आस्त	तुम सब काम करना चाह रहे थे
अहं	कार्यं चिकीर्षन् आसम्	मैं काम करना चाह रहा था
आवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ आस्व	हम दोनों काम करना चाह रहे थे
वयं	कार्यं चिकीर्षन्तः आस्म	हम सब काम करना चाह रहे थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् स्यात्	वह काम करना चाह रहा हो
तौ	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम करना चाह रहे हों
ते	कार्यं चिकीर्षन्तः स्युः	वे सब काम करना चाह रहे हों
त्वं	कार्यं चिकीर्षन् स्याः	तुम काम करना चाह रहे हो
युवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्यातम्	तुम दोनों काम करना चाह रहे होवो
यूयं	कार्यं चिकीर्षन्तः स्यात	तुम सब काम करना चाह रहे होवो
अहं	कार्यं चिकीर्षन् स्याम्	मैं काम करना चाह रहा होऊँ
आवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ स्याव	हम दोनों काम करना चाह रहे होवें
वयं	कार्यं चिकीर्षन्तः स्याम	हम सब काम करना चाह रहे होवें

लृट् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् भविष्यति	वह काम करना चाह रहा होगा
तौ	कार्यं चिकीर्षन्तौ भविष्यतः	वे दोनों काम करना चाह रहे होंगे
ते	कार्यं चिकीर्षन्तः भविष्यन्ति	वे सब काम करना चाह रहे होंगे
त्वं	कार्यं चिकीर्षन् भविष्यसि	तुम काम करना चाह रहे होगे
युवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ भविष्यथः	तुम दोनों काम करना चाह रहे होगे
यूयं	कार्यं चिकीर्षन्तः भविष्यथ	तुम सब काम करना चाह रहे होगे
अहं	कार्यं चिकीर्षन् भविष्यामि	मैं काम करना चाह रहा हूँगा
आवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ भविष्यावः	हम दोनो काम करना चाह रहे होंगे
वयं	कार्यं चिकीर्षन्तः भविष्यामः	हम सब काम ना चाह रहे होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् अभविष्यत्	वह काम करना चाह रहा होता
तौ	कार्यं चिकीर्षन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम करना चाह रहे होते
ते	कार्यं चिकीर्षन्तः अभविष्यन्	वे सब काम करना चाह रहे होते
त्वं	कार्यं चिकीर्षन् अभविष्यः	तुम काम करना चाह रहे होते
युवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनो काम करना चाह रहे होते
यूयं	कार्यं चिकीर्षन्तः अभविष्यत	तुम सब काम करना चाह रहे होते
अहं	कार्यं चिकीर्षन् अभविष्यम्	मैं काम करना चाह रहा होता
आवां	कार्यं चिकीर्षन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम करना चाह रहे होते
वयं	कार्यं चिकीर्षन्तः अभविष्याम	हम सब काम करना चाह रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-चिकीर्षत् शब्द के समान ही जि धातु से जिगीषत् (जीतना चाहने वाला) गम् से जिगमिषत् (जाना चाहने वाला) जीव से जिजीविषत् (जीना चाहने वाला) तृ से तितीर्षत् (तैरना चाहने वाला) हृ से जिहीर्षत् (हरण करना चाहने वाला) युध से युयुत्सत् (लड़ना चाहने वाला) आदि शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिए।

२-शानच् प्रत्यय से बने शब्द चिकीर्षमाण (करना चाह रहा) ज्ञा से जिज्ञासमान (जानना चाह रहा) आदि शब्दों के रूप कुर्वाण के समान चलेंगे।

३-ऊपर के शतृ-शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के स्थान पर उ प्रत्यायान्त शब्द-जिगीषु, जिगमिषु, जिजीविषु, तितीर्षु, जिहीर्षु, युयुत्सु, जिज्ञासु आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

४-कमवाच्य में 'तेन कार्यं चिकीर्ष्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति, अभविष्यत् आदि प्रयोग होगा।

४-वर्तमानकालिक शतृप्रत्ययान्त प्रेरणार्थक "कारयत्" शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कारयन् अस्ति	वह काम करा रहा है
तौ	कार्यं कारयन्तौ स्तः	वे दोनों काम करा रहे हैं
ते	कार्यं कारयन्तः सन्ति	वे सब काम करा रहे हैं
त्वं	कार्यं कारयन् असि	तुम काम करा रहे हो
युवां	कार्यं कारयन्तौ स्थः	तुम दोनों काम करा रहे हो
यूयं	कार्यं कारयन्तः स्थ	तुम सब काम करा रहे हो
अहं	कार्यं कारयन् अस्मि	मैं काम करा रहा हूँ
आवां	कार्यं कारयन्तौ स्वः	हम दोनो काम करा रहे हैं
वयं	कार्यं कारयन्तः स्मः	हम सब काम करा रहे हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कारयन् आसीत्	वह काम करा रहा था
तौ	कार्यं कारयन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम करा रहे थें
ते	कार्यं कारयन्तः आसन्	वे सब काम करा रहे थें
त्वं	कार्यं कारयन् आसीः	तुम काम करा रहे थे
युवां	कार्यं कारयन्तौ आस्तम्	तुम दोनों काम करा रहे थें
यूयं	कार्यं कारयन्तः आस्त	तुम सब काम करा रहे थें
अहं	कार्यं कारयन् आसम्	मैं काम करा रहा था
आवां	कार्यं कारयन्तौ आस्व	हम दोनों काम करा रहे थें
वयं	कार्यं कारयन्तः आस्म	हम सब काम करा रहे थें

लिङ् लकार

सः	कार्यं कारयन् स्यात्	वह काम करा रहा हो
तौ	कार्यं कारयन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम करा रहे हों
ते	कार्यं कारयन्तः स्युः	वे सब काम करा रहे हों
त्वं	कार्यं कारयन् स्याः	तुम काम करा रहे होवो
युवां	कार्यं कारयन्तौ स्यातम्	तुम दोनों काम करा रहे होवो
यूयं	कार्यं कारयन्तः स्यात	तुम सब काम करा रहे होवो
अहं	कार्यं कारयन् स्याम्	मैं काम करा रहा होऊँ
आवां	कार्यं कारयन्तौ स्याव	हम दोनों काम करा रहे हों
वयं	कार्यं कारयन्तः स्याम	हम सब काम करा रहे हों

लृट् लकार

सः कार्यं कारयन् भविष्यति वह काम करा रहा होगा
तौ कार्यं कारयन्तौ भविष्यतः वे दोनों काम करा रहे होंगे
ते कार्यं कारयन्तः भविष्यन्ति वे सब काम करा रहे होंगे
त्वं कार्यं कारयन् भविष्यसि तुम काम करा रहे होगे
युवां कार्यं कारयन्तौ भविष्यथः तुम दोनों काम करा रहे होगे
यूयं कार्यं कारयन्तः भविष्यथ तुम सब काम करा रहे होगे
अहं कार्यं कारयन् भविष्यामि मैं काम करा रहा हूँगा
आवां कार्यं कारयन्तौ भविष्यावः हम दोनों काम करा रहे होंगे
वयं कार्यं कारयन्तः भविष्यामः हम सब काम करा रहे होंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कारयन् अभविष्यत् वह काम करा रहा होता
तौ कार्यं कारयन्तौ अभविष्यताम् वे दोनो काम करा रहे होते
ते कार्यं कारयन्तः अभविष्यन् वे सब काम करा रहे होते
त्वं कार्यं कारयन् अभविष्यः तुम काम करा रहे होते
युवां कार्यं कारयन्तौ अभविष्यतम् तुम दोनों काम करा रहे होते
यूयं कार्यं कारयन्तः अभविष्यत तुम सब काम करा रहे होते
अहं कार्यं कारयन् अभविष्यम् मैं काम करा रहा होता
आवां कार्यं कारयन्तौ अभविष्याव हम दोनों काम करा रहे होते
वयं कार्यं कारयन्तः अभविष्याम हम सब काम करा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कारयत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कारयन्ती कारयन्त्यौ कारयन्त्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कारयत् कारयती कारयन्ति" इत्यादि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

२-कारयत् शब्द के समान पाठयत् (पढ़ा रहा) लेखयत् (लिखा रहा) श्रावयत् (सुना रहा) दर्शयत् (दिखा रहा) बोधयत् (समझा रहा) आदि शब्दों को लगाकर वाक्य बनाने चाहिए।

३-पाठयत् आदि शब्दों का प्रयोग करते समय कार्यं के स्थान पर इन्हीं के अनुरूप पाठं, लेखं, गीतं, दृश्यं, अर्थं आदि पदों का प्रयोग करना चाहिए।

४-कर्मवाच्य में तेन कार्यं कार्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति, अभविष्यत् आदि रूप होंगे।

५-भूतकालिक क्तवतु प्रत्ययान्त "कृतवत्" शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कृतवान् अस्ति	उसने काम किया है
तौ	कार्यं कृतवन्तौ स्तः	उन दोनों ने काम किया है
ते	कार्यं कृतवन्तः सन्ति	उन सब ने काम किया हैं
त्वं	कार्यं कृतवान् असि	तुमने काम किया है
युवां	कार्यं कृतवन्तौ स्थः	तुम दोनों ने काम किया हैं
यूयं	कार्यं कृतवन्तः स्थ	तुम सब ने काम किया हैं
अहं	कार्यं कृतवान् अस्मि	मैंने काम किया है
आवां	कार्यं कृतवन्तौ स्वः	हम दोनो ने काम किया है
वयं	कार्यं कृतवन्तः स्मः	हम सब ने काम किया है

लङ् लकार

सः	कार्यं कृतवान् आसीत्	उसने काम किया था
तौ	कार्यं कृतवन्तौ आस्ताम्	उन दोनों ने काम किया था
ते	कार्यं कृतवन्तः आसन्	उन सब ने काम किया था
त्वं	कार्यं कृतवान् आसीः	तुमने काम किया था
युवां	कार्यं कृतवन्तौ आस्तम्	तुम दोनों ने काम किया था
यूयं	कार्यं कृतवन्तः आस्त	तुम सब ने काम किया था
अहं	कार्यं कृतवान् आसम्	मैंने काम किया था
आवां	कार्यं कृतवन्तौ आस्व	हम दोनों ने काम किया था
वयं	कार्यं कृतवन्तः आस्म	हम सब ने काम किया था

लिङ् लकार

सः	कार्यं कृतवान् स्यात्	उसने काम किया हो
तौ	कार्यं कृतवन्तौ स्याताम्	उन दोनों ने काम किया हो
ते	कार्यं कृतवन्तः स्युः	उन सब ने काम किया हो
त्वं	कार्यं कृतवान् स्याः	तुमने काम किया हो
युवां	कार्यं कृतवन्तौ स्यातम्	तुम दोनों ने काम किया हो
यूयं	कार्यं कृतवन्तः स्यात	तुम सब ने काम किया हो
अहं	कार्यं कृतवान् स्याम्	मैंने काम किया हो
आवां	कार्यं कृतवन्तौ स्याव	हम दोनों ने काम किया हो
वयं	कार्यं कृतवन्तः स्याम	हम सब ने काम किया हो

लृट् लकार

सः कार्यं कृतवान् भविष्यति — उसने काम किया होगा
तौ कार्यं कृतवन्तौ भविष्यतः — उन दोनों ने काम किया होंगे
ते कार्यं कृतवन्तः भविष्यन्ति — उन सब ने काम किया होंगे
त्वं कार्यं कृतवान् भविष्यसि — तुमने काम किया होगे
युवां कार्यं कृतवन्तौ भविष्यथः — तुम दोनों ने काम किया होगे
यूयं कार्यं कृतवन्तः भविष्यथ — तुम सब ने काम किया होगे
अहं कार्यं कृतवान् भविष्यामि — मैंने काम किया होगा
आवां कार्यं कृतवन्तौ भविष्यावः — हम दोनों ने काम किया होगा
वयं कार्यं कृतवन्तः भविष्यामः — हम सब ने काम किया होगा

लृङ् लकार

सः कार्यं कृतवान् अभविष्यत् — उसने काम किया होता
तौ कार्यं कृतवन्तौ अभविष्यताम् — उन दोनों ने काम किया होता
ते कार्यं कृतवन्तः अभविष्यन् — उन सब ने काम किया होता
त्वं कार्यं कृतवान् अभविष्यः — तुम ने काम ने काम किया होता
युवां कार्यं कृतवन्तौ अभविष्यतम् — तुम दोनों ने काम किया होता
यूयं कार्यं कृतवन्तः अभविष्यत — तुम सब ने काम किया होता
अहं कार्यं कृतवान् अभविष्यम् — मैंने काम किया होता
आवां कृतवन्तौ अभविष्याव — हम दोनों ने काम किया होता
वयं कार्यं कृतवन्तः अभविष्याम — हम सब ने काम किया होता

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कृतवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कृतवती कृतवत्यौ कृतवत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "कृतवत् कृतवती कृतवन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलते हैं।

२-कृतवत् शब्द के समान ही पठितवत्, गतवत्, आगतवत्, दृष्टवत्, श्रुतवत् आदि शब्दों को लगाकर तथा इनके साथ पाठं, लेखं, ग्रामं, गृहं, नाटकं, कथां आदि पद लगाकर वाक्य बनाने चाहिए।

३-कर्मवाच्य में तेन कार्यं कृतम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति, अभविष्यत् आदि रूप होंगे।

६-भूतकालिक क्तवतु प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक 'कारितवत्' शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः कार्यं कारितवान् अस्ति — उसने काम कराया है
तौ कार्यं कारितवन्तौ स्तः — उन दोनों ने काम कराया है
ते कार्यं कारितवन्तः सन्ति — उन सब ने काम कराया हैं
त्वं कार्यं कारितवान् असि — तुम ने काम कराया है
युवां कार्यं कारितवन्तौ स्थः — तुम दोनों ने काम कराया हैं
यूयं कार्यं कारितवन्तः स्थ — तुम सब ने काम कराया हैं
अहं कार्यं कारितवान् अस्मि — मैंने काम कराया है
आवां कार्यं कारितवन्तौ स्वः — हम दोनो ने काम कराया है
वयं कार्यं कारितवन्तः स्मः — हम सब ने काम कराया है

लङ् लकार

सः कार्यं कारितवान् आसीत् — उसने काम कराया था
तौ कार्यं कारितवन्तौ आस्ताम् — उन दोनों ने काम कराया था
ते कार्यं कारितवन्तः आसन् — उन सब ने काम कराया था
त्वं कार्यं कारितवान् आसीः — तुम ने काम कराया था
युवां कार्यं कारितवन्तौ आस्तम् — तुम दोनों ने काम कराया था
यूयं कार्यं कारितवन्तः आस्त — तुम सब ने काम कराया था
अहं कार्यं कारितवान् आसम् — मैंने काम कराया था
आवां कार्यं कारितवन्तौ आस्व — हम दोनों ने काम कराया था
वयं कार्यं कारितवन्तः आस्म — हम सब ने काम कराया था

लिङ् लकार

सः कार्यं कारितवान् स्यात् — उसने काम कराया हो
तौ कार्यं कारितवन्तौ स्याताम् — उन दोनों ने काम कराया हों
ते कार्यं कारितवन्तः स्युः — उन सब ने काम कराया हों
त्वं कार्यं कारितवान् स्याः — तुम ने काम कराया हो
युवां कार्यं कारितवन्तौ स्यातम् — तुम दोनों ने काम कराया हो
यूयं कार्यं कारितवन्तः स्यात — तुम सब ने काम कराया हो
अहं कार्यं कारितवान् स्याम् — मैंने काम कराया हो
आवां कार्यं कारितवन्तौ स्याव — हम दोनों ने काम कराया हों
वयं कार्यं कारितवन्तः स्याम — हम सब ने काम कराया हों

लृट् लकार

सः कार्यं कारितवान् भविष्यति उसने काम कराया होगा
तौ कार्यं कारितवन्तौ भविष्यतः उन दोनों ने काम कराया होगा
ते कार्यं कारितवन्तः भविष्यन्ति उन सब ने काम कराया होगा
त्वं कार्यं कारितवान् भविष्यसि तुम ने काम कराया होगा
युवां कार्यं कारितवन्तौ भविष्यथः तुम दोनों ने काम कराया होगा
यूयं कार्यं कारितवन्तः भविष्यथ तुम सब ने काम कराया होगा
अहं कार्यं कारितवान् भविष्यामि मैंने काम कराया होगा
आवां कार्यं कारितवन्तौ भविष्यावः हम दोनों ने काम कराया होगा
वयं कार्यं कारितवन्तः भविष्यामः हम सब ने काम कराया होगा

लृङ् लकार

सः कार्यं कारितवान् अभविष्यत् उसने काम कराया होता
तौ कार्यं कारितवन्तौ अभविष्यताम् उन दोनों ने काम कराया होता
ते कार्यं कारितवन्तः अभविष्यन् उन सब ने काम कराया होता
त्वं कार्यं कारितवान् अभविष्यः तुम ने काम कराया होता
युवां कार्यं कारितवन्तौ अभविष्यतम् तुम दोनों ने काम कराया होता
यूयं कार्यं कारितवन्तः अभविष्यत तुम सब ने काम कराया होता
अहं कार्यं कारितवान् अभविष्यम् मैंने काम कराया होता
आवां कार्यं कारितवन्तौ अभविष्याव हम दोनों ने काम कराया होता
वयं कार्यं कारितवन्तः अभविष्याम हम सब ने काम कराया होता

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कारितवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कारितवती कारितवत्यौ कारितवत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "कारितवत् कारितवती कारितवन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेगें।

२-कारितवत् शब्द के समान पाठितवत् (पढ़ाया) लेखितवत् (लिखाया) श्रावितवत् (सुनाया) दर्शितवत् (दिखाया) बोधितवत् (समझाया) आदि शब्दों का पाठ लेख आदि शब्दों के साथ प्रयोग कर इनके वाक्य बनाने चाहिए। विशेष्य शब्दों के साथ इनके निम्नलिखित रूप मे प्रयोग होगा। यथा—सः मां पाठितवान् अस्ति, ते पत्रं लेखितवन्तः सन्ति, तौ कथां श्रावितवन्तौ स्तः, माता पुत्रं पाठितवती आसीत्, गुरुः शिष्यं बोधितवान् भविष्यति, भवान् दृश्यं दर्शितवान् आसीत् इत्यादि।

७-भविष्यत्कालिक स्यतृ प्रत्ययान्त ''करिष्यत्'' शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् अस्ति	वह काम करने वाला है
तौ	कार्यं करिष्यन्तौ स्तः	वे दोनो काम करने वाले हैं
ते	कार्यं करिष्यन्तः सन्ति	वे सब काम करने वाले हैं
त्वं	कार्यं करिष्यन् असि	तुम काम करने हो
युवां	कार्यं करिष्यन्तौ स्थः	तुम दोनों काम करने वाले हो
यूयं	कार्यं करिष्यन्तः स्थ	तुम सब काम करने वाले हो
अहं	कार्यं करिष्यन् अस्मि	मैं काम करने वाला हूँ
आवां	कार्यं करिष्यन्तौ स्वः	हम दोनों काम करने वाले हैं
वयं	कार्यं करिष्यन्तः स्मः	हम सब काम करने वाले हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् आसीत्	वह कान करने वाला था
तौ	कार्यं करिष्यन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम करने वाले थे
ते	कार्यं करिष्यन्तः आसन्	वे सब काम करने वाले थे
त्वं	कार्यं करिष्यन् आसीः	तुम काम करने वाले थे
युवां	कार्यं करिष्यन्तौ आस्तम्	तुम दोनों काम करने वाले थें
यूयं	कार्यं करिष्यन्तः आस्त	तुम सब काम करने वाले थें
अहं	कार्यं करिष्यन् आसम्	मै काम करने वाला था
आवां	कार्यं करिष्यन्तौ आस्व	हम दोनों काम करने वाले थें
वयं	कार्यं करिष्यन्तः आस्म	हम सब काम करने वाले थें

लिङ् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् स्यात्	वह काम करने वाला हो
तौ	कार्यं करिष्यन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम करने वाले हों
ते	कार्यं करिष्यन्तः स्युः	वे सब काम करने वाले हों
त्वं	कार्यं करिष्यन् स्याः	तुम काम करने वाले होवो
युवां	कार्यं करिष्यन्तौ स्यातम्	तुम दोनों काम करने वाले होवो
यूयं	कार्यं करिष्यन्तः स्यात	तुम सब काम करने वाले होवो
अहं	कार्यं करिष्यन् स्याम्	मैं काम कराने वाला होऊँ
आवां	कार्यं करिष्यन्तौ स्याव	हम दोनों काम करने वाला होवें
वयं	कार्यं करिष्यन्तः स्याम	हम सब काम करने वाले होवें

लृट् लकार

सः कार्यं करिष्यन् भविष्यति — वह काम करने वाला होगा
तौ कार्यं करिष्यन्तौ भविष्यतः — वे दोनों काम करने वाले होंगे
ते कार्यं करिष्यन्तः भविष्यन्ति — वे सब काम करने वाले होंगे
त्वं कार्यं करिष्यन् भविष्यसि — तुम काम करने वाले होवोगे
युवां कार्यं करिष्यन्तौ भविष्यथः — तुम दोनों काम करने वाले होवोगे
यूयं कार्यं करिष्यन्तः भविष्यथ — तुम सब काम करने वाले होवोगे
अहं कार्यं करिष्यन् भविष्यामि — मैं काम करने वाला होऊँगा
आवां कार्यं करिष्यन्तौ भविष्यावः — हम दोनों काम करने वाले होंगे
वयं कार्यं करिष्यन्तः भविष्यामः — हम सब काम करने वाले होंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं करिष्यन् अभविष्यत् — वह काम करने वाला होता
तौ कार्यं करिष्यन्तौ अभविष्यताम् — वे दोनों काम करने वाले होते
ते कार्यं करिष्यन्तः अभविष्यन् — वे सब काम करने वाले होते
त्वं कार्यं करिष्यन् अभविष्यः — तुम काम करने वाले होते
युवां कार्यं करिष्यन्तौ अभविष्यतम् — तुम दोनों काम करने वाले होते
यूयं कार्यं करिष्यन्तः अभविष्यत — तुम सब काम करने वाले होते
अहं कार्यं करिष्यन् अभविष्यम् — मैं काम करने वाला होता
आवां कार्यं करिष्यन्तौ अभविष्याव — हम दोनों काम करने वाले होते
वयं कार्यं करिष्यन्तः अभविष्याम — हम सब काम करने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-करिष्यत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "करिष्यन्ती करिष्यन्त्यौ करिष्यन्त्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "करिष्यत् करिष्यती करिष्यन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेगें।

२-करिष्यत् शब्द के समान ही पठिष्यत् (पढ़नेवाला) लेखिष्यत् (लिखने वाला) गमिष्यत् (जाने वाला) भविष्यत् (होने वाला) द्रक्ष्यत् (देखने वाला) आदि शब्दों के समान चलेगें।

३-कृ धातु के उभयपदी होने के कारण इससे भविष्यत्काल के अर्थ में स्यमान प्रत्यय लगाने पर "करिष्यमाण" ऐसा रूप भी होता है। अर्थ करिष्यत् शब्द के ही समान होगा तथा पूर्वोक्त कुर्वाण शब्द के समान ही इसके भी तीनों लिङ्गों में रूप होंगे। यथा—स कार्यं करिष्यमाणः अस्ति, सा कार्यं करिष्यमाणा अस्ति, ताः कार्यं करिष्यमाणाः स्युः इत्यादि।

८-भविष्यत्कालिक स्यतृ प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक "कारयिष्यत्" शब्द के कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् अस्ति	वह काम कराने वाला है
तौ	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्तः	वे दोनों काम कराने वाले हैं
ते	कार्यं कारयिष्यन्तः सन्ति	वे सब काम कराने वाले है
त्वं	कार्यं कारयिष्यन् असि	तुम काम कराने हो
युवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्थः	तुम दोनों काम कराने वाले हो
यूयं	कार्यं कारयिष्यन्तः स्थ	तुम सब काम कराने वाले हो
अहं	कार्यं कारयिष्यन् अस्मि	मै काम कराने वाला हूँ
आवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्वः	हम दोनों काम कराने वाले है
वयं	कार्यं कारयिष्यन्तः स्मः	हम सब काम कराने वाले हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् आसीत्	वह काम कराने वाला था
तौ	कार्यं कारयिष्यन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम कराने वाले थे
ते	कार्यं कारयिष्यन्तः आसन्	वे सब काम कराने वाले थे
त्वं	कार्यं कारयिष्यन् आसीः	तुम काम कराने वाले थे
युवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ आस्तम्	तुम दोनों काम कराने वाले थें
यूयं	कार्यं कारयिष्यन्तः आस्त	तुम सब काम कराने वाले थें
अहं	कार्यं कारयिष्यन् आसम्	मैं काम कराने वाला था
आवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ आस्व	हम दोनों काम कराने वाले थें
वयं	कार्यं कारयिष्यन्तः आस्म	हम सब काम कराने वाले थें

लिङ् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् स्यात्	वह काम कराने वाला हो
तौ	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम कराने वाले हों
ते	कार्यं कारयिष्यन्तः स्युः	वे सब काम कराने वाले हों
त्वं	कार्यं कारयिष्यन् स्याः	तुम काम कराने वाले होवो
युवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्यातम्	तुम दोनों काम कराने वाले होवो
यूयं	कार्यं कारयिष्यन्तः स्यात	तुम सब काम कराने वाले होवो
अहं	कार्यं कारयिष्यन् स्याम्	मैं काम कराने वाला होऊँ
आवां	कार्यं कारयिष्यन्तौ स्याव	हम दोनों काम कराने वाला होवें
वयं	कार्यं कारयिष्यन्तः स्याम	हम सब काम कराने वाले होवे

लृट् लकार

सः कार्यं कारयिष्यन् भविष्यति — वह काम कराने वाला होगा
तौ कार्यं कारयिष्यन्तौ भविष्यतः — वे दोनों काम कराने वाले होंगे
ते कार्यं कारयिष्यन्तः भविष्यन्ति — व सब काम कराने वाले होंगे
त्वं कार्यं कारयिष्यन् भविष्यसि — तुम काम कराने वाले होवोगे
युवां कार्यं कारयिष्यन्तौ भविष्यथः — तुम दोनों काम कराने वाले होवोगे
यूयं कार्यं कारयिष्यन्तः भविष्यथ — तुम सब काम कराने वाले होवोगे
अहं कार्यं कारयिष्यन् भविष्यामि — मैं काम कराने वाला होऊँगा
आवां कार्यं कारयिष्यन्तौ भविष्यावः — हम दोनों काम कराने वाले होंगे
वयं कार्यं कारयिष्यन्तः भविष्यामः — हम सब काम कराने वाले होंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कारयिष्यन् अभविष्यत् — वह काम कराने वाला होता
तौ कार्यं कारयिष्यन्तौ अभविष्यताम् — वे दोनों काम कराने वाले होते
ते कार्यं कारयिष्यन्तः अभविष्यन् — वे सब काम कराने वाले होते
त्वं कार्यं कारयिष्यन् अभविष्यः — तुम काम कराने वाले होते
युवां कार्यं कारयिष्यन्तौ अभविष्यतम् — तुम दोनों काम कराने वाले होते
यूयं कार्यं कारयिष्यन्तः अभविष्यत — तुम सब काम कराने वाले होते
अहं कार्यं कारयिष्यन् अभविष्यम् — मैं काम कराने वाला होता
आवां कार्यं कारयिष्यन्तौ अभविष्याव — हम दोनों काम कराने वाले होते
वयं कार्यं कारयिष्यन्तः अभविष्याम — हम सब काम कराने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कारयिष्यत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कारयिष्यन्ती कारयिष्यन्त्यौ कारयिष्यन्तः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कारयिष्यत् कारयिष्यती कारयिष्यन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

२-कारयिष्यत् शब्द के समान ही पाठयिष्यत् (पढ़ाने वाला) लेखयिष्यत् (लिखाने वाला) दर्शयिष्यत् (दिखाने वाला) श्रावयिष्यत् (सुनाने वाला) आदि शब्दों के तीनों लिङ्गों में रूप चलेंगे। छात्र इस प्रकार के अन्य शब्दों का भी एक कर्म के साथ वाक्यों में प्रयोग करें।

३-कृ धातु के णिजन्त रूप के भी उपभयपदी होने के कारण कारयिष्यत् के स्थान पर "कारयिष्यमाण" ऐसा भी रूप होगा तथा करिष्यमाण के समान ही तीनों लिङ्गों में रूप चलेंगे। कारयिष्यत् शब्द के समान ही कारयिष्यमाण शब्द का भी अर्थ होगा।

४-कर्मवाच्य में तेन कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात् आदि रूप होंगे।

पिछले पृष्ठों में कृ धातु के साथ कर्तृवाच्य में शतृ, शानच्, क्तवतु, स्यतृ तथा स्यमान आदि कृत्प्रत्ययों को लगाकर बने सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूपों के साथ अस् एवं भू धातु के योग से बनने वाले क्रियारूपों को अर्थ के साथ बतलाया गया है। साथ ही टिप्पणियों में कुछ अन्य अवश्य ज्ञातव्य विषयों का भी उल्लेख कर दिया गया है। पाठकों को चाहिए कि पूर्वोल्लिखित समस्त संस्कृत तथा हिन्दी वाक्यों का कर्ता, कर्म, विशेष्य, विशेषण, लिङ्ग, पुरुष वचन आदि को ध्यान में रखते हुए, अभ्यास कर ले और दैनिक बोलचाल में इनका व्यवहार करें।

पिछले वाक्यों में केवल कृ धातु से बने शब्दों का ही प्रयोग किया गया है और कर्म के रूप में कार्य शब्द का प्रयोग किया गया है। परन्तु पाठकों को टिप्पणी में उल्लिखित अन्य उदाहरणों के समान और भी अनेक व्यवहारोपयोगी धातुओं तथा उनके साथ तदनुरूप कर्मवाचक पदों को जोड़कर सैकड़ों बनाने चाहिए।

क्त, तव्यत्, शानच् एवं स्यमान प्रत्ययों से बने शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के योग से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

९-भूतकालिक क्त प्रत्ययान्त कृत शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कृतम् अस्ति — उससे काम किया गया है
तेन कार्ये कृते स्तः — उससे काम किये गये हैं
तेन कार्याणि कृतानि सन्ति — उससे काम किया गया है
त्वया कार्यं कृतम् अस्ति — तुमसे काम किया गया है
त्वया कार्ये कृते स्तः — तुम से काम किया गया है
त्वया कार्याणि कृतानि सन्ति — तुम से काम किये गये हैं
मया कार्यं कृतम् अस्ति — मुझ से काम किया गया है
मया कार्ये कृते स्तः — मुझ से काम किये गये हैं
मया कार्याणि कृतानि सन्ति — मुझ से काम किये गये हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कृतम् आसीत् — उससे काम किया गया था
तेन कार्ये कृते आस्ताम् — उससे काम किये गये थे
तेन कार्याणि कृतानि आसन् — उससे काम किया गये थे
त्वया कार्यं कृतम् आसीत् — तुमसे काम किया गया था
त्वया कार्ये कृते आस्ताम् — तुम से काम किया गये थे
त्वया कार्याणि कृतानि आसन् — तुम से काम किये गये थे
मया कार्यं कृतम् आसीत् — मुझ से काम किया गया था
मया कार्ये कृते आस्ताम् — मुझ से काम किये गये थे
मया कार्याणि कृतानि आसन् — मुझ से काम किये गये थे

लिङ् लकार

तेन कार्यं कृतम् स्यात् — उससे काम किया गया हो
तेन कार्ये कृते स्याताम् — उससे काम किये गये हों
तेन कार्याणि कृतानि स्युः — उससे काम किये गये हों
त्वया कार्यं कृतम् स्यात् — तुमसे काम किया गया हो
त्वया कार्ये कृते स्याताम् — तुम से काम किये गये हों
त्वया कार्याणि कृतानि स्युः — तुम से काम किये गये हों
मया कार्यं कृतम् स्यात् — मुझ से काम किया गया हो
मया कार्ये कृते स्यताम् — मुझ से काम किये गये हों
मया कार्याणि कृतानि स्युः — मुझ से काम किये गये हो

लृट् लकार

तेन कार्यं कृतं भविष्यति	उससे काम किया गया होगा
तेन कार्ये कृते भविष्यतः	उससे काम किये गये होंगे
तेन कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति	उससे काम किया गये होंगे
त्वया कार्यं कृतं भविष्यति	तुमसे काम किया गया होगा
त्वया कार्ये कृते भविष्यतः	तुम से काम किया गये होंगे
त्वया कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति	तुम से काम किये गये होंगे
मया कार्यं कृतं भविष्यति	मुझ से काम किया गया होगा
मया कार्ये कृते भविष्यतः	मुझ से काम किये गये होंगे
मया कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति	मुझ से काम किये गये होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कृतम् अभविष्यत्	उससे काम किया गया होता
तेन कार्ये कृते अभविष्यताम्	उससे काम किये गये होते
तेन कार्याणि कृतानि अभविष्यन्	उससे काम किया गये होते
त्वया कार्यं कृतम् अभविष्यत्	तुमसे काम किया गया होता
त्वया कार्ये कृते अभविष्यताम्	तुम से काम किया गये होते
त्वया कार्याणि कृतानि अभविष्यन्	तुम से काम किये गये होते
मया कार्यं कृतम् अभविष्यत्	मुझ से काम किया गया होता
मया कार्ये कृते अभविष्यताम्	मुझ से काम किये गये होते
मया कार्याणि कृतानि अभविष्यन्	मुझ से काम किये गये होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

कर्मवाच्य मे कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रियावाचक पद के लिङ्ग तथा वचन कर्म के अनुसार होते हैं। इसी नियम के अनुसार ऊपर के वाक्यों में 'कार्यं कार्ये कार्याणि' ये जो कर्मवाचक पद हैं उन्हीं के अनुसार "कृतं कृते कृतानि" ये क्रियावाचक पद भी रखे गये है। यदि कर्मवाचक पद स्त्रीलिङ्ग तथा पुल्लिङ्ग होंगे तो क्रियावाचक पद भी क्रमशः पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में "यात्रा कृता, यात्रे कृते, यात्राः कृताः" आदि।

कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है और उसका क्रियापद से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ऊपर के वाक्यों में तृतीया विभक्ति के केवल एकवचन के ही रूप दिये गये हैं। छात्रगण इसके स्थान पर प्रथम पुरुष के अन्य सर्वनाम शब्दों तथा आवश्यकतानुसार द्विवचन तथा बहुवचन का भी प्रयोग कर सकते हैं। यथा—ताभ्यां कार्यं कृतं भविष्यति, तैः कार्यं कृतं भविष्यति इत्यादि।

१०-भूतकालिक क्त प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कारितम् अस्ति	उससे काम कराया गया है
तेन कार्ये कारिते स्तः	उससे काम कराये गये हैं
तेन कार्याणि कारितानि सन्ति	उससे काम कराये गये हैं
त्वया कार्यं कारितम् अस्ति	तुमसे काम कराया गया है
त्वया कार्ये कारिते स्तः	तुम से काम कराये गये है
त्वया कार्याणि कारितानि सन्ति	तुम से काम कराये गये हैं
मया कार्यं कारितम् अस्ति	मुझ से काम कराया गया है
मया कार्ये कारिते स्तः	मुझ से काम कराये गये हैं
मया कार्याणि कारितानि सन्ति	मुझ से काम कराये गये हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कारितम् आसीत्	उससे काम कराया गया था
तेन कार्ये कारिते आस्ताम्	उससे काम कराये गये थे
तेन कार्याणि कारितानि आसन्	उन सब से काम कराये गये थे
त्वया कार्यं कारितम् आसीत्	तुमसे काम कराया गया था
त्वया कार्ये कारिते आस्ताम्	तुम से काम कराये गये थे
त्वया कार्याणि कारितानि आसन्	तुम से काम कराये गये थे
मया कार्यं कारितम् आसीत्	मुझ से काम कराया गया था
मया कार्ये कारिते आस्ताम्	मुझ से काम कराये गये थे
मया कार्याणि कारितानि आसन्	मुझ से काम कराये गये थे

लिङ् लकार

तेन कार्यं कारितं स्यात्	उससे काम कराया गया हो
तेन कार्ये कारिते स्याताम्	उससे काम कराये गये हों
तेन कार्याणि कारितानि स्युः	उससे काम कराये गये हों
त्वया कार्यं कारितं स्यात्	तुमसे काम कराया गया हो
त्वया कार्ये कारिते स्याताम्	तुम से काम कराये गये हों
त्वया कार्याणि कारितानि स्युः	तुम से काम कराये गये हों
मया कार्यं कारितम् स्यात्	मुझ से काम कराया गया हो
मया कार्ये कारिते स्यताम्	मुझ से काम कराये गये हों
मया कार्याणि कारितानि स्युः	मुझ से काम कराये गये हों

लृट् लकार

तेन कार्यं कारितं भाविष्यति	उससे काम कराया गया होगा
तेन कार्ये कारिते भविष्यतः	उससे काम कराये गये होंगे
तेन कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति	उससे काम कराये गये होंगे
त्वया कार्यं कारितं भविष्यति	तुमसे काम कराया गया होगा
त्वया कार्ये कारिते भविष्यतः	तुम से काम कराये गये होंगे
त्वया कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति	तुम से काम कराये गये होंगे
मया कार्यं कारितं भविष्यति	मुझ से काम कराया गया होगा
मया कार्ये कारिते भविष्यतः	मुझ से काम कराये गये होंगे
मया कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति	मुझ से काम कराये गये होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कारितम् अभविष्यत्	उससे काम कराया गया होता
तेन कार्ये कारिते अभविष्यताम्	उससे काम कराये गये होते
तेन कार्याणि कारितानि अभविष्यन्	उससे काम कराये गये होते
त्वया कार्यं कारितम् अभविष्यत्	तुमसे काम कराया गया होता
त्वया कार्ये कारिते अभविष्यताम्	तुम से काम कराये गये होते
त्वया कार्याणि कारितानि अभविष्यन्	तुम से काम कराये गये होते
मया कार्यं कारितम् अभविष्यत्	मुझ से काम कराया गया होता
मया कार्ये कारिते अभविष्यताम्	मुझ से काम कराये गये होते
मया कार्याणि कारितानि अभविष्यन्	मुझ से काम कराये गये होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

पिछले पृष्ठ में "कृत" शब्द के साथ बने हुए क्रिया रूपों एवं वाक्यों के सम्बन्ध में जो कर्मवाच्य से सम्बन्धित नियम बतलाये गये हैं वे ही नियम "कारित" शब्द के साथ भी लागू होंगे।

कारित शब्द के समान ही पाठित (पढ़ाया गया) लेखित (लिखाया गया) दर्शित (दिखाया गया) श्रावित (सुनाया गया) आदि शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिए। विशेष शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप में होंगे पुस्तकं पठितं अस्ति, गीतानि श्रावितानि सन्ति, चित्रं दर्शितम् आसीत्, पत्राणि लेखितानि अभविष्यन् इत्यादि।

११-विध्यर्थक तव्यत् प्रत्ययान्त कर्तव्य शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कर्तव्यम् अस्ति	उसे काम करना है
तेन कार्ये कर्तव्ये स्तः	उसे काम करने हैं
तेन कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति	उसे काम करने हैं
त्वया कार्यं कर्तव्यम् अस्ति	तुम्हें काम करना है
त्वया कार्ये कर्तव्ये स्तः	तुम्हें काम करने हैं
त्वया कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति	तुम्हें काम करने हैं
मया कार्यं कर्तव्यम् अस्ति	मुझे काम करना है
मया कार्ये कर्तव्ये स्तः	मुझे काम करने हैं
मया कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति	मुझे काम करने हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कर्तव्यम् आसीत्	उसे काम करना था
तेन कार्ये कर्तव्ये आस्ताम्	उसे काम करने थें
तेन कार्याणि कर्तव्यानि आसन्	उसे काम करने थें
त्वया कार्यं कर्तव्यम् आसीत्	तुम्हें काम करना था
त्वया कार्ये कर्तव्ये आस्ताम्	तुम्हें काम करने थें
त्वया कार्याणि कर्तव्यानि आसन्	तुम्हें काम करने थें
मया कार्यं कर्तव्यम् आसीत्	मुझे काम करना था
मया कार्ये कर्तव्ये आस्ताम्	मुझे काम करने थें
मया कार्याणि कर्तव्यानि आसन्	मुझे काम करने थें

लिङ् लकार

तेन कार्यं कर्तव्यं स्यात्	उसे काम करना हो
तेन कार्ये कर्तव्ये स्याताम्	उसे काम करने हों
तेन कार्याणि कर्तव्यानि स्युः	उसे काम करने हों
त्वया कार्यं कर्तव्यं स्यात्	तुम्हें काम करना हो
त्वया कार्ये कर्तव्ये स्याताम्	तुम्हें काम करने हों
त्वया कार्याणि कर्तव्यानि स्युः	तुम्हें काम करने हों
मया कार्यं कर्तव्यं स्यात्	मुझे काम करना हो
मया कार्ये कर्तव्ये स्याताम्	मुझे काम करने हों
मया कार्याणि कर्तव्यानि स्युः	मुझे काम करने हों

लृट् लकार

तेन कार्यं कर्तव्यम् भविष्यति	उसे काम करना होगा
तेन कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः	उसे काम करने होंगे
तेन कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति	उसे काम करने होंगे
त्वया कार्यं कर्तव्यं भविष्यति	तुम्हें काम करना होगा
त्वया कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः	तुम्हें काम करने होंगे
त्वया कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति	तुम्हें काम करने होंगे
मया कार्यं कर्तव्यं भविष्यति	मुझे काम करना होगा
मया कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः	मुझे काम करने होंगे
मया कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति	मुझे काम करने होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्	उसे काम करना होता
तेन कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम्	उसे काम करने होते
तेन कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्यन्	उसे काम करने होते
त्वया कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्	तुम्हें काम करना होता
त्वया कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम्	तुम्हें काम करने होते
त्वया कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्यन्	तुम्हें काम करने होते
मया कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्	मुझे काम करना होता
मया कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम्	मुझे काम करने होते
मया कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्यन्	मुझे काम करने होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-ऊपर के वाक्यों में कर्तव्य शब्द, कार्य शब्द का विशेषण है अतः कार्य शब्द के समान ही कर्तव्य शब्द का नपुंसक लिङ्ग में प्रयोग किया गया है। परन्तु जब कार्य शब्द के स्थान पर अन्य कोई पुलिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग शब्द होगा तो कर्तव्य शब्द का भी तदनुसार ही लिङ्ग बदल जायगा। यथा—पाठः कर्तव्यः अस्ति, पाठौ कर्तव्यौ स्तः, पाठाः कर्तव्याः सन्ति आदि पुलिङ्ग में तथा यात्रा कर्तव्या अस्ति, यात्रे कर्तव्ये स्तः, यात्राः कर्तव्याः सन्ति आदि स्त्रीलिङ्ग में वाक्य बनेंगे।

२-कर्ता के वाचक सभी पदों में एकवचन के ही रूप दिये गये हैं। उनके स्थान पर द्विवचन तथा बहुवचन का भी प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही उक्त सर्वनामों के स्थान पर अन्य सर्वनामों का भी प्रयोग करना चाहिए।

३-कर्तव्य शब्द के साथ जब भवति क्रिया का प्रयोग होता है तो-उसका "उसे काम करना होता है, या करना पड़ता है" ऐसा अर्थ करना चाहिए। इसी प्रकार अन्य लकारों में भी प्रयोग करना चाहिए।

१२-तव्यत् प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कारयितव्य से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कारयितव्यम् अस्ति	उसे काम कराना है
तेन कार्ये कारयितव्ये स्तः	उसे काम कराने हैं
तेन कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति	उसे काम कराने हैं
त्वया कार्यं कारयितव्यम् अस्ति	तुम्हें काम कराना है
त्वया कार्ये कारयितव्ये स्तः	तुम्हें काम कराने हैं
त्वया कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति	तुम्हें काम कराने हैं
मया कार्यं कर्तकारयितव्यम् अस्ति	मुझे काम कराना है
मया कार्ये कारयितव्ये स्तः	मुझे काम कराने हैं
मया कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति	मुझे काम कराने हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कारयितव्यम् आसीत्	उसे काम कराना था
तेन कार्ये कारयितव्ये आस्ताम्	उसे काम कराने थे
तेन कार्याणि कारयितव्यानि आसन्	उसे काम कराने थे
त्वया कार्यं कारयितव्यम् आसीत्	तुम्हें काम कराना था
त्वया कार्ये कारयितव्ये आस्ताम्	तुम्हें काम कराने थे
त्वया कार्याणि कारयितव्यानि आसन्	तुम्हें काम कराने थे
मया कार्यं कारयितव्यम् आसीत्	मुझे काम कराना था
मया कार्ये कारयितव्ये आस्ताम्	मुझे काम कराने थे
मया कार्याणि कारयितव्यानि आसन्	मुझे काम कराने थे

लिङ् लकार

तेन कार्यं कारयितव्यं स्यात्	उसे काम कराना हो
तेन कार्ये कारयितव्ये स्याताम्	उसे काम कराने हों
तेन कार्याणि कारयितव्यानि स्युः	उसे काम कराने हों
त्वया कार्यं कारयितव्यं स्यात्	तुम्हें काम कराना हो
त्वया कार्ये कारयितव्ये स्याताम्	तुम्हें काम कराने हों
त्वया कार्याणि कारयितव्यानि स्युः	तुम्हें काम कराने हों
मया कार्यं कारयितव्यं स्यात्	मुझे काम कराना हो
मया कार्ये कारयितव्ये स्याताम्	मुझे काम कराने हों
मया कार्याणि कारयितव्यानि स्युः	मुझे काम कराने हों

लृट् लकार

तेन कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	उससे काम कराया जा रहा होगा
तेन कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	उससे काम कराये जा रहे होंगे
तेन कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	उससे काम कराये जा रहे होंगे
त्वया कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	तुम से काम कराया जा रहा होगा
त्वया कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	तुम से काम कराये जा रहे होंगे
त्वया कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम कराये जा रहे होंगे
मया कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	मुझ से काम कराया जा रहा होगा
मया कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	मुझ से काम कराये जा रहे होंगे
मया कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम कराये जा रहे होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	उससे काम कराया जा रहा होता
तेन कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम्	उससे काम कराये जा रहे होते
तेन कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	उससे काम कराये जा रहे होते
त्वया कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम कराया जा रहा होता
त्वया कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम कराये जा रहे होते
त्वया कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम कराये जा रहे होते
मया कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम कराया जा रहा होता
मया कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम्	मुझ से काम कराये जा रहे होते
मया कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	मुझ से काम कराये जा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कार्यमाण के समान ही पाठ्यमान (पढ़ाया जा रहा) लेख्यमान (लिखाया जा रहा) दर्श्यमाण (दिखाया जा रहा) श्राव्यमाण (सुनाया जा रहा) ज्वाल्यमान (जलाया जा रहा) निर्वाप्यमाण (बुझाया जा रहा) स्थाप्यमान (रखाया जा रहा) आदि शब्दों के भी प्रयोग करने चाहिए।

२-अकारान्त होने के कारण उपर्युक्त शब्दों के पुलिङ्ग के रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या के समान चलेगें। विशेष शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे—

ग्रन्थः पाठ्यमानः अस्ति, कौमुदी पाठ्यमाना अस्ति, संस्कृतं पाठ्यमानम् अस्ति। श्लोकः लेख्यमानः अस्ति, पत्रिका लेख्यमाना अस्ति, पत्रं लेख्यमानम् अस्ति। कथा श्राव्यमाणा अस्ति, दीपकः ज्वाल्यमानः अस्ति, निर्वाप्यमाणः अस्ति इत्यादि।

१३ -शानच् प्रत्ययान्त क्रियमाण शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	उससे काम किया जा रहा है
तेन कार्ये क्रियमाणे स्तः	उससे काम किये जा रहे हैं
तेन कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	उससे काम किये जा रहे हैं
त्वया कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	तुम से काम किया जा रहा है
त्वया कार्ये क्रियमाणे स्तः	तुम से काम किये जा रहे हैं
त्वया कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	तुम से काम किये जा रहे हैं
मया कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	मुझ से काम किया जा रहा है
मया कार्ये क्रियमाणे स्तः	मुझ से काम किये जा रहे हैं
मया कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	मुझ से काम किये जा रहे हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	उससे काम किया जा रहा था
तेन कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	उससे काम किये जा रहे थें
तेन कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	उससे काम किये जा रहे थें
त्वया कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	तुम से काम किया जा रहा था
त्वया कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	तुम से काम किये जा रहे थें
त्वया कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	तुम से काम किये जा रहे थें
मया कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	मुझ से काम किया जा रहा था
मया कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	मुझ से काम किये जा रहे थें
मया कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	मुझ से काम किये जा रहे थें

लिङ् लकार

तेन कार्यं क्रियमाणं स्यात्	उससे काम किया जा रहा हो
तेन कार्ये क्रियमाणे स्याताम्	उससे काम किये जा रहे हों
तेन कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	उससे [illegible]म किये जा रहे हों
त्वया कार्यं क्रियमाणं स्यात्	तुम से काम किया जा रहा हो
त्वया कार्ये क्रियमाणे स्याताम्	तुम से काम किये जा रहे हों
त्वया कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	तुम से काम किये जा रहे हों
मया कार्यं क्रियमाणं स्यात्	मुझ से काम किया जा रहा हो
मया कार्ये क्रियमाणे स्याताम्	मुझ से काम किये जा रहे हों
मया कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	मुझ से काम किये जा रहे हों

लृट् लकार

तेन कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	उससे काम किया जा रहा होगा
तेन कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	उससे काम किये जा रहे होंगे
तेन कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	उससे काम किये जा रहे होंगे
त्वया कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	तुम से काम किया जा रहा होगा
त्वया कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	तुम से काम किये जा रहे होंगे
त्वया कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम किये जा रहे होंगे
मया कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	मुझ से काम किया जा रहा होगा
मया कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	मुझ से काम किये जा रहे होंगे
मया कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम किये जा रहे होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	उससे काम किया जा रहा होता
तेन कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम्	उससे काम किये जा रहे होते
तेन कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्यन्	उससे काम किये जा रहे होते
त्वया कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम किया जा रहा होता
त्वया कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम किये जा रहे होते
त्वया कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम किये जा रहे होते
मया कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम किया जा रहा होता
मया कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम्	मुझ से काम किये जा रहे होते
मया कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्यन्	मुझ से काम किये जा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-क्रियमाण के समान ही पठ्यमान (पढ़ा जा रहा) लिख्यमान (लिखा जा रहा) कथ्यमान (कहा जा रहा) श्रूयमाण (सुना जा रहा) दीयमान (दिया जा रहा) दृश्यमान (देखा जा रहा) आदि शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिए। यथा—पुस्तकं पठ्यमानम् अस्ति, पुस्तके पठ्यमाने स्तः, पुस्तकानि पठ्यमानानि सन्ति। पत्रं लिख्यमानम् अस्ति, पत्रे लिख्यमाने स्तः, पत्राणि लिख्यमानानि सन्ति इत्यादि।

२-अकारान्त होने के कारण इन के रूप पूर्ववत् पुलिङ्ग में बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में विद्या शब्द के समान होंगे।

३-सन्नन्त चिकीर्ष्यमाण (करना चाहा जा रहा) आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार चलेगें तथा विशेष्य शब्दों के साथ इन के प्रयोग निम्नलिखित रूप में होंगे—कार्यं चिकीर्ष्यमाणम् अस्ति, कार्ये चिकीर्ष्यमाणे स्तः, कार्याणि चिकीर्ष्यमाणानि सन्ति।

१६-स्यमान प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कारयिष्यमाण से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति — उससे काम काम कराया जाने वाला है
तेन कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः — उससे काम काम कराये जाने वाले हैं
तेन कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति — उससे काम काम कराये जाने वाले हैं
त्वया कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति — तुम से काम कराया जाने वाला है
त्वया कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः — तुम से काम कराये जाने वाले हैं
त्वया कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति — तुम से काम कराये जाने वाले है
मया कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति — मुझ से काम कराया जाने वाला है
मया कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः — मुझ से काम कराये जाने वाले हैं
मया कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति — मुझ से काम कराये जाने वाले हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कारयिमाणम् आसीत् — उससे काम किया जाने वाला था
तेन कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम् — उससे काम काम किये जाने वाले थें
तेन कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन् — उससे काम काम किये जाने वाले थें
त्वया कार्यं कारयिष्यमाणम् आसीत् — तुमसे काम किया जाने वाला हो
त्वया कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम् — तुम से काम काम किये जाने वाले थें
त्वया कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन् — तुम से काम काम किये जाने वाले थें
मया कार्यं कारयिष्यमाणम् आसीत् — मुझसे काम काम किया जाने वाला था
मया कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम् — मुझसे काम काम किये जाने वाले थें
मया कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन् — मुझसे काम किये जाने वाले थें

लिङ् लकार

तेन कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात् — उससे काम कराया जाने वाला हो
तेन कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम् — उससे काम कराये जाने वाले हों
तेन कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः — उससे काम कराये जाने वाले हों
त्वया कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात् — तुम से काम कराया जाने वाला हो
त्वया कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम् — तुम से काम कराये जाने वाले हों
त्वया कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः — तुम से काम कराये जाने वाले हों
मया कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात् — मुझ से काम कराया जाने वाला हो
मया कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम् — मुझ से काम कराये जाने वाले हों
मया कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः — मुझ से काम कराये जाने वाले हों

लृट् लकार

तेन कार्यं कारयितव्यम् भविष्यति	उसे काम कराना होगा
तेन कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः	उसे काम कराने होंगे
तेन कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति	उसे काम कराने होंगे
त्वया कार्यं कारयितव्यं भविष्यति	तुम्हें काम कराना होगा
त्वया कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः	तुम्हें काम कराने होंगे
त्वया कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति	तुम्हें काम कराने होंगे
मया कार्यं कारयितव्यं भविष्यति	मुझे काम कराना होगा
मया कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः	मुझे काम कराने होंगे
मया कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति	मुझे काम कराने होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्	उसे काम कराना होता
तेन कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम्	उसे काम कराने होते
तेन कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्	उसे काम कराने होते
त्वया कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्	तुम्हें काम कराना होता
त्वया कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम्	तुम्हें काम कराने होते
त्वया कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्	तुम्हें काम कराने होते
मया कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्	मुझे काम कराना होता
मया कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम्	मुझे काम कराने होते
मया कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्	मुझे काम कराने होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कारयितव्य के समान ही पाठयितव्य, लेखयितव्य, स्थापयितव्य, निवेदयितव्य, ज्ञापयितव्य, दर्शयितव्य, सूचयितव्य, प्रेषयितव्य आदि शब्दों के रूप चलेंगे।

२-अकारान्त होने के कारण इनके पुलिङ्ग रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग रूप विद्या शब्द के समान चलेंगे। यथा—कारयितव्यः कारयितव्यौ, कारयितव्याः (पुं०) कारयितव्या, कारयितव्ये, कारयितव्याः (स्त्री०) कारयितव्यं कारयितव्ये कारयितव्यानि (नपुं०)।

३-पाठयितव्य आदि शब्दों में पाठ, ग्रन्थ, काव्य, लेख, सूचना, कविता वस्तु आदि शब्दों को लगा कर और भी वाक्य बनाने चाहिए।

४-कर्तृवाचक सर्वनाम शब्दों के एकवचन के स्थान पर उनके द्विवचन तथा बहुवचन के रूपों का भी प्रयोग करना चाहिए।

५-कर्तव्य शब्द के समान ही कारयितव्य शब्द के साथ भी भू धातु का प्रयोग करना चाहिए तथा उसका अर्थ—कराना होता है, कराना पड़ता है, ऐसा समझना चाहिए।

१५-भविष्यत्कालिक स्यमान प्रत्ययान्त करिष्यमाण शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति — उससे काम काम किया जाने वाला है
तेन कार्ये करिष्यमाणे स्तः — उससे काम काम किये जाने वाले हैं
तेन कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति — उससे काम काम किये जाने वाले हैं
त्वया कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति — तुम से काम किया जाने वाला है
त्वया कार्ये करिष्यमाणे स्तः — तुम से काम किये जाने वाले हैं
त्वया कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति — तुम से काम किये जाने वाले हैं
मया कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति — मुझ से काम किया जाने वाला है
मया कार्ये करिष्यमाणे स्तः — मुझ से काम किये जाने वाले हैं
मया कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति — मुझ से काम किये जाने वाले हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं करिष्यमाणम् आसीत् — उससे काम किया जाने वाला था
तेन कार्ये करिष्यमाणे आस्ताम् — उससे काम काम किये जाने वाले थें
तेन कार्याणि करिष्यमाणानि आसन् — उससे काम काम किये जाने वाले थें
त्वया कार्यं करिष्यमाणम् आसीत् — तुमसे काम किया जाने वाला हो
त्वया कार्ये करिष्यमाणे आस्ताम् — तुम से काम काम किये जाने वाले थें
त्वया कार्याणि करिष्यमाणानि आसन् — तुम से काम काम किये जाने वाले थें
मया कार्यं करिष्यमाणम् आसीत् — मुझसे काम काम किया जाने वाला था
मया कार्ये करिष्यमाणे आस्ताम् — मुझसे काम काम किये जाने वाले थें
मया कार्याणि करिष्यमाणानि आसन् — मुझसे काम किये जाने वाले थें

लिङ् लकार

तेन कार्यं करिष्यमाणं स्यात् — उससे काम किया जाने वाला हो
तेन कार्ये करिष्यमाणे स्याताम् — उससे काम किये जाने वाले हों
तेन कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः — उससे काम किये जाने वाले हों
त्वया कार्यं करिष्यमाणं स्यात् — तुम से काम किये जाने वाला हो
त्वया कार्ये करिष्यमाणे स्याताम् — तुम से काम किये जाने वाले हों
त्वया कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः — तुम से काम किये जाने वाले हों
मया कार्यं करिष्यमाणं स्यात् — मुझ से काम किये जाने वाला हो
मया कार्ये करिष्यमाणे स्याताम् — मुझ से काम किये जाने वाले हों
मया कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः — मुझ से काम किये जाने वाले हों

लृट् लकार

तेन कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	उससे काम किया जाने वाला होगा
तेन कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	उससे काम किये जाने वाले होंगे
तेन कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	उससे काम किये जाने वाले होंगे
त्वया कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	तुमसे काम किया जाने वाला होगा
त्वया कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	तुमसे काम किये जाने वाले होंगे
त्वया कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	तुमसे काम किये जाने वाले होंगे
मया कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	मुझसे काम किया जाने वाला होगा
मया कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	मुझसे काम किये जाने वाले होंगे
मया कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझसे काम किये जाने वाले होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	उससे काम किया जाने वाला होता
तेन कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम्	उससे काम किये जाने वाले होते
तेन कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	उससे काम किये जाने वाले होते
त्वया कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	तुमसे काम किया जाने वाला होता
त्वया कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम्	तुमसे काम किये जाने वाले होते
त्वया कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	तुमसे काम किये जाने वाले होते
मया कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	मुझसे काम किया जाने वाला होता
मया कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम्	मुझसे काम किये जाने वाले होते
मया कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	मुझसे काम किये जाने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-करिष्यमाण शब्द के समान ही पठिष्यमाण (पढ़ा जाने वाला) लेखिष्यमाण (लिखा जाने वाला) वक्ष्यमाण (कहा जाने वाला) श्रोष्यमाण (सुना जाने वाला) द्रक्ष्यमाण (देखा जाने वाला) प्रारप्स्यमान (प्रारम्भ किया जाने वाला) आदि शब्दों का भी तदनुरूप संज्ञाशब्दों के साथ प्रयोग करना चाहिए।

२-अकारान्त होने के कारण इन शब्दों के पुलिङ्ग के रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या शब्द के समान चलेंगे। विशेष्य शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे।

३-किं पठिष्यमाणम् अस्ति? पत्रं कदा लेखिष्यमाणम् अस्ति? अद्य पाठः प्रारप्स्यमाणः अस्ति, श्वः चलचित्रं द्रक्ष्यमाणम् अस्ति, अद्य क्रीडासमाचारः श्रोष्यमाणः अस्ति इत्यादि।

१४-शानच् प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कार्यमाण से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन कार्यं कार्यमाणम् अस्ति	उससे काम कराया जा रहा है
तेन कार्ये कार्यमाणे स्तः	उससे काम कराये जा रहे हैं
तेन कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति	उससे काम कराये जा रहे हैं
त्वया कार्यं कार्यमाणम् अस्ति	तुम से काम कराया जा रहा है
त्वया कार्ये कार्यमाणे स्तः	तुम से काम कराये जा रहे है
त्वया कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति	तुम से काम कराये जा रहे हैं
मया कार्यं कार्यमाणम् अस्ति	मुझ से काम कराया जा रहा है
मया कार्ये कार्यमाणे स्तः	मुझ से काम कराये जा रहे हैं
मया कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति	मुझ से काम कराये जा रहे हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कार्यमाणम् आसीत्	उससे काम कराया जा रहा था
तेन कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्	उससे काम कराये जा रहे थे
तेन कार्याणि कार्यमाणानि आसन्	उससे काम कराये जा रहे थे
त्वया कार्यं कार्यमाणम् आसीत्	तुम से काम कराया जा रहा था
त्वया कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्	तुम से काम कराये जा रहे थे
त्वया कार्याणि कार्यमाणानि आसन्	तुम से काम कराये जा रहे थे
मया कार्यं कार्यमाणम् आसीत्	मुझ से काम कराया जा रहा था
मया कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्	मुझ से काम कराये जा रहे थे
मया कार्याणि कार्यमाणानि आसन्	मुझ से काम कराये जा रहे थे

लिङ् लकार

तेन कार्यं कार्यमाणं स्यात्	उससे काम कराया जा रहा हो
तेन कार्ये कार्यमाणे स्याताम्	उससे काम कराये जा रहे हों
तेन कार्याणि कार्यमाणानि स्युः	उससे काम कराये जा रहे हों
त्वया कार्यं कार्यमाणं स्यात्	तुम से काम कराया जा रहा हो
त्वया कार्ये कार्यमाणे स्याताम्	तुम से काम कराये जा रहे हों
त्वया कार्याणि कार्यमाणानि स्युः	तुम से काम कराये जा रहे हों
मया कार्यं कार्यमाणं स्यात्	मुझ से काम कराया जा रहा हो
मया कार्ये कार्यमाणे स्याताम्	मुझ से काम कराये जा रहे हों
मया कार्याणि कार्यमाणानि स्युः	मुझ से काम कराये जा रहे हों

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुम् एषिष्यति	वह काम करना चाहेगा
तौ कार्यं कर्तुम् एषिष्यतः	वे दोनों काम करना चाहेंगे
ते कार्यं कर्तुम् एषिष्यन्ति	वे सब काम करना चाहेंगे
त्वं कार्यं कर्तुम् एषिष्यसि	तुम काम करना चाहोगे
युवां कार्यं कर्तुम् एषिष्यथः	तुम दोनों काम करना चाहोगे
यूयं कार्यं कर्तुम् एषिष्यथ	तुम लोग काम करना चाहोगे
अहं कार्यं कर्तुम् एषिष्यामि	मैं काम करना चाहूँगा
आवां कार्यं कर्तुम् एषिष्यावः	हम दोनों काम करना चाहेंगे
वयं कार्यं कर्तुम् एषिष्यामः	हम लोग काम करना चाहेंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यत्	वह काम करना चाहता
तौ कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यताम्	वे दोनों काम करना चाहते
ते कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यन्	वे सब काम करना चाहते
त्वं कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यः	तुम काम करना चाहते
युवां कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यतम्	तुम दोनों काम करना चाहते
यूयं कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यत	तुम लोग काम करना चाहते
अहं कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यम्	मैं काम करना चाहता
आवां कार्यं कर्तुम् ऐषिष्याव	हम दोनों काम करना चाहते
वयं कार्यं कर्तुम् ऐषिष्याम	हम लोग काम करना चाहते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-'इच्छति' के स्थान पर सभी इच्छार्थक अन्य क्रियाओं का भी प्रयोग करना चाहिए। यथा—अभिलषति, कामयते, वाञ्छति, ईहते, समीहते इत्यादि।

२-कर्तुं के स्थान पर "कारयितुं" इस प्रेरणार्थक पद का भी प्रयोग करना चाहिए यथा—सः कार्यं कारयितुम् इच्छति—वह काम कराना चाहता है।

३-कर्तुं, कारयितु के समान ही पठितुं, पाठयितुं, लेखितुं, लेखयितुं, श्रोतुं, श्रावयितुं, द्रष्टुं, दर्शयितुम् आदि पदों का भी इष् धातु के साथ प्रयोग करना चाहिए। यथा—

सः पाठं पठितुं, पाठयितुम् इच्छति	वह पाठ पढ़ना, पढ़ाना चाहता है
सः लेखं लिखितुं, लेखयितुम् इच्छति	वह लेख लिखना, लिखाना चाहता है
सः गीतं श्रोतुं, श्रावयितुम् इच्छति	वह गीत सुनना, सुनाना चाहता है
सः दृश्यं द्रष्टुं, दर्शयितुम् इच्छति	वह दृश्य देखना, दिखाना चाहता है

तीन आवश्यक सूचनायें

१-पिछले कृदन्त प्रकरण में कुर्वत् शब्द को छोड़कर शेष सभी कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के साथ केवल अस् धातु का ही प्रयोग किया गया है, भू धातु का प्रयोग नहीं किया गया है। परन्तु यदि क्रिया में निरन्तरता का बोध कराना हो तो उसके स्थान पर सभी क्रियापदों में भू एवं स्था धातु का प्रयोग करना चाहिए तथा अस् या भू धातु के लगाने से जो अर्थ एवं अभिप्राय में भेद होता है उस पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य नीचे दिये जा रहे हैं—

कर्तृवाच्य के रूप

सः कार्यं कुर्वन् अस्ति	वह काम कर रहा है
सः कार्यं कुर्वन् भवति	वह काम कर रहा होता है, करता रहता है
सः कार्यं कारयन् अस्ति	वह काम करा रहा है
सः कार्यं कारयन् भवति	वह काम करा रहा होता है, कराता रहता है
सः कार्यं करिष्यन् अस्ति	वह काम करने वाला है
सः कार्यं करिष्यन् भवति	वह काम करने वाला होता है, रहता है
सः कार्यं कृतवान् अस्ति	उसने काम किया है
सः कार्यं कृतवान् भवति	वह काम किया होता है, रहता है
सः कार्यं चिकीर्षन् अस्ति	वह काम करना चाह रहा है
सः कार्यं चिकीर्षन् भवति	वह काम करना चाहता रहता है

कर्मवाच्य के रूप

तेन कार्यं कर्तव्यम् अस्ति	उसे काम करना है
तेन कार्यं कर्तव्यं भवति	उसे काम करना होता है, पड़ता है
तेन कार्यं कारयितव्यम् अस्ति	उसे काम कराना है
तेन कार्यं कारयितव्यं भवति	उसे काम करना होता है, पड़ता है
तेन कार्यं कृतम् अस्ति	उससे काम किया गया है
तेन कार्यं कृतं भवति	उससे काम किया गया होता है
तेन कार्यं कारितम् अस्ति	उससे काम कराया गया है
तेन कार्यं कारितं भवति	उससे काम कराया गया होता है
तेन कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	उससे काम किया जा रहा है
तेन कार्यं क्रियमाणं भवति	उससे काम किया जा रहा होता है
तेन कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति	उससे काम किया जाने वाला है
तेन कार्यं करिष्यमाणं भवति	उससे काम किया जाने वाला होता है

अन्य ज्ञातव्य विषय

२-ऊपर के वाक्यों में केवल लट् लकार का ही प्रयोग किया गया है, इसी प्रकार अन्य लकारों में भी अस् एवं भू का अलग-अलग प्रयोग कर अलग-अलग अर्थ समझने-समझाने का अभ्यास कर लेना चाहिए।

३-ऊपर के वाक्यों में केवल कृ धातु का ही प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार अन्य धातुओं का भी प्रयोग करना चाहिए। यथा—सः पाठं पठन् अस्ति। सः पाठं पठन् भवति। तेन पाठः पठितव्यः अस्ति, तेन पाठः पठितव्यः भवति इत्यादि।

निमित्तार्थक तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ इष्, शक्, ज्ञा, दा, लभ्, लग् आ-या धातुओं के योग से बनने वाले क्रियारूपों के उदाहरण

१९-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ ज्ञा धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुं जानाति	वह काम करना जानता है
तौ कार्यं कर्तुं जानीतः	वे दोनों काम करना जानते हैं
ते कार्यं कर्तुं जानन्ति	वे लोग काम करना जानते हैं
त्वं कार्यं कर्तुं जानासि	तुम काम करना जानते हो
युवां कार्यं कर्तुं जानीथः	तुम दोनों काम करना जानते हो
यूयं कार्यं कर्तुं जानीथ	तुम लोग काम करना जानते हो
अहं कार्यं कर्तुं जानामि	मैं काम करना जानता हूँ
आवां कार्यं कर्तुं जानीवः	हम दोनों काम करना जानते हैं
वयं कार्यं कर्तुं जानीमः	हम लोग काम करना जानते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अजानात्	उसने काम करना जाना
तौ कार्यं कर्तुम् अजानीताम्	उन दोनों ने काम करना जाने
ते कार्यं कर्तुम् अजानन्	उन लोगों ने काम करना जाने
त्वं कार्यं कर्तुम् अजानाः	तुमने काम करना जाना
युवां कार्यं कर्तुम् अजानीतम्	तुम दोनों ने काम करना जाना
यूयं कार्यं कर्तुम् अजानीत	तुम लोगों ने काम करना जाना
अहं कार्यं कर्तुम् अजानाम्	मैंने काम करना जाना
आवां कार्यं कर्तुम् अजानीव	हम दोनों ने काम करना जाना
वयं कार्यं कर्तुम् अजानीम	हम लोगों ने काम करना जाना

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुं जानीयात्	वह काम करना जाने
तौ कार्यं कर्तुं जानीयाताम्	वे दोनों काम करना जानें
ते कार्यं कर्तुं जानीयुः	वे लोग काम करना जानें
त्वं कार्यं कर्तुं जानीथाः	तुम काम करना जानो
युवां कार्यं कर्तुं जानीयातम्	तुम दोनों काम करना जानो
यूयं कार्यं कर्तुं जानीयात	तुम लोग काम करना जानो
अहं कार्यं कर्तुं जानीयाम्	मैं काम करना जानूँ
आवां कार्यं कर्तुं जानीयाव	हम दोनों काम करना जानें
वयं कार्यं कर्तुं जानीयाम	हम लोग काम करना जानें

लृट् लकार

तेन कार्यं कारयिष्यमाणं भविष्यति	उससे काम किया जाने वाला होगा
तेन कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	उससे काम किये जाने वाले होंगे
तेन कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	उससे काम किये जाने वाले होंगे
त्वया कार्यं कारयिष्यमाणं भविष्यति	तुमसे काम किया जाने वाला होगा
त्वया कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	तुमसे काम किये जाने वाले होंगे
त्वया कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	तुमसे काम किये जाने वाले होंगे
मया कार्यं कारयिष्यमाणं भविष्यति	मुझसे काम किया जाने वाला होगा
मया कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	मुझसे काम किये जाने वाले होंगे
मया कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझसे काम किये जान वाले होंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कारयिष्यमाणम अभविष्यत्	उससे काम कराया जाने वाला होता
तेन कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम्	उससे काम कराये जाने वाले होते
तेन कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	उससे काम कराये जाने वाले होते
त्वया कार्यं कारयिष्यमाणम् अभविष्यत्	तुमसे काम कराया जाने वाला होता
त्वया कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम्	तुमसे काम कराये जाने वाले होते
त्वया कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	तुमसे काम कराये जाने वाले होते
मया कार्यं कारयिष्यमाणम् अभविष्यत्	मुझसे काम कराया जाने वाला होता
मया कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम्	मुझसे काम कराये जाने वाले होते
मया कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	मुझसे काम कराये जाने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कारयिष्यमाण के समान ही पाठयिष्यमाण (पढ़ाया जाने वाला) लेखयिष्यमाण (लिखाया जाने वाला) प्रापयिष्यमाण (पहुँचाया जाने वाला) समापयिष्यमाण (समाप्त कराया जाने वाला) उत्थापयिष्यमाण (उठाया जाने वाला) प्रसारयिष्यमाण (पसारा जाने वाला) आदि शब्दों से भी तदनुरूप संज्ञा शब्द के साथ वाक्य बनाने चाहिए।

२-अकारान्त होने के कारण इन शब्दों के भी पुलिङ्ग के रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या शब्द के समान चलेंगे। विशेष्य शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे—

वेदः पाठयिष्यमाणः अस्ति, गीता पाठयिष्यमाणा अस्ति, रघुवंशं पाठयिष्यमाणम् अस्ति। अनुवादः लेखयिष्यमाणः अस्ति, कविता लेखयिष्यमाणा अस्ति, पत्रं लेखयिष्यमाणम् अस्ति।

१८-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ शक् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुं शक्नोति	वह काम कर सकता है
तौ कार्यं कर्तुं शक्नुतः	वे दोनों काम कर सकते है
ते कार्यं कर्तुं शक्नुवन्ति	वे लोग काम कर सकते हैं
त्वं कार्यं कर्तुं शक्नोसि	तुम काम कर सकते हो
युवां कार्यं कर्तुं शक्नुथः	तुम दोनों काम कर सकते हो
यूयं कार्यं कर्तुं शक्नुथ	तुम लोगों काम कर सकते हो
अहं कार्यं कर्तुं शक्नोमि	मैं काम कर सकता हूँ
आवां कार्यं कर्तुं शक्नुवः	हम दोनों काम कर सकते हैं
वयं कार्यं कर्तुं शक्नुमः	हम लोगों काम कर सकते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अशक्नोत्	वह काम कर सका
तौ कार्यं कर्तुम् अशक्नुताम्	वे दोनों काम कर सके
ते कार्यं कर्तुम् अशक्नुवन्	वे लोग काम कर सके
त्वं कार्यं कर्तुम् अशक्नोः	तुम काम कर सके
युवां कार्यं कर्तुम् अशक्नुतम्	तुम दोनों काम कर सके
यूयं कार्यं कर्तुम् अशक्नुत	तुम लोग काम कर सके
अहं कार्यं कर्तुम् अशक्नवम्	मैं काम कर सका
आवां कार्यं कर्तुम् अशक्नुव	हम दोनों काम कर सके
वयं कार्यं कर्तुम् अशक्नुम	हम लोग काम कर सके

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुं शक्नुयात्	वह काम कर सका
तौ कार्यं कर्तुं शक्नुयाताम्	वे दोनों काम कर सकें
ते कार्यं कर्तुं शक्नुयुः	वे लोग काम कर सकें
त्वं कार्यं कर्तुं शक्नुथाः	तुम काम कर सको
युवां कार्यं कर्तुं शक्नुयातम्	तुम दोनों काम कर सको
यूयं कार्यं कर्तुं शक्नुयात	तुम लोग काम कर सको
अहं कार्यं कर्तुं शक्नुयाम्	मैं काम कर सकूँ
आवां कार्यं कर्तुं शक्नुयाव	हम दोनों काम कर सकें
वयं कार्यं कर्तुं शक्नुयाम	हम लोग काम कर सकें

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुं शक्ष्यति	वह काम कर सकेगा
तौ कार्यं कर्तुं शक्ष्यतः	वे दोनों काम कर सकेंगे
ते कार्यं कर्तुं शक्ष्यन्ति	वे लोग काम कर सकेंगे
त्वं कार्यं कर्तुं शक्ष्यसि	तुम काम कर सकोगे
युवां कार्यं कर्तुं शक्ष्यथः	तुम दोनों काम कर सकोगे
यूयं कार्यं कर्तुं शक्ष्यथ	तुम लोग काम कर सकोगे
अहं कार्यं कर्तुं शक्ष्यामि	मैं काम कर सकता
आवां कार्यं कर्तुं शक्ष्यावः	हम दोनों काम कर सकेंगे
वयं कार्यं कर्तुं शक्ष्यामः	हम लोग काम कर सकेंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत्	वह काम कर सकता
तौ कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यताम्	वे दोनों काम कर सकते
ते कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यन्	वे लोग काम कर पकते
त्वं कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यः	तुम काम कर सकते
युवां कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यतम्	तुम दोनों काम कर सकते
यूयं कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	तुम लोग काम कर सकते
अहं कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यम्	मैं काम कर सकता
आवां कार्यं कर्तुम् अशक्ष्याव	हम दोनों काम कर सकते
वयं कार्यं कर्तुम् अशक्ष्याम	हम लोग काम कर सकते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-"शक्नोति" के स्थान [illegible] क्षमते" का भी प्रयोग करना चाहिए।

२-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" पद का प्रयोग कर "सः कार्यं कारयितुं शक्नोति"—वह काम करा सकता है" इत्यादि सभी लकारों में वाक्य बनाने चाहिए।

३-कर्मवाच्य में "तेन कार्यं कर्तुं—शक्यते, अशक्यत, शक्येत, शक्ष्यते, अशक्ष्यत" आदि रूपों का प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार तेन पाठः पठितुं शक्यते इ०।

४-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर "तेन कार्यं कारयितुं शक्यते—उससे काम कराया जा सकता है" इत्यादि वाक्य बनाने चाहिए। इस प्रकार के वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिए।

१७-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ इष् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुम् इच्छति	वह काम करना चाहता है
तौ कार्यं कर्तुम् इच्छतः	वे दोनों काम करना चाहते है
ते कार्यं कर्तुम् इच्छन्ति	वे लोग काम करना चाहते हैं
त्वं कार्यं कर्तुम् इच्छसि	तुम काम करना चाहते हो
युवां कार्यं कर्तुम् इच्छथः	तुम दोनों काम करना चाहते हो
यूयं कार्यं कर्तुम् इच्छथ	तुम लोग काम करना चाहते हो
अहं कार्यं कर्तुम् इच्छामि	मैं काम करना चाहता हूँ
आवां कार्यं कर्तुम् इच्छावः	हम दोनों काम करना चाहते है
वयं कार्यं कर्तुम् इच्छामः	हम लोग काम करना चाहते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् ऐच्छत्	उसने काम करना चाहा
तौ कार्यं कर्तुम् ऐच्छताम्	उन दोनो ने काम करना चाहा
ते कार्यं कर्तुम् ऐच्छन्	उन लोगों ने काम करना चाहा
त्वं कार्यं कर्तुम् ऐच्छः	तुमने काम करना चाहा
युवां कार्यं कर्तुम् ऐच्छतम्	तुम दोनों ने काम करना चाहा
यूयं कार्यं कर्तुम् ऐच्छत्	तुम लोगों ने काम करना चाहा
अहं कार्यं कर्तुम् ऐच्छम्	मैंने काम करना चाहता चाहा
आवां कार्यं कर्तुम् ऐच्छाव	हम दोनों ने काम करना चाहा
वयं कार्यं कर्तुम ऐच्छाम	हम लोगों ने काम करना चाहा

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् इच्छेत्	वह काम करना चाहे
तौ कार्यं कर्तुम् इच्छेताम्	वे दोनों काम करना चाहें
ते कार्यं कर्तुम् इच्छेयुः	वे लोग काम करना चाहो
त्वं कार्यं कर्तुम् इच्छेः	तुम काम करना चाहो
युवां कार्यं कर्तुम् इच्छेतम्	तुम दोनों काम करना चाहो
यूयं कार्यं कर्तुम् इच्छेत	तुम लोग काम करना चाहो
अहं कार्यं कर्तुम् इच्छेयम्	मैं काम करना चाहूँ
आवां कार्यं कर्तुम् इच्छेव	हम दोनों काम करना चाहें
वयं कार्यं कर्तुम इच्छेम	हम लोग काम करना चाहें

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुं ज्ञास्यति	वह काम करना जानेगा
तौ कार्यं कर्तुं ज्ञास्यतः	वे दोनों काम करना जानेंगे
ते कार्यं कर्तुं ज्ञास्यन्ति	वे लोग काम करना जानेंगे
त्वं कार्यं कर्तुं ज्ञास्यसि	तुम काम करना जानोगे
युवां कार्यं कर्तुं ज्ञास्यथः	तुम दोनों काम करना जानोगे
यूयं कार्यं कर्तुं ज्ञास्यथ	तुम लोग काम करना जानोगे
अहं कार्यं कर्तुं ज्ञास्यामि	मैं काम करना जानूँगा
आवां कार्यं कर्तुं ज्ञास्यावः	हम दोनों काम करना जानेंगे
वयं कार्यं कर्तुं ज्ञास्यामः	हम लोग काम करना जानेंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यत्	वह काम करना जानता
तौ कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यताम्	वे दोनों काम करना जानते
ते कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यन्	वे लोग काम करना जानते
त्वं कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यः	तुम काम करना जानते
युवां कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यतम्	तुम दोनों काम करना जानते
यूयं कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यत	तुम लोग काम करना जानते
अहं कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यम्	मैं काम करना जानता
आवां कार्यं कर्तुम् अज्ञास्याव	हम दोनों काम करना जानते
वयं कार्यं कर्तुम् अज्ञास्याम	हम लोग काम करना जानते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-"जानाति" के स्थान पर "वेत्ति, अवगच्छति, बुध्यते" आदि क्रियारूपों का भी प्रयोग करना चाहिए।

२-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" पद का प्रयोग कर "सः कार्यं कारयितुं जानाति—वह काम करना जानता है" ऐसे वाक्यों को भी लकारों में बनाना चाहिए।

३-कर्मवाच्य में "तेन कार्यं कर्तुं—ज्ञायते, अज्ञायत, ज्ञायेत, ज्ञास्यते, अज्ञास्यत" आदि क्रियारूपों का प्रयोग करना चाहिए।

४-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थ कारयितुं का प्रयोग कर "तेन कार्यं कारयितुं ज्ञायते—उससे काम कराना जाना जाता है" इत्यादि वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिए।

२८ तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ दा धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुं ददाति	वह काम करने देता है
तौ कार्यं कर्तुं दत्तः	वे दोनों काम करने देते हैं
ते कार्यं कर्तुं ददति	वे लोग काम करने देते हैं
त्वं कार्यं कर्तुं ददासि	तुम काम करने देते हो
युवां कार्यं कर्तुं दत्थः	तुम दोनों काम करने देते हो
यूयं कार्यं कर्तुं दत्थ	तुम लोग काम करने देते हो
अहं कार्यं कर्तुं ददामि	मैं काम करने देता हूँ
आवां कार्यं कर्तुं दद्वः	हम दोनों काम करने देते हैं
वयं कार्यं कर्तुं दद्मः	हम लोग काम करने देते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अददात्	उसने काम करने दिया
तौ कार्यं कर्तुम् अदत्ताम्	उन दोनों ने काम करने दिया
ते कार्यं कर्तुम् अददुः	उन लोगों ने काम करने दिया
त्वं कार्यं कर्तुम् अददाः	तुमने काम करने दिया
युवां कार्यं कर्तुम् अदत्तम्	तुम दोनों ने काम करने दिया
यूयं कार्यं कर्तुम् अदत्त	तुम लोगों ने काम करने दिया
अहं कार्यं कर्तुम् अददाम्	मैंने काम करने दिया
आवां कार्यं कर्तुम् अदद्व	हम दोनों ने काम करने दिया
वयं कार्यं कर्तुम् अदद्म	हम लोगों ने काम करने दिया

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुं दद्यात्	वह काम करने दे
तौ कार्यं कर्तुं दद्याताम्	वे दोनों काम करने दें
ते कार्यं कर्तुं दद्युः	वे लोग काम करने दें
त्वं कार्यं कर्तुं दद्याथाः	तुम काम करने दो
युवां कार्यं कर्तुं दद्यातम्	तुम दोनों काम करने दो
यूयं कार्यं कर्तुं दद्यात	तुम लोग काम करने दो
अहं कार्यं कर्तुं दद्याम्	मैं काम करना करने दूँ
आवां कार्यं कर्तुं दद्याव	हम दोनों काम करने दें
वयं कार्यं कर्तुं दद्याम	हम लोग काम करने दें

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुं दास्यति	वह काम करने देगा
तौ कार्यं कर्तुं दास्यतः	वे दोनों काम करने देंगे
ते कार्यं कर्तुं दास्यन्ति	वे लोग काम करने देंगे
त्वं कार्यं कर्तुं दास्यसि	तुम काम करने दोगे
युवां कार्यं कर्तुं दास्यथः	तुम दोनों काम करने दोगे
यूयं कार्यं कर्तुं दास्यथ	तुम लोग काम करने दोगे
अहं कार्यं कर्तुं दास्यामि	मैं काम करने दूँगा
आवां कार्यं कर्तुं दास्यावः	हम दोनों काम करने देंगे
वयं कार्यं कर्तुं दास्यामः	हम लोग काम करने देंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अदास्यत्	वह काम करने देता
तौ कार्यं कर्तुम् अदास्यताम्	वे दोनों काम करने देते
ते कार्यं कर्तुम् अदास्यन्	वे लोग काम करने देते
त्वं कार्यं कर्तुम् अदास्यः	तुम काम करने देते
युवां कार्यं कर्तुम् अदास्यतम्	तुम दोनों काम करने देते
यूयं कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुम लोग काम करने देते
अहं कार्यं कर्तुम् अदास्यम्	मैं काम करने देते
आवां कार्यं कर्तुम् अदास्याव	हम दोनों काम करने देते
वयं कार्यं कर्तुम् अदास्याम	हम लोग काम करने देते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-"ददाति" के स्थान पर इसके आत्मदेपदी रूप दत्ते तथा दाण् धातु के परिवर्तित रूप प्रयच्छति का भी प्रयोग करना चाहिए।

२-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर सः कार्यं कारयितुं ददाति (वह काम कराने देता है) इत्यादि वाक्यों का सभी लकारों में प्रयोग करना चाहिए।

३-कर्मवाच्य में "तेन कार्यं कर्तुं—दीयते, अदीयत, दीयेत, दास्यते, अदास्यत" आदि क्रियारूपों का प्रयोग करना चाहिए।

४-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर "तेन कार्यं कारयितुं दीयते—उससे काम कराने दिया जाता है" ऐसे वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिए।

५-"वह काम करने देता है" इस वाक्य के स्थान पर यदि "वह उसे काम करने देता है" ऐसा वाक्य हो तो प्रथम कर्मवाच्य शब्द में षष्ठी विभक्ति लगाई जाती है। यथा—स तस्य कार्यं कर्तुं ददाति। अगले प्रकरण में इसके प्रयोग देखिये।

२१-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ लभ् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुं लभते	वह काम कर पाता है
तौ कार्यं कर्तुं लभेते	वे दोनों काम कर पाते हैं
ते कार्यं कर्तुं लभन्ते	वे लोग काम कर पाते हैं
त्वं कार्यं कर्तुं लभसे	तुम काम करने कर पाते हो
युवां कार्यं कर्तुं लभेथे	तुम दोनों काम कर पाते हो
यूयं कार्यं कर्तुं लभध्वे	तुम लोग काम कर पाते हो
अहं कार्यं कर्तुं लभे	मैं काम कर पाता हूँ
आवां कार्यं कर्तुं लभावहे	हम दोनों काम कर पाते हैं
वयं कार्यं कर्तुं लभामहे	हम लोग काम कर पाते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अलभत	वह काम कर पाया
तौ कार्यं कर्तुम् अलभताम्	वे दोनों काम कर पाये
ते कार्यं कर्तुम् अलभन्त	वे लोग काम कर पाये
त्वं कार्यं कर्तुम् अलभथाः	तुम काम कर पाये
युवां कार्यं कर्तुम् अलभेथाम्	तुम दोनों काम कर पाये
यूयं कार्यं कर्तुम् अलभध्वम्	तुम लोग काम कर पाये
अहं कार्यं कर्तुम् अलभे	मैं काम कर पाया
आवां कार्यं कर्तुम् अलभावहि	हम दोनों काम कर पाये
वयं कार्यं कर्तुम् अलभामहि	हम लोग काम कर पाये

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुं लभेत	वह काम कर पाये
तौ कार्यं कर्तुं लभेयाताम्	वे दोनों काम कर पाये
ते कार्यं कर्तुं लभेरन्	वे लोग काम कर पायें
त्वं कार्यं कर्तुं लभेथाः	तुम काम कर पाओ
युवां कार्यं कर्तुं लभेयाथाम्	तुम दोनों काम कर पाओ
यूयं कार्यं कर्तुं लभेध्वम्	तुम लोग काम कर पाओ
अहं कार्यं कर्तुं लभेय	मैं काम कर पाऊँ
आवां कार्यं कर्तुं लभेवहि	हम दोनों काम कर पायें
वयं कार्यं कर्तुं लभेमहि	हम लोग काम कर पायें

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुं लप्स्यते	वह काम कर पायेगा
तौ कार्यं कर्तुं लप्स्येते	वे दोनों काम कर पायेंगे
ते कार्यं कर्तुं लप्स्यन्ते	वे लोग काम कर पायेंगे
त्वं कार्यं कर्तुं लप्स्यसे	तुम काम कर पाओगे
युवां कार्यं कर्तुं लप्स्येथे	तुम दोनों काम कर पाओगे
यूयं कार्यं कर्तुं लप्स्यध्वे	तुम लोग काम कर पाओगे
अहं कार्यं कर्तुं लप्स्ये	मैं काम कर पाऊँगा
आवां कार्यं कर्तुं लप्स्यावहे	हम दोनों काम कर पायेंगे
वयं कार्यं कर्तुं लप्स्यामहे	हम लोग काम कर पायेंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम अलप्स्यत	वह काम कर पाता
तौ कार्यं कर्तुम् अलप्स्येताम्	वे दोनों काम कर पाते
ते कार्यं कर्तुम अलप्स्यन्त	वे लोग काम कर पाते
त्वं कार्यं कर्तुम् अलप्स्यः	तुम काम कर पाते
युवां कार्यं कर्तुम् अलप्स्येथाम्	तुम दोनों काम कर पाते
यूयं कार्यं कर्तुम् अलप्स्यध्वम्	तुम लोग काम कर पाते
अहं कार्यं कर्तुम् अलप्स्ये	मैं काम कर पाता
आवां कार्यं कर्तुम् अलप्स्यावहि	हम दोनों काम कर पाते
वयं कार्यं कर्तुम् अलप्स्यामहि	हम लोग काम कर पाते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-'लभते' के स्थान पर ''प्राप्नोति पारयति'' का भी प्रयोग करना चाहिए।

२-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' पद का प्रयोग कर ''सः कार्यं कारयितुं लभते (वह काम करा पाता है) आदि वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

३-कर्मवाच्य में 'तेन कार्यं कर्तुं लभ्यते, अलभ्यत, अलभ्येत, लप्स्यते, अलप्स्यत'' आदि रूपों का प्रयोग करना चाहिए।

४-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' का प्रयोग कर ''तेन कार्यं कारयितुं लभ्यते'' ''उस से काम करा पाया जाता है'' इस प्रकार के वाक्य बनाने चाहिए।

२२-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ लग् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः कार्यं कर्तुं लगति	वह काम करने लगता है
तौ कार्यं कर्तुं लगतः	वे दोनों काम करने लगते हैं
ते कार्यं कर्तुं लगन्ति	वे लोग काम करने लगते हैं
त्वं कार्यं कर्तुं लगसि	तुम काम करने लगते हो
युवां कार्यं कर्तुं लगथः	तुम दोनों काम करने लगते हो
यूयं कार्यं कर्तुं लगथ	तुम लोग काम करने लगते हो
अहं कार्यं कर्तुं लगामि	मैं काम करने लगते हूँ
आवां कार्यं कर्तुं लगावः	हम दोनों काम करने लगते हैं
वयं कार्यं कर्तुं लगामः	हम लोग काम करने लगते हैं

लङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अलगत्	वह काम करने लगा
तौ कार्यं कर्तुम् अलगताम्	वे दोनों काम करने लगे
ते कार्यं कर्तुम् अलगन्	वें लोग काम करने लगे
त्वं कार्यं कर्तुम् अलगः	तुम काम करने लगे
युवां कार्यं कर्तुम् अलगतम्	तुम दोनों काम करने लगे
यूयं कार्यं कर्तुम् अलगत	तुम लोग काम करने लगे
अहं कार्यं कर्तुम् अलगम्	मैं काम करने लगा
आवां कार्यं कर्तुम् अलगाव	हम दोनों काम करने लगे
वयं कार्यं कर्तुम् अलगाम	हम लोग काम करने लगे

लिङ् लकार

सः कार्यं कर्तुं लगेत्	वह काम करने लगे
तौ कार्यं कर्तुं लगेताम्	वे दोनों काम करने लगें
ते कार्यं कर्तुं लगेयुः	वे लोग काम करने लगें
त्वं कार्यं कर्तुं लगेः	तुम काम करने लगो
युवां कार्यं कर्तुं लगेतम्	तुम दोनों काम करने लगो
यूयं कार्यं कर्तुं लगेत	तुम लोग काम करने लगो
अहं कार्यं कर्तुं लगेयम्	मैं काम करने लगूँ
आवां कार्यं कर्तुं लगेव	हम दोनों काम करने लगें
वयं कार्यं कर्तुं लगेम	हम लोग काम करने लगें

लृट् लकार

सः कार्यं कर्तुं लगिष्यति	वह काम करने लगेगा
तौ कार्यं कर्तुं लगिष्यतः	वे दोनों काम करने लगेंगे
ते कार्यं कर्तुं लगिष्यन्ति	वे लोग काम करने लगेंगे
त्वं कार्यं कर्तुं लगिष्यसि	तुम काम करने लगोगे
युवां कार्यं कर्तुं लगिष्यथः	तुम दोनों काम करने लगोगे
यूयं कार्यं कर्तुं लगिष्यथ	तुम लोग काम करने लगोगे
अहं कार्यं कर्तुं लगिष्यामि	मैं काम करने लगूँगा
आवां कार्यं कर्तुं लगिष्यावः	हम दोनों काम करने लगेंगे
वयं कार्यं कर्तुं लगिष्यामः	हम लोग काम करने लगेंगे

लृङ् लकार

सः कार्यं कर्तुम् अलगिष्यत्	वह काम करने लगता
तौ कार्यं कर्तुम् अलगिष्यताम्	वे दोनों काम करने लगते
ते कार्यं कर्तुम अलगिष्यन्	वे लोग काम करने लगते
त्वं कार्यं कर्तुम् अलगिष्यः	तुम काम करने लगते
युवां कार्यं कर्तुम् अलगिष्यतम्	तुम दोनों काम करने लगते
यूयं कार्यं कर्तुम् अलगिष्यत	तुम लोग काम करने लगते
अहं कार्यं कर्तुम् अलगिष्यम्	मैं काम करने लगता
आवां कार्यं कर्तुम् अलगिष्याव	हम दोनों काम करने लगते
वयं कार्यं कर्तुम् अलगिष्याम	हम लोग काम करने लगते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-"लगति" के स्थान पर "प्रवर्तते, प्रक्रमते, उपक्रमते, आरभते, प्रारभते" आदि क्रियारूपों का भी प्रयोग करना चाहिए।

२-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" पद का प्रयोग कर "सः कार्यं कारयितुं लगति (वह काम कराने लगता है)" इस प्रकार के वाक्यों का भी प्रयोग करना चाहिए।

३-कर्मवाच्य में लगति के स्थान पर लग्यते पद का प्रयोग कर 'तेन कार्यं कर्तुं लग्यते तथा तेन कार्यं कारयितुं लग्यते" आदि वाक्यों का निर्माण करना चाहिए।

४-संस्कृत के ग्रन्थों में लगति के स्थान पर अन्य उपर्युक्त क्रियाओं का अधिक प्रयोग होता है पर उन सब का हिन्दी में "लगना" यही अर्थ होता है।

२३-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ आ उपसर्ग सहित या धातु का प्रयोग

लट् लकार

तस्य कार्यं कर्तुम् आयाति	उसको काम करने आता है
तयोः कार्यं कर्तुम् आयाति	उन दोनों को काम करने आता हैं
तेषां कार्यं कर्तुम् आयाति	उन लोगों को काम करने आता हैं
तव कार्यं कर्तुम् आयाति	तुमको काम करने आता है
युवयोः कार्यं कर्तुम् आयाति	तुम दोनों को काम करने आता हैं
युष्माकं कार्यं कर्तुम् आयाति	तुम लोगों को काम करने आता हैं
मम कार्यं कर्तुम् आयाति	हमको काम करने आता है
आवयोः कार्यं कर्तुम आयाति	हम दोनों को काम करने आता हैं
अस्माकं कार्यं कर्तुम् आयाति	हम लोगों को काम करने आता हैं

लङ् लकार

तस्य कार्यं कर्तुम् आयात्	उसको काम करना आया
तयोः कार्यं कर्तुम् आयात्	उन दोनों को काम करना आया
तेषां कार्यं कर्तुम् आयात्	उन लोगों को काम करना आया
तव कार्यं कर्तुम् आयात्	तुमको काम करना आया
युवयोः कार्यं कर्तुम् आयात्	तुम दोनों को काम करना आया
युष्माकं कार्यं कर्तुम् आयात्	तुम लोगों को काम करना आया
मम कार्यं कर्तुम् आयात्	मुझको काम करना आया
आवयोः कार्यं कर्तुम् आयात्	हम दोनों को काम करना आया
अस्माकं कार्यं कर्तुम् आयात्	हम लोगों को काम करना आया

लिङ् लकार

तस्य कार्यं कर्तुम् आयायात्	उसको काम करना आवे
तयोः कार्यं कर्तुम् आयायात्	उन दोनों को काम करना आवे
तेषां कार्यं कर्तुम् आयायात्	उन लोगों को काम करना आवे
तव कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुमको काम करना आवे
युवयोः कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुम दोनों को काम करना आवे
युष्माक कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुम लोगों को काम करना आवे
मम कार्यं कर्तुम् आयायात्	हमको काम करना आवे
आवयोः कार्यं कर्तुम् आयायात्	हम दोनों को काम करना आवे
अस्माकं कार्यं कर्तुम आयायात्	हम लोगों को काम करना आवे

लृट् लकार

तस्य कार्यं कर्तुम् आयास्यति	उसको काम करना आयेगा
तयोः कार्यं कर्तुम आयास्यति	उन दोनों को काम करना आयेगा
तेषां कार्यं कर्तुम् आयास्यति	उन लोगों को काम करना आयेगा
तव कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुमको काम करना आयेगा
युवयोः कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुम दोनों को काम करना आयेगा
युष्माकं कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुम लोगों को काम करना आयेगा
मम कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हमको काम करना आयेगा
आवयोः कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हम दोनों को काम करना आयेगा
अस्माकं कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हम लोगों को काम करना आयेगा

लृङ् लकार

तस्य कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उसको काम करने आता
तयोः कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उन दोनों को काम करने आता
तेषां कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उन लोगों को काम करने आता
तव कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	तुमको काम करने आता
युवयोः कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	तुम दोनों को काम करने आता
युष्माकं कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	तुम लोगों को काम करने आता
मम कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हमको काम करने आता
आवयोः कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हम दोनों को काम करने आता
अस्माकं कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हम लोगों को काम करने आता

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-ऊपर हिन्दी में जैसे वाक्य दिये गये हैं वैसे वाक्य हिन्दी में बहुत चलते हैं। जैसे--उसको पढ़ने आता हे, लिखने आता है इत्यादि। पर संस्कृत में ठीक इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग नहीं मिलता। संस्कृत में आयाति के स्थान पर "जानाति" का प्रयोग चलता है जिसका भावार्थ आयाति के समान होता है। परन्तु महाभारत के (सभा० २५/३३) वक्तुं नायाति राजेन्द्र एतयोर्नियमस्थयोः इस श्लोक में तथा 'इष्टगोष्ठ्यामपि यदपि तदपि वक्तुमायाति किं पुनर्वादावस्थायाम्" इस खरतरगच्छ—वृहद्गुर्वावलि (पृष्ठ ३६) में प्रयुक्त "वक्तुं आयाति" इस वाक्य के आधार पर संस्कृत में ऐसे अन्य वाक्यों का भी प्रयोग करना व्यवहार की दृष्टि से उचित प्रतीत होता है। इसीलिए कर्तुं के साथ आयाति का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार " तव शुद्धं पठितुं आयाति" आदि वाक्यों का प्रयोग हो सकता है।

२४-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ शक् धातु का कर्मवाच्य में प्रयोग

लट् लकार

तेन कार्यं कर्तुं शक्यते	उससे काम किया जा सकता है
तेन कार्ये कर्तुं शक्येते	उससे काम किये जा सकते हैं
तेन कार्याणि कर्तुं शक्यन्ते	उससे काम किये जा सकते हैं
त्वया कार्यं कर्तुं शक्यते	तुमसे काम किया जा सकते है
त्वया कार्ये कर्तुं शक्येते	तुमसे काम किये जा सकते हैं
त्वया कायाणि कर्तुं शक्यन्ते	तुमसे काम किये जा सकते हैं
मया कार्यं कर्तुं शक्यते	मुझसे काम किया जा सकते है
मया कार्ये कर्तुं शक्येते	मुझसे काम किये जा सकते हैं
मया कार्याणि कर्तुं शक्यन्ते	मुझसे काम किये जा सकते हैं

लङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुम् अशक्यत	उससे काम किया जा सका
तेन कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	उससे काम किये जा सकें
तेन कार्याणि कर्तुम् अशक्यन्त	उससे काम किये जा सकें
त्वया कार्यं कर्तुम् अशक्यत	तुमसे काम किया जा सका
त्वया कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	तुमसे काम किये जा सकें
त्वया कायाणि कर्तुम् अशक्यन्त	तुमसे काम किये जा सकें
मया कार्यं कर्तुम् अशक्यत	मुझसे काम किया जा सका
मया कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	मुझसे काम किये जा सकें
मया कार्याणि कर्तुम् अशक्यन्त	मुझसे काम किये जा सकें

लिङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुं शक्येत	उससे काम किया जा सके
तेन कार्ये कर्तुं शक्येयाताम्	उससे काम किये जा सकें
तेन कार्याणि कर्तुं शक्येरन्	उससे काम किये जा सकें
त्वया कार्यं कर्तुं शक्येत	तुमसे काम किया जा सके
त्वया कार्ये कर्तुं शक्येयाताम्	तुमसे काम किये जा सकें
त्वया कायाणि कर्तुं शक्येरन्	तुमसे काम किये जा सकें
मया कार्यं कर्तुं शक्येत	मुझसे काम किया जा सके
मया कार्ये कर्तुं शक्येयाताम्	मुझसे काम किये जा सकें
मया कार्याणि कर्तुं शक्येरन्	मुझसे काम किये जा सकें

लृट् लकार

तेन कार्यं कर्तुं शक्ष्यते	उससे काम किया जा सकेगे
तेन कार्ये कर्तुं शक्ष्येते	उससे काम किये जा सकेंगे
तेन कार्याणि कर्तुं शक्ष्यन्ते	उससे काम किये जा सकेंगे
त्वया कार्यं कर्तुं शक्ष्यते	तुमसे काम किया जा सकेगा
त्वया कार्ये कर्तुं शक्ष्येते	तुमसे काम किये जा सकेंगे
त्वया कायाणि कर्तुं शक्ष्यन्ते	तुमसे काम किये जा सकेंगे
मया कार्यं कर्तुं शक्ष्यते	मुझसे काम किया जा सकेगा
मया कार्ये कर्तुं शक्ष्येते	मुझसे काम किये जा सकेंगे
मया कार्याणि कर्तुं शक्ष्यन्ते	मुझसे काम किये जा सकेंगे

लृङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	उससे काम किया जा सकता
तेन कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	उससे काम किये जा सकते
तेन कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	उससे काम किये जा सकते
त्वया कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	तुमसे काम किया जा सकता
त्वया कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	तुमसे काम किये जा सकते
त्वया कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	तुमसे काम किये जा सकते
मया कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	मुझसे काम किया जा सकता
मया कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	मुझसे काम किये जा सकते
मया कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	मुझसे काम किये जा सकते

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक कारयितुं पद लगाकर भी वाक्यों का निर्माण करना चाहिए। यथा—

तेन कार्यं कारयितुं शक्यते	उससे काम कराया जा सकता है
तेन कार्यं कारयितुम् अशक्यत	उससे काम कराया जा सका
तेन कार्यं कारयितुं शक्येत	उससे काम कराया जा सके
तेन कार्यं कारयितुं शक्ष्यते	उससे काम कराया जा सकेगा।
तेन कार्यं कारयितुम् अशक्ष्यत	उससे काम कराया जा सकता

२-इसी प्रकार पाठः पाठयितुं शक्यते, लेखः लेखयितुं शक्यते। आदि पद को भी जोड़ कर वाक्य बनाने चाहिए।

३-ऊपर के वाक्यों में "तेन त्वया मया" आदि तृतीया एकवचन के स्थान पर द्विवचन एवं बहुवचन का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जायेगा।

२५-तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ दा धातु का कर्मवाच्य में प्रयोग

लट् लकार

तेन कार्यं कर्तुं दीयते	उससे काम करने दिया जाता है
ताभ्यां कार्यं कर्तुं दीयते	उन दोनों से काम करने दिया जाता है
तैः कार्यं कर्तुं दीयते	उन लोगों से काम करने दिया जाता है
त्वया कार्यं कर्तुं दीयते	तुमसे काम करने दिया जाता है
युवाभ्यां कार्यं कर्तुं दीयते	तुम दोनों से काम करने दिया जाता है
युष्माभिः कार्यं कर्तुं दीयते	तुम लोगों से काम करने दिया जाता है
मया कार्यं कर्तुं दीयते	मुझसे काम करने दिया जाता है
आवाभ्यां कार्यं कर्तुं दीयते	हम दोनों से काम करने दिया जाता है
अस्माभिः कार्यं कर्तुं दीयते	हम लोगों से काम करने दिया जाता है

लङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुम् अदीयत	उससे काम करने दिया गया
ताभ्यां कार्यं कर्तुम् अदीयत	उन दोनों से काम करने दिया गया
तैः कार्यं कर्तुम् अदीयत	उन लोगों से काम करने दिया गया
त्वया कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुमसे काम करने दिया गया
युवाभ्यां कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुम दोनों से काम करने दिया गया
युष्माभिः कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुम लोगों से काम करने दिया गया
मया कार्यं कर्तुम् अदीयत	मुझसे काम करने दिया गया
आवाभ्यां कार्यं कर्तुम् अदीयत	हम दोनों से काम करने दिया गया
अस्माभिः कार्यं कर्तुम् अदीयत	हम लोगों से काम करने दिया गया

लिङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुं दीयेत	उससे काम करने दिया जाय
ताभ्यां कार्यं कर्तुं दीयेत	उन दोनों से काम करने दिया जाय
तैः कार्यं कर्तुं दीयेत	उन लोगों से काम करने दिया जाय
त्वया कार्यं कर्तुं दीयेत	तुमसे काम करने दिया जाय
युवाभ्यां कार्यं कर्तुं दीयेत	तुम दोनों से काम करने दिया जाय
युष्माभिः कार्यं कर्तुं दीयेत	तुम लोगों से काम करने दिया जाय
मया कार्यं कर्तुं दीयेत	मुझसे काम करने दिया जाय
आवाभ्यां कार्यं कर्तुं दीयेत	हम दोनों से काम करने दिया जाय
अस्माभिः कार्यं कर्तुं दीयेत	हम लोगों से काम करने दिया जाय

लृट् लकार

तेन कार्यं कर्तुं दास्यते	उससे काम करने दिया जायेगा
ताभ्यां कार्यं कर्तुं दास्यते	उन दोनों से काम करने दिया जायेगा
तैः कार्यं कर्तुं दास्यते	उन लोगों से काम करने दिया जायेगा
त्वया कार्यं कर्तुं दास्यते	तुमसे काम करने दिया जायेगा
युवाभ्यां कार्यं कर्तुं दास्यते	तुम दोनों से काम करने दिया जायेगा
युष्माभिः कार्यं कर्तुं दास्यते	तुम लोगों से काम करने दिया जायेगा
मया कार्यं कर्तुं दास्यते	मुझसे काम करने दिया जायेगा
आवाभ्यां कार्यं कर्तुं दास्यते	हम दोनों से काम करने दिया जायेगा
अस्माभिः कार्यं कर्तुं दास्यते	हम लोगों से काम करने दिया जायेगा

लृङ् लकार

तेन कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उससे काम करने दिया जाता
ताभ्यां कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उन दोनों से काम करने दिया जाता
तैः कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उन लोगो से काम करने दिया जाता
त्वया कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुमसे काम करने दिया जाता
युवाभ्यां कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुम दोनों से काम करने दिया जाता
युष्माभिः कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुम लोगो से काम करने दिया जाता
मया कार्यं कर्तुम् अदास्यत	मुझसे काम करने दिया जाता
आवाभ्यां कार्यं कर्तुम् अदास्यत	हम दोनों से काम करने दिया जाता
अस्माभिः कार्यं कर्तुम् अदास्यत	हम लोगों से काम करने दिया जाता

अन्य ज्ञातव्य विषय

१-उपर्युक्त वाक्यों में सब जगह कर्म एवं क्रिया में एकवचन का ही प्रयोग किया गया है। इनमें आवश्यकतानुसार द्विवचन एवं बहुवचन का भी प्रयोग किया जायगा।

२-उपर्युक्त वाक्यो में एक विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि इनके साथ-साथ जब एक और कर्म जोड़ा जायगा तो उसमें पूर्ववत् द्वितीया विभक्ति के स्थान पर चतुर्थी या षष्ठी विभक्ति लगा करेगी। यथा—

उससे उसे काम करने दिया जाता है। तेन तस्मै/तस्य कार्यं कर्तुं दीयते।

३-कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक पद कारयितुम् को लगाकर निम्नलिखित ढंग से वाक्य बनाने चाहिए। यथा—

तेन कार्यं कारयितुं दीयते	उससे काम कराने दिया जाता है
तेन कार्यं कारयितुम् अदीयत	उससे काम कराने दिया गया
तेन कार्यं कारयितुं दीयेत	उससे काम कराने दिया जाय
तेन कार्यं कारयितुं दास्यते	उससे काम कराने दिया जायेगा
तेन कार्यं कारयितुम अदास्यत	उससे काम कराने दिया जाता

कृत्प्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के प्राचीन ग्रन्थों से संकलित उदाहरण

१-शतृ प्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के उदाहरण

ऋतस्य योनि **निमृशन्त आसते**। *ऋग्वेद संहिता १०.६५.७*

ऋत (सत्य) के मूल कारण का विचार करते रहते हैं।

जुह्वद् आस्ते। सुवन्त आसते। अनुपृच्छन्त आसते।

जैमिनीय ब्राह्मण १.१. १.३६४, ३.५५

स वरमवृणीत। अस्यामेव होत्रायामिन्द्रभूतं **पुनन्तः स्तुवन्तः संशन्तस्तिष्ठे**युरिति।

गोपथ ब्राह्मण, पुर्वभाग, प्र० २.क० १९

उसने वर माँगा। इसी स्तुति में आप लोग मुझ इन्द्र को पवित्र करते हुए, स्तवन करते हुए और प्रशंसा करते हुए रहें।

एतत् साम गायन्नास्ते। *तैत्तिरीय उपनिषद् ३.१०.५*

यह साम गा रहा है।

तस्याहं तपसो वीर्यं **जानन्नासं** तपोधन। *महाभारतम् आदिपर्व ११.५*

निजहृदि **विकसन्तः सन्ति** सन्तः कियन्तः। *भर्तृहरिनीतिशतकम् ७९*

दिनत्रयं **भ्रमन्नास**मेकं फलहकं स्थितः। *कथासरित्सागरः ५.३.१२२*

तत्रैव **गच्छन्नागच्छन्नासीद्** विद्याधरोऽथ सः। *कथासरित्सागरः ६.८.२७*

गृहानेषोऽनया **क्रीडन्नास्ता**पास्तपरिच्छदः। *कथासरित्सागरः ७.८.१४०*

दूरात् सकौतुकश्चाहं **पश्यन्नास**मलक्षितः। *कथासरित्सागरः ९.६.२०९*

तत्र**आसीत्** स तपः **कुर्वन्** राजाऽन्यरसनिःस्पृहः। *कथासरित्सागरः १२.६.८९*

यत्र क्वपि दिनेष्वेषु **गच्छन्ती चास्मि** न त्वया। *कथासरित्सागरः १२.१९.११२*

नरवाहनदत्तोऽत्र **क्रीडन्नासीदि**तस्ततः। *कथासरित्सागरः १३.३.२८*

धुर्यान् **विश्रमयन्नासे** जाततीव्रश्रमानिति। *बृहत्कथाश्लोकसंग्रह १०.८९*

अर्थशास्त्राणि **शंसन्तो** महाकाव्यानि **चास्महे**। *बृहत्कथाश्लोकसंग्रह १०.१२९*

वयं च सहिता दारैः **क्रीडन्तः सुखमास्महि**। *बृहत्कथाश्लोकसंग्रह १५.६७*

सं मयोक्तस्तया साकं **हसन्तः सुखमास्महि**। *बृहत्कथाश्लोकसंग्रह २०.५*

तत्राप्यहानि द्वित्राणि **वहन्नेवाभवन्नृ**पः। *राजतरङ्गिणी ४.२९०*

कार्याणि **घटयन्नासीद्** दुर्घटान्यपि हेलया। *राजतरङ्गिणी ४.३६४*

वीक्ष्य राज्यश्रियं **शोचन्नासीत्** कमलवर्धनः। *राजतरङ्गिणी ५.४६७*

संघटय्याखिलान् स्थेयान् **आसीत्तत्त्वं विचारयन्।** *राजतरङ्गिणी ६.२८*

उपायांश्चिन्तयन्नासीत् तस्य कार्यस्य सिद्धये। *राजतरङ्गिणी ७.७५३*

स्वमेव केवलं रक्षन्नासीत् स चकितोऽन्वहम्। *राजतरङ्गिणी ७.१०२१*

नन्दयन् मेदिनीमास्ते जयसिंहो महीपतिः। *राजतरङ्गिणी ८.३४४८*

तथा दृष्ट्वा लोको बौद्धभक्तो भवन्नास्ते। *प्रबन्धकोश पृ० १*

पादलिप्ताचार्याः समागच्छन्तः सन्ति प्रातः। *प्रबन्धकोश पृ० १४*

तान् सर्वान् हन्तुमहं सन्नह्य चलन्नासम्। *प्रबन्धकोश पृ० २६*

अन्येऽपि खादन्तः सन्ति। *प्रबन्धकोश पृ० ९९*

तत्र क्षेत्रं कारयन्नस्मि। *प्रबन्धकोश पृ० १०४*

यानपात्रात्तुरङ्गा उत्तरन्तः सन्ति। *प्रबन्धकोश पृ० १२१*

पौरजनसाक्षिकं भवन्मन्दिरमानीतया तोयजाक्ष्या
सह क्रीडन्नायुष्मान् यदि भविष्यति......। *दशकुमारचरितम् पू० पी० ४*

भैक्ष्यं सम्पद्य दददेतेभ्यो वसामि शिवालयेऽस्मिन्। *दशकुमारचरितम् पू०पी० ३*

इत आखेटक एकः शुकान् व्यापादयन्नस्ति। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ६*

राज्ञा उक्तम्-यूयं किं किं वाचयन्तः स्थः। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ७*

गुरुभिः कथितम्—किं पृच्छन्नसि। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ३७*

अहं नित्यं नगरमनुष्यमनोऽभिप्रायं विलोकयन्नस्मि। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ३८*

मध्यरात्रौ सुखासनाधिरूढा अमात्याद्याः शृण्वन्तः सन्ति।
पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ७८

यस्मिन्नभूम चिरमेव पुरा वसन्तः। *उत्तररामचरितम् २.२२*

शरीराभ्यङ्गं कारयंस्तिष्ठति। *खरतरगच्छ-वृहद्गुर्वावलिः पृ०*

विदेशादागत्य लोकाः स्वयमेव वसन्तः सन्ति। *लिखनावली पृ० ९*

वादिप्रतिवादिनौ गच्छन्तौ तिष्ठतः। *लिखनावली पृ० १५*

भिक्षार्थं गच्छन्तौ वर्तेते। *लिखनावली पृ० १६*

वयमागच्छन्त एव तिष्ठामः। *लिखनावली पृ० २०*

गृहं गच्छन्तो वर्तन्ते। *लिखनावली पृ० ३०*

लोकाः कृषिं कुर्वाणाः वसन्तः सन्ति। *लिखनावली पृ० ३५*

कपर्दकाश्च भवतां यथागता एव गच्छन्तः सन्ति। *लिखनावली पृ०*

२-शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

इदानीं वयं गुरुमुखश्रुतानां विस्तीर्णानां रसाढ्यानां
चतुर्विंशतेः प्रबनधानां संग्रहं **कुर्वाणाः स्म।** *प्रबन्धकोषः पृ० १*
श्रीमन्त्रिपादाश्चिरं राज्यमुपभु**ञ्जानाः सन्ति।** *प्रबनधकोषः पृ० १२३*
देवीं **प्रतीक्षमाणोऽस्थात्** सरित्पारे ततः क्षणम् । *राजतरङ्गिणी ७.३४९*
आस्कन्दं **शङ्कमानोऽस्थाद्** द्विजाद राजा बलोर्जितात्। *राजतरङ्गिणी ८.१०२५*
समावदेव यज्ञं **कुर्वाणा** आसन्। *गोपथब्रह्मणम्*
वे यज्ञ में वही कर रहे थे।
यः पूर्वम**नीजानः स्यात्।** *ऐतरेयब्राह्मणम् १.४.१*
जो पहले कोई यज्ञ न कर रहा हो।

◆

३-शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्मवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

अद्यापि कष्टापहारार्थिभिस्तत् **पठ्यमानमास्ते।** *प्रबन्धकोशः पृ० ४*
किमयं समर्घो **लभ्यमानोऽस्ति।** *प्रबन्धकोशः पृ० १६*
गुरभिर्बोध्यमानोऽसि। बुध्यस्व, मा मुहः। *प्रबन्धकोशः पु० ६५*
तुतीयं तु खण्डं प्रतोलीद्वारे चतुष्पथमध्ये निपतितमद्यापि तथैव
वीक्ष्यमाणमास्ते। *प्रबन्धकोशः पृ० ६५*
बालकैः पाल्यमानोऽभूत् पृथिवीभोगभागिभिः। *राजतरङ्गिणी ४.६.७९*
युधि सोऽन्वीयमानोऽभूद् वाम्याटविकमण्डलैः। *राजतरङ्गिणी ४.४७९*
आनीयमानं मासार्धवासरे मासि मास्य**भूत्।** *राजतरङ्गिणी ७.१९६*
मृतानामपि संस्कारः **क्रियमाण** इवाऽ**भवन्।** *राजतरङ्गिणी ८.२८०४*
ततोऽनुबध्यमाऽनोभूद् अपर्यन्तव्यथातुरः। *राजतरङ्गिणी ५.४४३*

◆

४-स्यतृ-स्यमान प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

उद्यास्यन् वा अरेऽहमस्मात् स्थाना**दस्मि**। *वृहदारण्यकोपनिषद् २.४.१*

अरे! इस स्थान से मैं चला जाने वाला हूँ।

यक्ष्यमाणो ह वै भगवन्तोऽ**हमस्मि**। *छान्दोग्योपनिषद् ३.५.२.३६*

भगवन्! मैं यज्ञ करने वाला हूँ।

आधास्यन् भवति। *शतपथब्राह्मणम् ३.५.२.१४*

आधान करने वाला होता है।

यद् **वदिष्यन् करिष्यन्** वा **स्यात्।** *शतपथब्राह्मणम् २.४.१.१४*

अथ यदि रथं वा युक्तं **दास्यन् स्यात्।** *शतपथब्राह्मणम् ४.४.८.१५*

यदि बोलने वाला हो अथवा करने वाला हो। यदि जोड़ा रथ देने वाला हो।

स यदा **उत्क्रमिष्यन् भवति।** *मैत्रायणी आरण्यकम् २.६*

वह जब उत्क्रमण करने वाला होता है।

उपतिष्ठते अग्नीत् **प्रवत्स्यंश्च प्रोषितवांश्च।** *कौषीतकीब्राह्मणम् ४,६*

प्रवास करने वाला और प्रवास किया हुआ व्यक्ति

अग्नि का उपस्थान करता है।

तं यत्र **निहनिष्यन्तो भवन्ति।** *ऐतरेयब्राह्मणम् २.११.६*

जहाँ उसे हनन करने वाले होते हैं।

यत्र क्व च **होष्यन्तस्यात्।** *आश्वलायनगृह्यसूत्रम् १.३.१*

जहाँ कहीं भी हवच करने वाला हो।

तस्थौ चिराय तपसे **तोषयिष्यन्नु**मापतिम्। *कथासरित्सागर १.७.५३*

शंकरजी को संतुष्ट करने की इच्छा करता हुआ बहुत

समय तक तपस्या करता रहा।

◆

५-क्त प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

अर्थी भवन्तमुपागतोऽस्मीति स एनमभिवाद्योवाच।	*महाभारतम्, आदि० ३.१०३*
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।	*भगवद्गीता ११.५१*
प्रबुद्धाः स्मः प्रहृष्टाः स्मः प्रविष्टाः स्मः स्वमास्पदम्।	*योगवाशिष्ठः, नि०पू० २९.७*
तत् कस्त्वं कस्य पुत्रस्त्वं **किमायातोऽस्य**नुग्रहात्।	*योगवाशिष्ठः, नि०पू० ८५.८३*
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।	*भगवद्गीता १८.७३*
कुर्वन् वणिज्यां क्रमशः **सम्पन्नोऽस्मि** महाधनः।	*कथासरित्सागरः १.६.४७*
आगत्यैव **प्रसूतास्मि** युगपत्तनयावुभौ।	*कथासरित्सागरः ४.१.१४७*
कुतः **प्राप्तोऽसि** गन्तासि क्व च भद्रोच्यतामिति।	*कथासरित्सागरः ५.२.१७*
सुप्ता जाने स्त्रिया स्वप्ने कयाऽ**प्युक्ताऽस्मि** दिव्यया।	*कथासरित्सागरः ५.२.१६६*
महाकालार्चनायाता **विश्रान्तास्मीह** सम्प्रति।	*कथासरित्सागरः ७.३.२३*
उद्धृत्य वह्नौ **क्षिप्ताः स्मो** न च दह्यामहेऽग्निना।	*कथासरित्सागरः ८.२.१४०*
भ्रामितोऽस्मि च मिथ्यैव दूराद्दूरं दुरात्मना।	*कथासरित्सागरः ९.६.६९*
अद्वारेण **प्रविष्टाः स्थ** निर्भया राजकिल्विषात्।	*महाभारतम्, सभा० २१.४५*
प्रातः पितृगृहं यास्याम्युत्सवे**ऽस्मि निमन्त्रिता।**	*महाभारतम्, १०.६.२२६*
इति शार्ङ्गभृताऽदिष्टः **प्रबुद्धोऽस्मि** निशाक्षये।	*महाभारतम्, १२.४.१२४*
आगताऽस्मि तवाख्यातुं प्रमाणं त्वमतः परम्।	*महाभारतम्, १२.४.१४५*
ततः प्रधाव्य केनापि ब्राह्मणेना**ऽस्मि मोचिता।**	*महाभारतम्, १२.४.१७३*
आगतोऽस्मि वशं भद्रे तव मन्त्रबलात् कृतः।	*महाभारतम्, वन० ३०७.११*
गम्यतां भगवंस्तत्र यत एवा**ऽगतो ह्यसि।**	*महाभारतम्, वन० ३०७.१२*
ततः स्वामिकुमारस्य पादमूलं **गतोऽभवत्।**	*कथासरित्सागरः २.२.६०*
अध्यापयितुमस्मांश्च **प्रवृत्तोऽभूदसौ** ततः।	*कथासरित्सागरः १.२.८९*
स्वदेशमा**गतोऽभूवं** दर्शयिष्यन् निजान् गुणान्।	*कथासरित्सागरः १.६.२३*
कुर्वन् वणिज्यां क्रमशः **सम्पन्नोऽस्मि** महाधनः।	*कथासरित्सागरः १.६.४७*

नूनं तेजोमती तत्र **परिणीता भविष्यति**।। *सुगन्धदशमीकथा १०५*

अस्माकमश्वाः **प्रविष्टा भविष्यन्ति**। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः पृ० ५२*

भद्दिनि! सुलभापराधः परिजनो नाम। अपराद्धा भविष्यति। *प्रतिमानाटकम्. अङ्क २*

यानि पुनः सिद्धान्तमध्ये सन्त्यक्षराणि तान्यन्यैरपि-

दृष्टानि भविष्यन्ति। *खरतरगच्छ-वृहद् गुर्वावलि० दृ० ३५*

७-क्तवत् प्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के उदाहरण

आपृच्छे त्वां गमिष्यामि द्वारकं कुरुनन्दन।

राजसूयं क्रतुश्रेष्ठं दिष्ट्या त्वं **प्राप्तवानसि**।। *महाभारतम्, सभा० ४५*

वयं त्वप्रतिमं वीर्ये सर्वे सौभद्रमात्मजम्।

उक्तवन्तः स्म तं तात भिन्ध्यनीकमिति प्रभो।। *द्रोण० ७३.५*

कृतवानसि यत् कर्म **श्रुतवानस्मि** भार्गव। *वाल्मीकिरामायणम्. आदि० ७२.२*

नभसीव नभः शान्ते विश्रान्ति**मसि लब्धवान्**। *योगवाशिष्ठः नि० उ० २०१.३२*

दिवसः सफलो मन्ये यत्त्वामद्या**स्मि दृष्टवान्**। *नि० पू० ८५.६९*

निर्वाणार्थं तपः साधो कच्चित् **संभृतवानसि**। *नि० पू ८५.७४*

परे पदे महानन्दे कच्चिद् **विश्रान्तवानसि**। *नि० पू० १०३.५४*

इमं भेदमिदं दुःखं कच्चित् **संत्त्यक्तवानसि**। *नि० पू०*

उक्तवानस्मि कल्याणि धर्मस्य परमा गतिः। *महाभारतम्, सभा० ६९.१४*

सुदुर्दर्शमिदं रूपं **दृष्टवानसि** यन्मम। *भगवद्गीता ११.५२*

पूर्वमेव मया दत्तं **दृष्टवत्यसि** येन माम्। *महाभारतम् वन० ३०७.२०*

अयुक्तं **कृतवत्यः स्म** क्षन्तुमर्हसि नो द्विज। *महाभारतम् आदि० २१७.२*

उपयुक्ता माणवका इत्युच्यन्ते य एते नियमपूर्वकं-

मधीतवन्तो भवन्ति। *आख्यातोपयोगे १.४२९ सूत्र पर महाभाष्य*

वत्सभूमौ लावाणकं नाम ग्रामः तत्र **उषितवानस्मि**। *स्वप्नवासवदत्तम्. अंक १*

कृतवत्यसि नावधीरणामपराद्धेऽपि यदा चिरं मयि। *रघुवंश ८.४८*

सखे! सर्वमिदानीं स्मरामि शकुन्तलायाः प्रथमवृत्तान्तम्।

कथितवानस्मि च भवते। कच्चिदहमिव **विस्मृतवानसि** त्वम्। *अभिज्ञान., अङ्क ६*

मेनका किल सख्यास्ते जन्मप्रतिष्ठेति **श्रुतवानस्मि**। *अभिज्ञान.*

वृत्तान्तं न ब्रवीषि, निष्कारणं क्षिपसीति **संक्रुद्धवानस्मि** *अविमारकम्, अङ्क ६,*

एवं पितुश्चापचितिं **कृतवांस्त्वं भविष्यसि**।

मम प्रियं च सुमहत् **कृतं** राजन् **भविष्यति**।। *महाभारतम् आदि० ३.८४*

◆

८-तव्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के साथ बने क्रियारूपों के उदाहरण

एतदपि मया **कर्तव्यमासीत्**। *स्वप्नवासदत्तम्, अङ्क ३,*

तत् क्व खल्वयमायुष्मान् **नेतव्यो भविष्यति**। *बालचरितम्, अङ्क १,*

मयाऽपि नाम स्त्रीवधः **कर्तव्यो भवति**। *बालचरितम्, अङ्क २,*

ननु सा तौ कुमारौ महाराजस्य समयावसाने **प्रेक्षितव्या भविष्यन्ति**। *प्रतिमा अङ्क २*

किन्नु खलु तस्मै जनाय **दातव्यं भविष्यति**। *चारुदत्तम्, अङ्क ३,*

अन्यस्मै नाऽ**स्मि दातव्या** कार्यं मज्जीवितेन चेत्। *कथासरित्सागरः १२.१२.९*

सखि! **प्रष्टव्यासि** किमपि। बलवान् खलु ते सन्तापः। *अभिज्ञानशाकुन्तलम्, अङ्क २*

न जाने कथं **चिकित्सितव्यो भविष्यति**। *अभिज्ञानशाकुन्तलम्, अङ्क ६,*

यदि अन्यहस्तगतं भवेत् सत्यमेव **शोचनीयं भवेत्**। *अभिज्ञानशाकुनतलम्, ६,*

सर्वेषां विबुधानां च **वक्तव्यः स्यां** यथा शुभे। *महाभारतम्, वन० ३०७.२७*

तात! भवते **विज्ञापनीयानि** बहूनि **सन्ति**। *दशकुमारचरितम्, पू० पी० ४,*

देव! भवते **विज्ञापनीयं** रहस्यं किञ्चि**दस्ति**। *दशकुमारचरितम्, पू० पी० ५,*

◆

९-तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ दा धातु के प्रयोगों के उदाहरण

प्रजागरात् खिलीभूतस्तस्याः स्वप्ने समागमः।

वाष्पस्तु न **ददात्येनां द्रष्टुं** चित्रगतामपि।। *अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ६.२२*

स्वेच्छया स्त्रीणां धर्मार्थकामेषु **व्यवहर्तुं** न **देयम्**।

मनुस्मृतिः ९.२ मेधातिथिभाष्यम्

यस्मिन् काले वर्णानामाश्रमिणाञ्च साहसकारादिभिर्धर्मः

कर्तुं न दीयेत। *मनुस्मृतिः ८.३४८ पर कुल्लूकभट्ट।*

स्प्रष्टुं द्रष्टुं न **दद्यात्**।

स्नेहात् **स्वप्तुमपि** न **ददाति**। *कामसूत्रम्, ६.२.९ जयमङ्गला टीका।*

यो **ददाति** न ते तुभ्यं **दातुं** सैष रविः प्रभो। *कथासरित्सागरः ९.४.१५८*

इहाश्रिताया **वस्तुं** मे **देहि** याम्यन्यतोऽन्यथा। *कथासरित्सागरः ६.८.२२*

महानसे च पाकं कुर्वन्तीनां स्तनबन्धं कारयित्वा

बालानां स्तनं **पातुं न ददाति**। *कथाकोशः (प्रभाचन्द्र) ७८ कथा*

कस्यापि **ग्रहीतुं** न **ददाति**। *कथाकोशः (प्रभाचन्द्र) ४८ कथा*

तस्याः संस्कारं **कर्तुं** न **ददाति**। *कथाकोशः (जगदीशचन्द्र) पृ० २४*

इमे पुत्र्यौ कुलस्याभीष्टे। कोऽपि **त्यक्तुं न दास्यति**। *कथाकोशः (जगदीशचन्द्र) पृ०९६*

भूपः प्राह न **दास्यामि गन्तुं** निजपुरन्तु वः। *प्रभावकचरितम् (बिराचार्य०) ११*

भोक्तुं नादाच्च सर्वेषामैकमत्यचिकित्सया। *प्रभावकचरितम् (अभयदेव) ३१७*

अलसयति गात्रमखिलं क्लेशं मोचयति लोचनं हरति।

स्वाप इव प्रेयान् मम **मोक्तुं** न **ददाति** शयनीयम्।। *आर्यासप्तशती, अकारादि ५४*

स्पर्शादेव स्वेदं जनयति न च मे **ददाति निद्रातुम्**।

हस्तौ विधुनोति, स्विद्यति, दशति, **उत्त्थातुं** न **ददाति**.....। *कामसूत्रम् २.७.९*

पर्वतेऽ**धिरोढुं** न **ददाति**। *प्रबन्धचिन्तामणिः २२७*

तत्र मृतकानां दाहं **दातुं** न **ददते**। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः प्रबन्ध ३२२*

जिनधर्ममहं भद्रे न **विधातुं ददामि** ते। *बृहत्कथाकोशः ५४.२४*

स्वामिन्नहं न ते **गन्तुं ददामि** पदमग्रतः। *बृहत्कथाकोशः ५९.५६*

मन्त्री यो राजकार्यं तु **भवितुं** न **ददाति** वः। *नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् १२८*

बद्धशस्त्रः समागन्तुं दातव्यः सुखमिच्छता। *नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् ५३०*

प्राणयुक्तो न **संस्थातुं देय**श्चेत्थं तु मे मतिः। *नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् ४४३*

एकोऽपि कृष्णसारो न **ददाति गन्तुं** प्रदक्षिणं बलन्।

किं पुनर्वाष्पाकुलितं लोचनयुगं प्रियतमायाः।। *गाथासप्तशती १.२४*

ईर्ष्याशीलः पतिरस्या रात्रौ **मधुकं न ददात्युच्चेतुम्।** *(संस्कृतच्छाया)*

उच्चिनोत्यात्मनैव मातरति ऋजुकस्वभावः।। .. ४.५१

ईर्ष्यां जनयन्ति दीपयन्ति मन्मथं विप्रियं साहयन्ति।

विरहे न **ददति मर्तुम**हो गुणास्तस्य बहुमार्गाः।। .. ४.२७

रैवतकपर्वते दिगम्बराः कृतवसतयः सिताम्बरान् तान् पाखण्डिरूपान्

परिकल्प्य पर्वतेऽ**धिरोढुं न ददाति।** *प्रबन्धचिन्तामणिः पृ० १२३*

शूद्रको बहिश्चरान् वीरान् पुरमध्ये **प्रवेष्टुमपि** न **दत्तवान्।** *प्रबन्धकोषः पृ० ६१*

◆

१०-तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ लभ् धातु के प्रयोगों के उदाहरण

स्वप्नकामो न **लभते स्वप्तुं** कार्यार्थिभिर्नरैः। *महाभारतम्, शान्तिः ३२०.११*

स्वजनेभ्यो मया **लब्धं नानुगन्तुं** सगर्भया। *कथासरित्सागरः २१.११२*

तदेवं नेच्छति विधौ न **मर्तुमपि लभ्यते।** *कथासरित्सागरः १२.२९.२२*

नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके बैद्याधरे सुत। *कथासरित्सागरः १४.२.१५६*

नैव लेभे ततो **गन्तुं** प्रमोदवनमागतः। *भुशुण्डिरामायणम् उ० ५.१२*

सोऽपि किं **लभते वक्तुं** न वेत्यादिशत प्रभो। *प्रकावकचरितम्*

(वादिदेताल शान्तिसूरिचरितम्) ७८

अस्मिन् न **लभ्यते स्थातुं** चैत्यवाससिताम्बरैः। *(अभयदेवचरितम्) ६४*

तयोक्तमननुज्ञातैः **गन्तुं** न **लभ्यते।** *वृहत्कथाश्लोकसंग्रहः १.११८*

तेनोक्तमिच्छया **गन्तुमागन्तुं** वा न **लभ्यते।** *वृहत्कथाश्लोकसंग्रहः ११.११*

घटिकायुग्ममपि पुण्यं **कर्तुं न लभ्यते।** तत् किमनेन राज्येन?

कथाकोशः (जग०) पृ० ३०

अहं सप्तमभूमेरधः **उत्तरितुं न लभे।** *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः प्रबन्ध-१*

तत्तीर्थं दिगम्बरैः रुद्धं श्वेताम्बरसंघः **प्रवेष्टुं** न **लभते।** *प्रबन्धकोशः प्रबन्ध-९*

पुरो **गन्तुं** न **लभते।** *प्रबन्धकोशः प्रबन्ध-२२*

यदि स्वस्थाने **गन्तुं लभ्येत** तदा दर्शयामि वपुःपौरुषम्। *प्रबन्धचिन्तामणिः पृ० २१६*

प्रवेष्टुं लभते नासौ बलवानपि मागधः। *बृहत्कथाकोशः ५६/८३*

तृतीये **स्नातुं भोक्तुं** च **लभते**। *दशकुमारचरितम्, उत्तरपीठिका, अष्टम् उच्छ्वासः।*

लभते सा न **निर्गन्तुं** न युक्तं गमनं च ते। *अवदानकल्पलता, आम्रापाल्यवदानम् ७८*

किन्तु पितरावेकेन सार्धं मां **स्थातुं** न **प्रयच्छत**स्तस्माद्

देशान्तरं यावः। *पुण्याश्रवकथाकोशः ३.४*

भोगास्तथापि दैवात् सकृदपि **भोक्तुं** न **लभ्यन्ते**। *औचित्यविचारचर्चा ८३*

जैनप्रासादः **कारयितुं** न **लभ्यते**। *प्रबन्धकोशः पृ० २०*

व्रती स्थण्डिलशायी च शङ्के जीवति वा न वा।

नहि वैदेहि रामस्त्वां **द्रष्टुं** वाऽप्यु**पलप्स्यते**।। *वाल्मीकिरामायणम्, सुन्दर० २०/२७*

◆

११-तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ लग् धातु के प्रयोगों के उदाहरण

राज्ञा तुङ्गादिभिश्चैतत् यावत्तेभ्यः प्रतिश्रुतम्।

अन्यत् **प्रार्थयितुं लग्ना**स्तावत्ते शठबुद्धयः।। *राजतरङ्गिणी ७/१६*

पवनवेगेन **गन्तुं लग्नः**। *कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः) पृ० १४३*

नागकुमारः प्रत्यक्षीभूय **वक्तुं लग्नः**। *कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः) पृ० १४६*

तां **पूजयितुं लग्नः**। *कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः) पृ० १४७*

एष आगत एव मम **पृष्ठे लग्नः**। *कुवलयमालाकथा संक्षेपः २.३३*

अथ कर्मदौर्बल्यात् **श्रीर्गन्तुं लग्ना** *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः २१ वसाह अभडप्रबन्धः पृ० ३३*

उपद्रवं **कर्तुं लग्नः**। *,, ,, ,, ,, २३ प्रबन्ध*

ततः शंखसैन्यं हतप्रतं **नष्टुं लग्नम्**। *,, ,, ,, ,, ३५ प्रबन्ध*

ते च लाजाः कठिनकर्कशपाशाणरूपा राज्ञः शिरिसि **लगितुं लग्नाः**।

प्रबन्धकोशः प्रबन्धः १७

तेन स्वजीवनार्थं विक्रेतुं कोहलकानि समानीतानि। **विक्रेतुं लग्नः**। *,, प्रबन्धः-२४*

ताः सर्वा आहवे पयः **पातुं लग्नाः**। *,, प्रबन्धः-२४*

ततो **लग्नः संहर्तुम्**। *पुरातनप्रबन्धसंग्रहः, प्रबन्धः ३२२*

◆

उदाहरणों के सन्दर्भग्रन्थों की सूची

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदासः)

अवदानकल्पलता, प्रथमः खण्डः (क्षेमेन्द्रः)

अविमारकम् (भासकृत-नाटकम्)

आर्यासप्तशती (गोवर्धनाचार्यः)

आश्वलायगृह्यसूत्रम्

उत्तररामचरितम् (भावभूतिः)

ऐतरेयब्राह्मणम्

ऐतरेयारण्यकम्

ऋग्वेदसंहिता

औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्रः)

कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः)

कथाकोशः (जगदीशचन्द्रः)

कथासरित्सागरः (सोमदेवः)

कामसूत्रम् (वात्स्यायनः)

कुवलयमालाकथासंक्षेपः (श्रीजिनपालोपाध्यादिसंकलित)

गोपथब्राह्मणम्

चारुदत्तम् (भासकृत-नाटकम्)

छान्दोग्योपनिषद्

जैमिनीयब्राह्मणम्

तैत्तिरीय आरण्यकम्

दशकुमारचरितम् (दण्डी)

नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् (लक्ष्मीपतिः)

पुण्याश्रवकथाकोशः (रामचन्द्रमुमुक्षुः)

पुरातनप्रबन्धसंग्रहः (जिनविजयमुनिः)

प्रतिभा (भासकृत-नाटकम्)

प्रबन्धकोशः (श्रीराजशेखरसूरिः)

प्रबन्धचिन्तामणिः (मेरुतुङ्गाचार्यः)

बालचरितम् (भासकृत-नाटकम्)

भगवद्गीता (वेदव्यासः)

महाभाष्यम् (पतञ्जलिः)

भर्तृहरिनीतिशतकम् (भर्तृहरिः)

भृशुण्डिरामायणम्

मनुस्मृतिः (मनुः)

महाभारतम् (वेदव्यासः)

मैत्रायणी आरण्यकम्

योगवाशिष्ठः (वाल्मीकिः)

रघुवंशम् (कालिदासः)

राजतरङ्गिणी (कल्हणः)

लिखनावली (मैथिलकविर्विद्यापतिः)

वाल्मीकिरामायणम् (वाल्मीकिः)

वृहत्कथाकोशः (श्रीहरिषेणाचार्यः)

वृहत्कथाश्लोकसंग्रहः (श्रीभट्टबुधस्वामी)

वृहदारण्यकोपनिषद्

शतपथब्राह्मणम्

शृङ्गारमञ्जरीकथा (भोजदेवः)

समरादित्यकथा (आचार्यहरिभद्रः)

सुगन्धदशमीकथा (श्रुतसागरः)

स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत-नाटकम्)

◆

एक विशेष सूचना

इस पुस्तक के सभी वाक्यों में कर्म कारक के स्थान पर केवल "कार्यं" पद का ही प्रयोग किया गया है। परन्तु छात्रों को चाहिए कि वे कृ धातु के साथ कर्म कारक के स्थान पर अन्य निम्नलिखित शब्दों का भी कर्म कारक के रूप में प्रयोग कर विभिन्न प्रकार के वाक्यों का निर्माण करने का अभ्यास करें।

पुंलिङ्ग

अनुरोध
उपद्रव
उपयोग
कलह
कोलाहल
क्रय
पाठ
परामर्श
परित्याग
प्रचार
प्रबन्ध
प्रश्न
प्रयोग
प्रस्ताव
वार्तालाप
विश्राम
विश्वास
विवाद
विरोध
विस्तार
विक्रय
संकल्प
संघर्ष
संकोच
सञ्चय

स्त्रीलिङ्ग

आशा
आराधना
गणना
निन्दा
परीक्षा
पूजा
प्रार्थना
प्रशंसा
बाधा
वन्दना
शङ्का
सन्ध्या
सहायता
स्वच्छता

नपुंसकलिङ्ग

अध्ययन
अन्वेषण
अनुमोदन
अपहरण
आन्दोलन
अनुसरण
अध्यापन
आक्रमण
आवेदन
उद्घाटन
उल्लंघन
गान
चौर्य
दान
निवेदन
निर्माण
शयन
शौच
समाधान
समर्थन
संशोधन
समापन
सम्पादन
स्नान
सञ्चालन
पालन
भोजन
भाषण
भ्रमण
मार्जन
लेखन
युद्ध